एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ।।ओ३म्।। डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३
प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित
हिन्दी मासिक

वैदिक संसार

• वर्ष : १२ • अंक : ४ • २५ फरवरी २०२३, इन्दौर (म.प्र.) • मूल्य : २५/- • कुल पृष्ठ : ४४

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्विजन्मशताब्दी वर्ष के विश्वव्यापी आयोजनों का प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने किया शुभारम्भ

भारत के यशस्वी प्रधामन्त्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा द्विजन्मशताब्दी आयोजनों के प्रतीक चिह्न को किया लोकार्पित

श्रद्धेय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र जी मोदी महामहिम आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल गुजरात) के साथ संसार के श्रेष्ठतम् कर्म देवयज्ञ में आहुति प्रदान करते हुए। ब्रह्मचारिणियाँ वेद मन्त्र पाठ करती हुईं। (विस्तृत विवरण सम्पादकीय पृष्ठ ५ पर)

रिमोट का बटन दबाकर प्रधामन्त्री जी प्रतीक चिह्न को लोकार्पित करते हुए। प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मंचस्थ विद्वत्गण।

प्रधामन्त्रीजी को दयानन्द जी की वास्तविक चित्रावली भेंट करते महामहिम आचार्य देवव्रत जी तथा सुरेन्द्र कुमार आर्य जी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश वेदों की ओर लौटो को सार्थक करने हेतु द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर युवा पीढ़ी को मशाल सौंपते प्रधामन्त्री जी

लगभग एक घण्टा से अधिक कृण्वन्तो विश्वमार्यम् और वेदों की ओर लौटो का उल्लेख करते हुए महर्षि के जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रधामन्त्री जी ने प्रकाश डाला और उन्हें सुनने इस पावन बेला पर उमड़ पड़ा अपार जनसमूह।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्विजन्मशताब्दी वर्ष के विश्वव्यापी आयोजनों का प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने किया शुभारम्भ

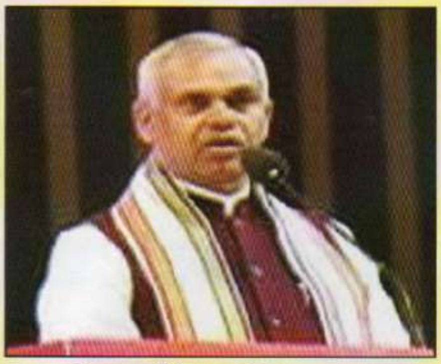

महामहिम आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल गुजरात) स्वागत उद्बोधन प्रदान करते हुए।

सा. आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश जी द्विवर्षीय विश्वव्यापी आयोजनों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी मन्त्री श्री विनय आर्य जी मंच संचालन करते हुए।

विविध गतिविधियाँ

अत्यन्त विलक्षण, अविस्मरणीय भेंट।

दिनांक ९ फरवरी को यथा नाम तथा गुण सज्जनता की प्रतिमूर्ति, आर्य जगत् की महान् विभूति, दानवीर, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त न्यायमूर्ति श्रीमान् श्रद्धेय सज्जनसिंहजी कोठारी के मानसरोवर जयपुर स्थित निवास पर भेंट हेतु समादरणीय भाई नन्दलाल जी जांगिड, खण्डेला के संग जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपसे मिलकर आपकी सज्जनता, सरलता, सहृदयता, सदाशयता ने अत्यन्त अभिभूत किया। आपने वैदिक संसार द्वारा वेदज्ञान प्रचार-प्रसार निमित्त किये जा रहे कार्यों की मुक्त कण्ठ से सराहना की। जलपान करवाया और स्वतः वैदिक संसार को मुक्त हस्त से संरक्षक सदस्यता सहयोग प्रदान किया तथा मुझे और नन्दलाल जी को सत्यार्थ प्रकाश और वैदिक साहित्य भेंट किया।

उत्कर्ष टीएमटी सरिया, राजकोट के स्वामी श्रद्धेय जयदेव जी आर्य के आग्रह पर आपके निवास पर भाई नेपालसिंह जी, शामली के साथ जाना हुआ। विरासत में आर्य समाज और वैदिक धर्म सिद्धान्तों को प्राप्त आर्यत्व के धनी इस परिवार के आतिथ्य सत्कार, प्रेम, दानशीलता, मृदु व्यवहार, अहंकार शून्यता, सेवाभाव पाकर अभिभूत हो गया। आपके सम्पूर्ण परिवार की सुख-शान्ति, समृद्धि, आरोग्यता की कामना परमपिता परमेश्वर से करता हूँ - सुखदेव शर्मा

गृह प्रवेश बधाई हो...

'मनुर्भव जनया देव्यम् जनम्...' को सार्थक करने वाले वैदिक संसार पत्रिका के शृंगार और अक्षर संयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने वाले संगणक संचालक (कम्प्यूटर ऑपरेटर) श्री नितिन जी पंजाबी के नूतन गृह के प्रवेश आयोजन दिनांक २६ जनवरी २०२३ के अवसर पर वैदिक संसार परिवार की ओर से नितिन जी के पिता श्री मधुकर जी पंजाबी को शॉल ओढ़ाकर तथा सत्यार्थ प्रकाश प्रति भेंट कर आत्मीय अभिनन्दन किया गया। चित्र के मध्य में नितिन जी पंजाबी एवं नितिन जी के दाईं ओर आपके ससुर श्री दिनेशचन्द्र जी बिडकर तथा बाईं ओर आपके पिताश्री का अभिनन्दन करते हुए वैदिक संसार पत्रिका के प्रकाशक सुखदेव शर्मा।

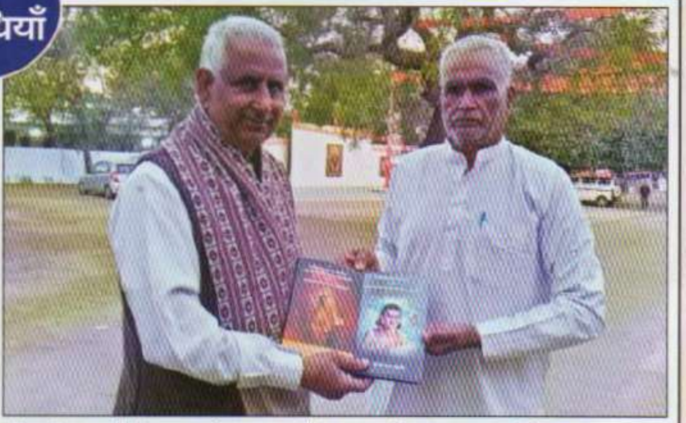

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी नागदा जंक्शन (उज्जैन) द्वारा रचित 'दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य का समालोचनात्मक अध्ययन' एवं श्रीमती हंसा चतुर्वेदी द्वारा रचित 'कालिदास क्रियापदों का शब्दशास्त्रीय विश्लेषणात्मक अध्ययन' दोनों पुस्तकों को दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा के पुस्तकालय में स्थान देने हेतु विद्यालय के प्राचार्य आचार्य रामदेव जी को पुस्तकें भेंट करते वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा।

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १२, अंक : ४
अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ फरवरी, २०२३
आर्ष तिथि: चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि
सृष्टि सम्वत् : १,९७,२९,४९,१२५
शक सम्वत् : १९४५, विक्रम सम्वत् : २०८०

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर
०९४२५०६९४९१

- सम्पादक
गजेश शास्त्री, इन्दौर (अवैतनिक)

- पत्र व्यवहार का पता
महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड,
बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१

- अक्षर संयोजन– **नितिन पंजाबी, इन्दौर**
चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	२५,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	५,१००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,५००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	९००/–
वार्षिक सहयोग (प्रेषण व्यय सहित)	३५०/–
एक प्रति (प्रेषण व्यय रहित)	२५/–
विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ	७,१००/–

खाता धारक का नाम : वैदिक संसार
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलिया हाना, तिलक नगर, इंदौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA0000525**
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
...आर्यावर्त भू–मण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०५
महर्षि दयानन्द जन्मदिवस 'ज्ञान ज्योति पर्व' के रूप में नामित.../		
आइये! आर्य समाज की धूमिल होती छवि को बचाएँ और.../		
आइये! धूम्रपान निषेध दिवस पर धूम्रपान रहित विश्व निर्माण...	सम्पादकीय	०५
महर्षि के उपकार/अमर शहीद अवन्तीबाई लोधी	राधेश्याम गोयल	०९
महान् विभूति : धर्मवीर पं. लेखराम	डोंगरलाल पुरुषार्थी	१०
आर्य बनो	देवकुमार प्रसाद आर्य	११
'चित्रं देवानामुदगादनीकम्'	रामफलसिंह आर्य	१२
अनुभव का चिन्तन	आर्य पी.एस. यादव	१४
सत्य सनातन सिद्धान्तों की पाठशाला– आर्य समाज	डॉ. गंगाशरण आर्य	१५
वह दीया पानी से जलता है	डॉ. लक्ष्मी निधि	१६
फूट–व्यथा : एकता का आह्वान	अम्बालाल विश्वकर्मार्य	१६
आर्यसमाज और आर्यसमाज के दस नियम सर्वहितकारी वेदानुकूल	पं. उम्मेदसिंह विशारद	१७
पावन त्योहार होली का महत्व	नन्दलाल निर्भय	१८
महर्षि दयानन्द सरस्वती की वास्तविक जन्मतिथि २० सितम्बर...	आचार्य दार्शनेय लोकेश	१९
वैदिक होली	राधेश्याम गोयल	१९
महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद पर प्रखर चिन्तन	डॉ. विवेक आर्य	२१
घर पर रहने वाले वृद्ध व्यक्ति क्या कर सकते हैं...	सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी	२२
महर्षि दयानन्द सरस्वती के कलकत्ता आगमन के १५० वर्ष...	आचार्य राहुलदेव	२३
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (गतांक से आगे)	ई. चन्द्रप्रकाश महाजन	२५
धर्म सरिता, भाग–६ (गतांक से आगे)	रमेशचन्द्र भाट	२६
होलकोत्सव अथवा होली	शिवनारायण उपाध्याय	२७
सत्यार्थ प्रकाश कणिका (गतांक से आगे)	देवनारायण सोनी	२८
महर्षि दयानन्द की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर महर्षि के...	आचार्य राहुलदेव	२९
चाणक्य नीति की धारावाहिक व्याख्यान माला : छठा प्रवचन	आचार्य सोमदेव आर्य	३१
आरक्षण : एक अनर्थकारी अन्याय (गतांक से आगे)	रामनिवास गुणग्राहक	३३
मानव निर्माण में माता–पिता एवं आचार्य की भूमिका	आचार्य सोमेन्द्र श्री	३५
हिन्दी की वर्ण मंजु मंजरी (गतांक से आगे)	चौधरी बदनसिंह आर्य	३५
आओ! लौट चले वास्तविकता (मूल) की ओर	विश्वप्रिय आर्य	३६
व्याप्य–व्यापक, मनोहर काया– ब्रह्म	पुरुषोत्तमदास गोठवाल	३६
मांसाहार के पीछे छिपी हिंसा और मांसाहारियों के लक्षण	स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती	३७
आदमी क्या है?	गजेन्द्रसिंह आर्य	३९
आर्य जगत् की प्रस्तावित/सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	४०
भाव शब्दों में अब तो ढलने लगे	सुश्री आदर्श आर्या	४१

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार १० गते, मधु मास से १० गते, माधव मास, शक सम्वत् १९४५ तक तदनुसार चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि से वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, विक्रम सम्वत् २०८० तक तदनुसार दिनांक १ मार्च से ३१ मार्च, सन् २०२३ तक के आर्यावर्त भू–मण्डल के कुछ विशेष पर्व एवं दिवस

११ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल एकादशी	०२ मार्च	राष्ट्र मण्डल दिवस
१३ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल द्वादशी	०४ मार्च	पुष्य– २५:०१, झलकारी बाई पुण्यतिथि
१६ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा	०७ मार्च	पूर्वा फाल्गुन : २८:३३, हनुमान जयन्ती (अपर मत से) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सयायन जयन्ती, परमहंस योगानन्द पुण्यतिथि
१७ गते	मधु मास	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा	०८ मार्च	अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
१९ गते	मधु मास	चैत्र कृष्ण तृतीया	१० मार्च	चित्रा– १९:२२, सावित्रीबाई फूले पुण्यतिथि
२४ गते	मधु मास	चैत्र कृष्ण अष्टमी	१५ मार्च	मूल– २६:०१, अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस
२५ गते	मधु मास	चैत्र कृष्ण नवमी	१६ मार्च	उत्तराषाढ़– २०:०८
२७ गते	मधु मास	चैत्र कृष्ण एकादशी	१८ मार्च	पंचक प्रारम्भ– २३:०९, महाप्रभु वल्लभाचार्य जयन्ती
२८ गते	मधु मास	चैत्र कृष्ण द्वादशी	१९ मार्च	क्षयतिथि त्रयोदशी– २८:५८, गुरु गोविन्दसिंह पुण्यतिथि
३० गते	मधु मास	चैत्र कृष्ण अमावस्या	२१ मार्च	**मेष सङ्क्रान्ति– ०२:५५**, सन्त सम्पात, दिन–रात बराबर, सूर्य भोगांश, क्रान्ति शर व विषुवांश सभी शून्य, सूर्य गोलार्द्ध परिवर्तन (दक्षिणी गोल से उत्तरी गोल में), वसन्त ऋतु का मध्य बिन्दु, वैशाख संक्रान्ति, विश्व वानिकी दिवस
०२ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल द्वितीया	२३ मार्च	राम मनोहर लोहिया जयन्ती, सुखदेव, राजगुरु व भगतसिंह बलिदान दिवस
०३ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल तृतीया	२४ मार्च	पंचक समाप्त– ०७:४४
०४ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल चतुर्थी	२५ मार्च	गणेश शंकर विद्यार्थी जयन्ती
०५ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल पंचमी	२६ मार्च	कृतिका– २५:१७
०८ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल अष्टमी	२९ मार्च	गुरु अंगद पुण्यतिथि
०९ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल नवमी	३० मार्च	गुरु हरकिशन पुण्यतिथि
१० गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल दशमी	३१ मार्च	गुरु अंगददेव जयन्ती

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

नवीन पंचांग प्रकाशित हो चुका है। अपनी प्रति शीघ्र मँगवाएँ, लाभ उठाएँ।

किसी भी शंका–समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनिय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें

अन्य स्त्रोतों से प्राप्त मार्च मास, २०२३ के कुछ विशेष पर्व–दिवस

१. शून्य भेदभाव दिवस, विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस, ४७वाँ नागरिक लेखा दिवस। ३. विश्व अन्य जीव एवं विश्व श्रवण दिवस। ४. राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस। ७. जन औषधि दिवस। ९. विश्व किडनी दिवस (द्वितीय गुरुवार), धूम्रपान निषेध दिवस, सन्त तुकाराम जयन्ती। १२. केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल स्थापना दिवस। १३. विश्व नींद दिवस। १४. पाई दिवस, सन्त दादू दयाल जयन्ती। १५. विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस। १६. विश्व टीकाकरण दिवस। विश्व निद्रा दिवस। १८. आयुध निर्माण दिवस। २०. विश्व प्रसन्नता दिवस, विश्व गौरैया दिवस, अवन्तीबाई लोधी बलिदान दिवस। २१. विश्व कविता दिवस, विश्व रंगभेद उन्मूलन दिवस। २२. विश्व जल संरक्षण दिवस, बिहार दिवस। २३. विश्व मौसम विज्ञान दिवस, वीर हेमू कालानी जयन्ती, सन्त झूलेलाल जयन्ती। २४. विश्व तपेदिक दिवस, विश्व क्षय रोग दिवस। २५. हिरासत में लिये गये एवं लापता स्टाफ सदस्यों के साथ एकजुटता का विश्व दिवस। २७. विश्व रंगमंच दिवस। ३०. राजस्थान दिवस, पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा पुण्यतिथि। ३१. बैंक वार्षिक लेखाबन्दी।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती**
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त औधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथादित्य व्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम।। (३५)

– सामवेद पू. ६.३.१.४

शब्दार्थ– आदित्य वरुण = हे सूर्यवत् प्रकाशमान अविनाशी सर्व श्रेष्ठगुण सम्पन्न प्रभो! **अस्मत्** = हमसे **उत्तमम् मध्यमम् अधमम् पाशम्** = उत्तम, मध्यम और निकृष्ट इन तीन प्रकार के बन्धनों को **उत् अव विश्रथाय** = शिथिल कर दीजिये, **अथ वयम्** = और हम लोग **तव व्रते** = आपके नियम पालन में **अदितये** = दुःख और नाश रहित होने के लिए **अनागसः स्याम** = निरपराध होवें।

विनय : अपने नियम और संविधान में अटल रहने वाले सूर्य के समान, अपने ज्ञान से प्रकाशित, अविनाशी, सर्वश्रेष्ठ गुणों से सुसम्पन्न वरणीय प्रभु! आप हमारे उत्तम, मध्यम व निकृष्ट तीन प्रकार के बन्धनों को शिथिल कर दीजिये। हे प्रभु! हमें ऐसी दिव्य शक्ति व दृढ़ता प्रदान करिये कि न हमारे पैरों से कोई पाप कर्म हो, न हाथों से कोई पाप हो और न ही मन, बुद्धि, वाणी से कोई पाप हो, अर्थात् शारीरिक, वाचिक व मानसिक सब प्रकार के पापकर्मों से हमें मुक्त कराइये तथा आप परमात्मा के नियम में, आपकी आज्ञाओं के पालन में हम सदैव तत्पर रहें व सबके प्रति अपराध से रहित होते हुए सभी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें, ऐसी हम पर कृपा करिये। शुभ गुण कर्मों के धारण करने एवं अशुभ आचरण को छोड़ने के व्रत से व्रती बनकर हम आपके पुत्रगण वेद मार्ग पर बढ़ते रहें और सब प्रकार के निष्पाप होते हुए प्राणिमात्र के प्रति हितकारी बनें, ऐसा सामर्थ्य हे परमपिता! आप हमें प्रदान करें।

पद्यार्थः *हे आदित्य वरुण परमेश्वर, सर्वश्रेष्ठ हे न्याय नियामक।*
करो शिथिल भव बन्धन तीनों, पाप ताप संताप मिटे दुःख।
हर अपराध से हमें बचाना, सदा रहें तेरे अनुकूल।
भक्ति प्रेम से भर दो हृदय, पाएँ तव सुरभित हो फूल। ■

● **दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली**
चलभाष : ८१३०५८६००२

सम्पादकीय

ऐतिहासिक, विलक्षण, अविस्मरणीय पल

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रचलित जन्मदिवस पर द्विजन्मशताब्दी वर्ष को प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 'ज्ञान ज्योति पर्व' के रूप में किया नामित, प्रतीक चिह्न भी किया लोकार्पित

वैसे तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस को लेकर सामान्यजन ही नहीं, प्रकाण्ड विद्वानों में भी गहन मतभेद व्याप्त है। प्रचलित जन्मदिवस कुछ और है तो भारतवर्ष की एकमात्र वैदिक पंचांग के सम्पादक एवं अनुसंधानकर्ता आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा तर्क व प्रमाणों से सिद्ध वास्तविक जन्मतिथि २० सितम्बर १८२५ है। कोई बात नहीं, जहाँ ज्ञान प्राप्ति के स्रोत भिन्न-भिन्न होते हैं और वैचारिक स्वतन्त्रता होती है वहाँ ऐसा होना स्वाभाविक है। और यह मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस के विषय में ही नहीं है। उपर्युक्त वैचारिक भिन्नता लगभग सनातन धर्म-संस्कृति के समस्त पर्व एवं महापुरुषों के जन्मदिवस एवं पुण्यतिथियों को लेकर है और इसका कारण भी स्पष्ट है कि सनातन धर्म-संस्कृति में ज्ञान प्राप्ति का स्त्रोत एक मात्र ना होकर भिन्न-भिन्न है, कोई पुराण पढ़ रहा है, तो कोई इतिहास की प्रक्षिप्त पुस्तकें महाभारत तो समय-समय पर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा अपने-अपने ज्ञान और दृष्टिकोण के आधार पर की गई भिन्न-भिन्न व्याख्याओं पर आधारित एवं प्रकाशित रामायण, गीता तथा सत्य और विज्ञान के प्रतिकूल भिन्न-भिन्न पौराणिक पंचांग आदि को पढ़ रहा है और उस पढ़े हुए को ही परमात्मा प्रदत्त तर्कशक्ति और बुद्धि का उपयोग किए बिना ही **'बाबा वाक्यम् प्रमाणम्'** ज्ञान, समझकर मान रहा है जबकि सब **सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद है** जो सनातन धर्म-संस्कृति के मूल आधारभूत ग्रन्थ है, जिन्हें और वेद के अनुकूल शास्त्रों को पढ़ना, जानना व समझना तो दूर अपने जीवनकाल में देख भी नहीं पाता है तथा वेद विरुद्ध ज्ञान, मान्यताओं और भ्रान्तियों में ही उसका जीवन पूर्ण हो जाता है। यह भी स्वयंसिद्ध है कि कोई भी व्यक्ति हो वह जैसा जानता-समझता है उसे ही सत्य समझता-मानता है और उसे ही प्रचारित-प्रसारित भी करता है। कहा भी गया है कि बार-बार असत्य की पुनरावृत्ति होने पर वह सत्य प्रतीत होने लगता है। जब सूर्य की उपस्थिति नहीं होती तब स्वाभाविक रूप से अन्धकार होता है इसी प्रकार प्राणी मात्र के कल्याण के लिए परमात्मा प्रदत्त सत्य ज्ञान के वेद रूपी सूर्य के

अभाव में असत्य-अज्ञान रूपी अन्धकार का साम्राज्य होता है और है, इसमें तो वही होगा जो हो रहा है। यह ठीक उसी प्रकार है जब बाजार में नकली मुद्रा का प्रचलन बढ़ता है तो असली मुद्रा प्रचलन से बाहर हो जाती है ऐसा ही कुछ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्मतिथि के विषय में अनुभूत किया जा रहा है।इन परिस्थितियों में हमारे पास केवल एक ही ब्रह्मास्त्र होता है **'कोई बात नहीं'** क्योंकि हम संसार को पूर्णतः बदलने में सक्षम नहीं होते, हम मात्र परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत शक्ति-बुद्धि के अनुसार सत्य पक्ष को जानने-समझने, प्रचारित-प्रसारित और स्थापित करने के प्रयास मात्र के अधिकारी होते हैं। यही मनुष्य जाति में उत्पन्न प्रत्येक प्राणी का कर्तव्य व धर्म है और होना भी चाहिए।

'कोई बात नहीं', महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रचलित जन्मतिथि दिनांक १२ फरवरी २०२३, १९९वें जन्मदिवस से दिनांक १२ फरवरी २०२४, २००वें जन्म दिवस तक आगामी वर्ष को द्विजन्मशताब्दी वर्ष के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती के उद्घोष **'वेदों की ओर लौटो'** को केन्द्र में रखकर विश्व स्तर पर व्यापक आयोजन करने का संकल्प सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा लिया गया।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा सम्पूर्ण संसार से अज्ञान के तिमिर का नाश कर वेद ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशित करने के उद्देश्य से स्थापित आर्य समाज के भी वर्ष २०२५ में डेढ़ सौ वर्ष पूर्ण हो रहे है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बलिदान के पश्चात् उनके कार्यों को तीव्र गति से आगे बढ़ाने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य, शुद्धि आंदोलन के प्रणेता, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनर्स्थापक, मुस्लिम जगत् के इतिहास में किसी मस्जिद के मिम्बर से मुस्लिम विचारधारा से भिन्न प्रवचन करने वाले प्रथम तथा सम्भवतः अन्तिम व्यक्ति स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जिन्हें विश्व प्रसिद्ध दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद मन्त्रों को गुंजायमान करने का श्रेय प्राप्त है जिन्होंने सनातन धर्म की रक्षा और राष्ट्र की स्वतन्त्रता हेतु अपने प्राण न्योछावर कर दिए, जिनके बलिदान को वर्ष १९२६ में सौ वर्ष पूर्ण हो रहे है।

इस ऐतिहासिक त्रिवेणी बेला पर आर्य समाज के मूल उद्देश्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् समूचे संसार को श्रेष्ठ बनाओ के पूर्त्यर्थ जन-जन तक वेदों की ओर लौटो का सन्देश पहुंचाने के उद्देश्य से एक विशाल और भव्य आयोजनों की रूपरेखा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा बनाई गई और इसके शुभारम्भ हेतु महामहिम आचार्य देवव्रत जी राज्यपाल गुजरात, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीमान् सुरेश जी आर्य, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रकाश जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विनय जी आर्य, गुजरात राज्यपाल के निजी सहायक श्री राजेन्द्र जी विद्यालंकार का एक प्रतिनिधि मण्डल वैश्विक स्तर पर सर्वमान्य सुविख्यात नेता तथा भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्रीमान नरेन्द्र भाई मोदी से मिला और द्विजन्मशताब्दी वर्ष के आयोजनों का शुभारम्भ अपने करकमलों से करने का विनम्र अनुरोध किया।

देवयोग से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म राज्य में जन्में भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सनातन धर्म-संस्कृति और राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए दिए गए अतुलनीय योगदान से सुपरिचित हैं तथा इसके पूर्व में जब गुजरात राज्य के मुख्यमन्त्री थे तब ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आयोजित बोध उत्सव पर भी अपनी उपस्थिति दे चुके हैं और ऋषि जन्म स्थान पर बनाई गई ऋषि दयानन्द जीवन चरित्र पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन कर वहां यज्ञ में अपनी आहुति दे चुके हैं तथा ऋषि दयानन्द के परम शिष्य और ऋषि के आदेशानुसार लंदन जाकर वहां इण्डिया हाउस की स्थापना कर लाला हरदयाल और वीर सावरकर जैसे असंख्य क्रान्तिवीर स्वतन्त्रता सेनानियों की फौज तैयार करने वाले भाई श्यामजी कृष्ण वर्मा की अन्तिम इच्छा थी कि मेरी अस्थियां भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् ले जाई जाए, को देश स्वतन्त्र होने के बाद देश के तत्कालीन कर्णधार भूल गए किन्तु उसे याद रखा भारत माता के सपूत भाई नरेन्द्र मोदी ने और गुजरात राज्य के मुख्यमन्त्री बनने पर भाई श्यामजी कृष्ण वर्मा की अन्तिम इच्छा को पूर्ण करते हुए देश की स्वतन्त्रता में प्रमुख योगदान देने वाले भाई श्यामजी कृष्ण वर्मा की अस्थियां लंदन से लाकर उनके जन्म स्थान माण्डवी (सौराष्ट्र) में स्मारक बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया था एवं वेद व दर्शन शास्त्रों के मर्मज्ञ वानप्रस्थ साधक आश्रम के संस्थापक स्मृति शेष आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी द्वारा वेदों का गुजराती भाषा में अनुवाद करवाकर प्रकाशित किए जाने के पश्चात् उनका विमोचन भी भाई नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमन्त्री रहते हुए किया था ऐसे अनेक प्रसंग है जिनके कारण देश के यशस्वी प्रधानमन्त्री नरेन्द्र भाई मोदी महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके शिष्यों तथा आर्य समाज के द्वारा किए गए कार्यों , योगदान व दिए गए असंख्य बलिदानों से भलीभांति परिचित है। प्रतिनिधि मण्डल के प्रस्ताव पर सहर्ष अपनी सहमति प्रदान करते हुए श्रद्धेय नरेन्द्र मोदी जी ने द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर आयोजित किए जाने वाले आयोजनों का नामकरण किया **'ज्ञान ज्योति पर्व'** के रूप में तथा भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन मन्त्रालय की भागीदारी इसमें सुनिश्चित करने को भी आश्वस्त किया।

मात्र एक मास से भी कम समय पूर्व प्राप्त सहमती के पश्चात् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस असम्भव कार्य को करने का दायित्व भार अपने ऊपर लिया और युद्धस्तर पर आयोजन की तैयारियों को मूर्तरूप देकर, देश-विदेश में व्यापक प्रचार-प्रसार कर असम्भव को सम्भव में परिणत कर दिया।

दिनांक १२ फरवरी २०२३ को दिल्ली स्थित इन्दिरा गांधी इण्डोर स्टेडियम के द्वार खुलने से पूर्व ही आयोजन स्थल पर पहुंचने वाले समस्त मार्गों पर सर्दी का वातावरण होने के उपरान्त भी देश-विदेश से सिर पर केसरिया साफा अथवा टोपी पहने, सुन्दर वस्त्र पहनें, सजे-धजे, हाथों में ओम पताका लिए, उद्घोष करते, ऋषि महिमा के भजन गुनगुनाते आर्यों की टोलियां की टोलियां पैदल, मोटर साइकिल, कार-जीप , बस आदि साधनों से जिसको जैसा सुलभ हुआ पहुंचने लगी। सुरक्षा का चाक-चौबन्द प्रबन्ध था। देखते ही देखते स्टेडियम खचाखच भर गया था। समय पर पहुंचने वाले भी आयोजन स्थल के अन्दर स्थान पाने से वंचित रहे। आयोजकों को इस स्थिती का भी पूर्वानुमान था इस कारण उनके द्वारा वृहदाकार इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा सीधे प्रसारण की व्यवस्था आयोजन स्थल के बाहर परिसर में स्थान-स्थान पर की गई थी।

मुख्य मंच पर माता नीरजा जी, धर्मानंद जी गुरुकुल आम सेना, के संस्थापक महामहिम आचार्य देवव्रत जी, महामहिम बाबू गंगाप्रसाद जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी, डीएवी विद्यालय प्रबन्ध कत्री के प्रधान पद्मश्री पूनम सूरी जी, स्वागत अध्यक्ष सुरेन्द्र आर्य जी अध्यक्ष दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली विराजित थे।

आयोजन के प्रारम्भ में भजनोपदेशक श्री दिनेश जी पथिक एवं पं. कुलदीप जी आर्य ने ऋषि महिमा का गुणगान करते भजन प्रस्तुत किए। स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद लोकसभा क्षेत्र सीकर तथा आर्य जगत् के मूर्धन्य वैदिक

विद्वान् वेदवागीश जी का संक्षिप्त उद्बोधन हुआ।

मंच संचालन का दायित्व भार वहन आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के यशस्वी मन्त्री विनय जी आर्य कर रहे थे।

विनय जी द्वारा घोषणा की गई कि माननीय प्रधानमन्त्री जी महोदय भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन, उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास, मन्त्रालय के कैबिनेट मन्त्री श्री किशन जी रेड्डी, केन्द्रीय राज्यमन्त्री संस्कृति एवं संसदीय कार्य मंत्रालय श्री अर्जुनराम जी मेघवाल, डॉ मीनाक्षी लेखी अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय व दिल्ली के बाड़ी संसदीय क्षेत्र से सांसद एवं भाजपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता तथा केन्द्रीय राज्यमन्त्री संस्कृति एवं विदेश मन्त्रालय के साथ स्टेडियम परिसर में पधार चुके है। परिसर में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन गणमान्य अतिथियों द्वारा करने के पश्चात् प्रधानमन्त्री जी द्वारा उद्गार पुस्तिका में अपने उद्गार भाव अंकित किए गए। विशाल, सुसज्जित बनाई गई अस्थाई यज्ञशाला में यज्ञ में अपनी आहुतियां प्रदान करने के पश्चात् पाणिनी आर्ष कन्या महाविद्यालय वाराणसी की कन्याओं के वेद मन्त्र पाठ प्रस्तुति के मध्य मुख्य सभागार में प्रवेश किया, सभागार में उपस्थित आर्यो ने खड़े होकर करतल ध्वनि से प्रधानमन्त्री जी का अभिनन्दन-अभिवादन किया, प्रधानमन्त्री जी ने हाथ जोड़कर तथा हाथ हिलाकर अभिनन्दन-अभिवादन का प्रत्युत्तर दिया। अतिथियों ने मंच पर अपने निर्धारित स्थान को ग्रहण किया। ब्रह्मचारिणियों द्वारा ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के मन्त्रों का पाठ कर मुख्य आयोजन प्रारम्भ किया गया। समस्त आर्य जगत् की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य द्वारा अंग वस्त्र पहनाकर प्रधानमन्त्री जी का स्वागत किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वास्तविक चित्रावली एवं सम्मान पत्र के द्वारा प्रधानमन्त्री जी का स्वागत सम्मान महामहिम आचार्य देवव्रत जी तथा सुरेन्द्र आर्य जी द्वारा किया गया।

द्विवर्षीय आयोजनों के प्रतीक चिह्न का प्रधानमन्त्री जी द्वारा रिमोट का बटन दबाकर अनावरण किया गया। सुसज्जित बालक-बालिकाओं के समूह के द्वारा महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र पर आधारित लघु नाटिका की सांस्कृतिक प्रस्तुति प्रस्तुत की गई।

महामहिम आचार्य देवव्रत स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए बताया गया कि भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन मन्त्रालय द्वारा विविध कार्यक्रम पूरे वर्ष संचालित होंगे तथा उपर्युक्त आयोजनों को **'ज्ञान ज्योति पर्व'** के रूप में प्रधानमन्त्री जी द्वारा नामित किया गया है। आपने प्रधानमन्त्री जी एवं भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन मन्त्रालय के मन्त्रियों और अन्य गणमान्यजनों के साथ समस्त आर्यों का भी इस आयोजन में पधारने पर आभार व्यक्त किया। आपने आगामी तीन वर्षों तक समस्त आर्यों से अभियान चलाकर युवा पीढ़ी को व्यसन मुक्त बनाने तथा प्राकृतिक खेती की दिशा में आगे बढ़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन मन्त्रालय द्वारा महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र पर आधारित लघु फिल्म का निर्माण कर प्रदर्शित किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य द्वारा **'दुनिया वालों देव दयानन्द दीप जलाने आया था...'** काव्य पंक्तियों को प्रस्तुत करते हुए आगामी दो वर्षों तक संचालित किए जाने वाले विश्वव्यापी कार्यों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया।

प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त हुई और वह घड़ी आ उपस्थित हो गई जिसकी प्रतीक्षा आयोजन स्थल तथा देश-दुनिया के कोने-कोने में दिल थाम कर भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री नरेन्द्र भाई मोदी का उद्बोधन सुनने की अरबों-खरबों जन प्रतीक्षा कर रहे थे। लगभग एक घण्टे नरेन्द्र मोदी जी ने अपना उद्बोधन प्रदान किया और महर्षि जी के प्रत्येक जीवन पहलु पर प्रकाश डाला। आपने **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का उल्लेख करते हुए महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य सम्पूर्ण संसार को श्रेष्ठ बनाना बताया। आपने कहा कि महर्षि जी ने उस समय कार्य किया जब पराधीनता और घोर अज्ञानता का काल था। आपने पादरी के द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य के लिए प्रार्थना करने का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द निर्भीक भी थे उन्होंने पादरी को स्पष्ट कहा कि मैं तो अंग्रेजी साम्राज्य के समाप्त होने की प्रार्थना प्रतिदिन करता हूं और कहा कि सनातन धर्म संस्कृति के विकृत स्वरूप के आश्रय में पल रहे अन्धविश्वास-पाखण्ड पर करारा प्रहार उन्होंने किया और **'वेदों की ओर लौटने का आह्वान'** कर धर्म-संस्कृति के स्वरूप को वेद शास्त्रों के प्रमाण से प्रस्तुत कर सनातन धर्म संस्कृति के मूल्यों की रक्षा की तथा राष्ट्र की स्वतन्त्रता में आहूत होने वाले लाला लाजपत राय, हरदयाल, भाई परमानन्द, वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद,रामप्रसाद बिस्मिल आदि अनेक स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर बलिदान देने वाले महर्षि दयानन्द के शिष्यों के नाम गिनाते हुए उनके योगदान को अविस्मरणीय एवं अतुलनीय बताया।

यह पहला अवसर था कि जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्म जयन्ती का आयोजन देश-विदेश के समस्त आर्य समाजों के साथ यह भी प्रथम अवसर था कि दुनियाभर में स्थित भारत के समस्त दूतावासों में भी आयोजन आयोजित किया जाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला जाकर महर्षि के जीवन से अनभिज्ञ विदेशी धरा के गणमान्य महानुभावों को भी अवगत करवाया गया।

आयोजन के पश्चात सभी को भोजन पैकेट वितरित किए गए। आयोजन की व्यवस्था सुचारू तथा व्यवस्थित थी। आयोजन सफलता के झंडे गाड़ गया तथा भविष्य में होने वाले विश्व आर्य महासम्मेलन की रूपरेखा को तैयार कर गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के साथ-साथ समस्त आर्यजन बधाई के पात्र हैं। ■

आइये! आर्य समाज की धूमिल होती हुई छवि को बचाएँ और सर्वजन का हितकारी, सर्वप्रिय संगठन बनाएँ

परमपिता परमेश्वर की सुव्यवस्था से संयोगात नागदा जंक्शन, जिला : उज्जैन (म. प्र.) में आयोजित **'राष्ट्र रक्षा महायज्ञ एवं वैदिक श्रीराम कथा'** के आयोजन में सम्पन्न २ जोड़ों के विवाह संस्कार ने आर्य समाज में सम्पन्न होने वाले कुछ-कुछ गरिमापूर्ण विवाहों को छोड़कर अनैतिक , वैदिक सिद्धान्त विरुद्ध विवाहों से आर्य समाज की धूमिल छवि को स्वच्छ और जन-जन को प्रिय बनाने की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया है।

वर्तमान में किसी से भी पूछो कि भाई आर्य समाज क्या है? तो वर्तमान में स्थिति यह हो गई है कि कुछ अपवाद छोड़कर कोई नहीं जानता कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता एवं सनातन धर्म-संस्कृति के आधार वेद की पुनर्स्थापना और स्त्री शिक्षा, सम्मान व हितों की शास्त्रोक्त रक्षा, शोषित-पीड़ित वर्ग का उद्धार,

समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों और रूढ़ियों के उन्मूलन में प्रमुख ही नहीं मुख्य योगदान आर्य समाज का है। जन-जन के मन-मस्तिष्क में यह आम धारणा व्याप्त हो चुकी है कि आर्य समाज शादियां करवाने वाली संस्था है और संस्था ही क्यों? अब तो यह बलिदानियों की परम्परा का सर्वहितकारी संगठन एक दुकान (व्यवसाय) बनकर रह गया प्रतीत होने लगा है। **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् सम्पूर्ण संसार को श्रेष्ठ बनाओ का ध्येय लेकर चलने वाले संसार के श्रेष्ठतम् संगठन की दिशा-दशा यह हो गई है कि लोग-बाग जिनके पुत्रों के विवाह नहीं होते हैं उनके लिए लड़कियां ढूंढने आर्य समाज में आते हैं जैसे आर्य समाज कोई लड़कियों को उत्पन्न करने की औद्योगिक ईकाई हो। इस प्रकार आर्य समाज की गरिमापूर्ण छवि को धूमिल करने कार्य किया है आर्य समाज में सम्पन्न होने वाले अवांछित विवाहों ने और यह कुकृत्य किया है पद, प्रतिष्ठा और निजी स्वार्थों के भूखे, कथनी और करनी में भू-आकाश सम भेद वाले कतिपय छद्म आर्य नेताओं ने। अगर आर्य समाज की धूमिल छवि को पुनः स्वच्छ व पवित्र बनाना है, वेद का सन्देश **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** सार्थक करना है, विष पीकर संसार को वेदों का अमृत पिलाने वाले ऋषिवर देव दयानन्द का उद्घोष **'वेदों की ओर लौटो'** को सफलिभूत बनाना है तो अब देव दयानन्द के सच्चे भक्त आर्य समाज के कर्णधारों को आर्य समाज की चारदीवारी में नहीं, नागदा जंक्शन के आयोजन में अकस्मात् सम्पन्न इन विवाहों की तरह मैदान में आकर आर्य समाज के होने वाले आयोजनों में इस तरह के सर्वजनहिताय कार्यक्रमों को सम्मिलित करना होगा तभी हम आर्य समाज के मूल सिद्धान्त संसार को श्रेष्ठ बनाने की दिशा में आर्य समाज को अग्रसर कर पाएंगे और संसार में व्याप्त अवैदिक कुरीतियों, रूढ़ियों और अन्धविश्वास, पाखण्ड को दूर कर पाएंगे तथा जन-जन का लोकप्रिय संगठन बना पाएंगे। ■

आइये! धूम्रपान निषेध दिवस पर धूम्रपान रहित विश्व निर्माण के लिए योगदान का संकल्प लें

धूम्रपान करना कोई बड़प्पन दिखाने वाला आदर्शपूर्ण कार्य नहीं होता, कई लोग विशेषकर युवा वर्ग अज्ञानता के कारण धूम्रपान की दुष्प्रवृत्ति के शिकार हो जाते हैं और चाहकर भी फिर वो इससे दूर नहीं हो पाते। इसी धूम्रपान के कारण प्रतिवर्ष ५० लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की घोषणा के आधार पर इस समय पूरे विश्व में प्रतिवर्ष ५० लाख से अधिक व्यक्ति धूम्रपान के सेवन के कारण अपने जीवन से हाथ धो रहे हैं। यदि इस समस्या को नियन्त्रित करने की दिशा में कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया गया तो वर्ष २०३० में धूम्रपान के सेवन से मरने वाले व्यक्तियों की संख्या प्रतिवर्ष ८० लाख से अधिक हो जायेगी। धूम्रपान से ना केवल कई रोग हो रहे है अपितु ये रोग आने वाली पीढ़ियों को भी उपहार स्वरूप में मिल रहें हैं। आनुवांशिकता के कारण से मां के गर्भ में पल रहे बच्चे को भी कई रोग हो रहें है। माता के धूम्रपान करने से बच्चे का शारीरिक विकास ठीक से नहीं हो पाता। बच्चा दुर्बल या अपंग जन्म लेता है। उसी प्रकार घर में किसी के भी धूम्रपान करने से उसका धुआं अन्य सदस्यों के शरीर में भी जाता है जो गर्भवती महिलाओं के लिए अत्यधिक हानिकारक होता है। यही नहीं बुजुर्गों और बच्चों पर भी इसका अत्यधिक दुष्प्रभाव होता है। बच्चे के कोमल ह्रदय पर धूम्रपान अपनी छाप छोड़ उन्हें मृत्यु के मुंह में धकेल रहा है। दुनियाभर में तम्बाकू सेवन का बढ़ता चलन स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक सिद्ध हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) ने भी इस पर चिन्ता प्रकट की है। तम्बाकू से सम्बन्धित रोगों के कारण लगभग ५ मिलियन लोगों की मृत्यु हो रही है। जिनमें लगभग १.५ मिलियन महिलाएं हैं। सूचना के अनुसार दुनियाभर में ८० फ़ीसदी पुरुष तम्बाकू का सेवन करते हैं, लेकिन कुछ देशों की महिलाओं में तम्बाकू सेवन की प्रवृत्ति तेज़ी से बढ़ रही है। दुनियाभर में धूम्रपान करने वालों का क़रीब १०% भारत में हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग २५ करोड़ लोग गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि के द्वारा तम्बाकू का सेवन करते हैं।

धूम्रपान का घातक प्रभाव खाँसी, गले में जलन, सांस लेने में कठिनाई और फेफड़ों की दुर्गन्ध के साथ आरम्भ होता है। इसके कारण से त्वचा पर धब्बे और दांतों का रंग विकृत (दांतों का पीलापन) हो जाता है। कोई वयस्क एक मिनट में लगभग १६ बार श्वास लेता है, जबकि बच्चों में इसकी गति अधिक होती है। पाँच साल का एक सामान्य बच्चा एक मिनट में २० बार श्वास लेता है। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में यह गति बढ़कर ६० बार प्रति मिनट तक हो सकती है। सर्वविदित है कि जिन घरों में सिगरेट या बीड़ी का धुआँ रह-रहकर उठता है उन घरों के बच्चे तम्बाकू के धुएँ में ही श्वास लेते हुए बड़े होते हैं। चूँकि वे वयस्कों से अधिक तेज गति से श्वास लेते हैं इसलिए उनके फेफड़ों में भी वयस्कों की तुलना में अधिक धुआँ जाता है। धुएँ के साथ विषैले पदार्थ भी उसी मात्रा में प्रवेश करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक़ दुनिया के १२५ देशों में तम्बाकू का उत्पादन होता है। दुनियाभर में प्रतिवर्ष ५.५ खरब सिगरेट का उत्पादन होता है और एक अरब से अधिक लोग इसका सेवन करते हैं। भारत में १० अरब सिगरेट का उत्पादन होता है। भारत में ७२ करोड़ ५० लाख किलो तम्बाकू की पैदावार होती है। भारत तम्बाकू निर्यात के विषय में ब्राज़ील, चीन, अमरीका, मलावी और इटली के बाद छठे स्थान पर है।

धूम्रपान निषेध दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम

एक ओर जहाँ विश्व तम्बाकू का सेवन कर मृत्यु के मुंह में जा रहा है वहीं उन लोगों को इससे बचाने के लिए कई जागरुकता वाले कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। लोगों के बीच जाकर तम्बाकू के विरुद्ध दुनियाभर में जागरूकता कार्यक्रम के रूप में धूम्रपान निषेध दिवस मनाया जाता है। इस दिन का मुख्य उद्देश्य सिगरेट और अन्य माध्यम से तम्बाकू के उपयोग के हानिकारक स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में जागरूकता का विस्तार करना है। कार्यक्रम का सबसे बड़ा लक्ष्य धूम्रपान करने वालों को धूम्रपान की दुष्प्रवृत्ति से छुटकारा दिला पाने में सहयोग करना है। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस को यूनाइटेड किंगडम के द्वारा वर्ष १९८४ में पहली बार मनाया गया ताकि लोगों को जागरुक कर सकें। तब से प्रतिवर्ष इसका आयोजन किया जाता है। यूके में ही नहीं बल्कि दुनियाभर में इस दिन पर अलग-अलग थीम आयोजित की जाती है। उदाहरण के लिए २०१० में धूम्रपान करने से लोगों को रोकने के लिए इसका नाम **'ब्रेक फ्री'** दिया गया था जो धूम्रपान करने की अपनी इच्छा को नियन्त्रित नहीं कर सकते। उनके लिए इसका आयोजन किया गया था ताकि वो लोग अपनी इस दुष्प्रवृत्ति को थोड़ा ब्रेक तो दें। कई एनजीओ, सामाजिक संगठनों द्वारा कई संगोष्ठियाँ, शिविर, प्रचार पत्रक इत्यादि लगाकर लोगों को धूम्रपान करने से होने वाली हानियों के विषय में बताया जाता है। स्कूल-कॉलेजों में युवाओं को प्रेरित किया जाता है कि वे धूम्रपान ना करें। इसका सकारात्मक परिणाम भी अब सामने आ रहा है कई लोग धूम्रपान छोड़ने के लिए सामने आ रहे हैं। कई नेताओं, अभिनेताओं और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के माध्यम से भी लोगों को प्रेरित किया जाता है कि वे धूम्रपान छोड़ दें। कई विज्ञापनों के माध्यम से भी धूम्रपान से होने वाली हानियों के विषय में बताया जाता है। ताकि व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को लेकर गम्भीर हो और धूम्रपान जैसी हानिकारक दुष्प्रवृत्ति को छोड़कर एक अच्छा जीवन जी सके। आइये! हम सबमें से कोई भी इस प्राणघातक दुष्प्रवृत्ति से ग्रसित है तो हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालने के साथ हमारी सन्तान को असमय मृत्यु के मुंह में धकेलने वाली इस दुष्प्रवृत्ति को सर्वप्रथम त्यागने का शिवसंकल्प लें और परमपिता परमेश्वर की कृपा से हम इस दुष्प्रवृत्ति से मुक्त हैं अथवा मुक्त होकर हमारे सम्पर्क के अन्य व्यक्ति अगर कोई इस दुष्प्रवृत्ति से ग्रसित है तो हरसम्भव प्रयास कर उन्हें इस दुष्प्रवृत्ति से मुक्ति दिलाने का पुण्य अर्जित कर धूम्रपान मुक्त विश्व के निर्माण में योगदान दे। ■

अमर शहीद अवन्तीबाई लोधी

अट्ठारह सौ सत्तावन में एक दौर ऐसा आया,
एक ओर झाँसी में ताण्डव, दूजा मण्डला में छाया।
रामगढ़ की रानी ने फिर ऐसा कौशल दिखलाया,
रणबाँकुरी जंग में कूदी अपना परचम फहराया।
अवन्ती बाई ने अब अपना रौद्र रूप है बतलाया,
कंगन, चूड़ी, बिन्दिया, माला राजाओं को भिजवाया।
एकजुट होकर सेना शासन पर फिर टूट पड़ी,
छक्के अंग्रेजों के छूटे और सेना हुई भाग खड़ी।
वाडीगंटन के घोड़े को रानी ने मार गिराया था,
हाथ जोड़कर प्राण की रक्षा के खातिर घिघियाया था।
उस गोरे कप्तान को अब रानी ने जीवन दान दिया,
साथ में उसके बेटे को भी जबलपुर प्रस्थान किया।
मुँह की खाकर एक नारी से यूँ गोरा हैरान हुआ,
षडयन्त्र रच फिर एक साल में सेना ले मैदान हुआ।
हुई लड़ाई बड़ी भयंकर दोनों ओर से जान गई,
चारों ओर से दुर्ग घिर गया, जब रानी ये जान गई।
गुप्त मार्ग से निकाल सेना वन में डेरा डाल दिया,
भेद बताकर गद्दारों ने अंग्रेजों का साथ दिया।
मुट्ठी भर सेना रानी संग मुश्किल में घिर आई थी,
गोली लगी हाथ में जब बन्दूक नहीं उठ पाई थी।
खींच हाथ दूजे से खंजर खुद रानी ने मार लिया,
हाथ लगे न जीते जी यूँ अपने को बलिदान किया।
मिट गई मातृभूमि की खातिर नमन सदा हम करते हैं,
बलिदान दिवस पर श्रद्धा से हम सुमन समर्पण करते हैं। ■

महर्षि के उपकार

उपकार हम तुम्हारे ऋषिवर भुला न पाएंगे,
हर घर में वेद ज्योति जब तक जला न पाएंगे।
पाखंड खंड करके सत्य मर्म को बताया,
प्रचंड प्रचार करके वैदिक धर्म को बचाया।
शास्त्रार्थ हम तुम्हारे, गुरुवर भुला न पाएंगे... उपकार हम तुम्हारे...
सत्य ज्ञान हेतु ऋषिवर जंगल पहाड़ भटके,
तीर्थों में घूमकर, हो निर्भय कभी न अटके।
जज्बात हम तुम्हारे प्रियवर भुला न पाएंगे... उपकार हम तुम्हारे...
जिज्ञासु बन के आए, दंडीजी के मन को भाए,
वेदों का ज्ञान पाए, गुरु के वचन निभाए।
ली धर्म की पताका, धर्मवर भुला न पाएंगे... उपकार हम तुम्हारे...
वेदों का ज्ञान पाकर ,संसार सार पाया,
पाखंडियों के दिल पर ईर्ष्या का ज्वार छाया।
कई बार विष पिलाया, विश वर भुला न पाएंगे... उपकार हम तुम्हारे...
मृत्यु को पास पाया,मन में न भय समाया,
फिर भोर से पहले जगाया,रुपिया दे उसे भगाया।
ऐसे दयालु को हम, आर्य वर भुला न पाएंगे... उपकार हम तुम्हारे... ■

विश वर=दृढ़ इच्छाशक्ति वाले।
धर्म वर=धर्म रक्षार्थ।
प्रिय वर=सभी से प्रेम वाले।
गुरु वर=ज्ञान के प्रदाता।
ये सभी अर्थ मेरी भावना के है।

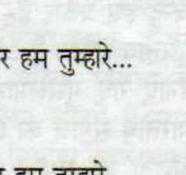

• राधेश्याम गोयल
न्यू कॉलोनी, कोदरिया (महू)
चलभाष : ९६१७५९७९१०

आर्य समाज का महाधन- आर्य मुसाफिर पं. लेखराम

• डोंगरलाल पुरुषार्थी
प्रधान आर्य समाज, कसरावद, जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५१०-५१०११

कौन है जो आर्यों की भावना जगा गया।
कौन है जो मौत से हमें जूझना सिखा गया।।
श्रद्धानन्द, लेखराम, प्यारा हंसराज है।
जग-जगाने वाला आर्य समाज है।।

'आर्य समाज से तहरीर और तकरीर अर्थात् लेखन और व्याख्यान का कार्य कभी रुकने न पावे।' -पं. लेखराज

'स्नान कर्म है, स्नान हुआ या न हुआ। सन्ध्या धर्म है, सन्ध्या न करना पाप है।'

'धर्म के मार्ग में अधर्मी से कभी डरना नहीं।
चेत कर चलना, कुमारग में कदम धरना नहीं।।
शुद्ध भावों में भयानक भावना भरना नहीं।
बोधवर्धक लेख लिखने में कमी करना नहीं।।
दे मरे हमको मुनासिब राय पण्डित लेखराम।
तर गये जगदीश के गुण गाय पण्डित लेखराम।।

-नाथूराम शंकर

शुद्धिकरण आर्य समाज का एक ऐसा हथियार था, जिसके तहत् हिन्दुओं में धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक एकता स्थापित की जा सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शुद्धिकरण आन्दोलन में निम्न सात महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं- (१) हिन्दू धर्म की अस्मिता को जिन्दा रखना, (२) भारतीय समाज में असमानता को समाप्त करना, (३) बलपूर्वक हिन्दुओं को बनाए गए मुसलमान, ईसाई को पुनः हिन्दू धर्म में वापिस लाना, (४) भारतीय समाज का एकीकरण कर उसे विदेशी दासता से मुक्त करना, (५) अछूतों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना, (६) भारत में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक एकता स्थापित करना, (७) अमानवीय, धार्मिक अवधारणाओं और अन्धविश्वास को समाप्त करना। महर्षि के शुद्धिकरण रूपी बिन्दु को आर्य समाज के महाधन- मुसाफिर, धर्मवीर पं. लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द ने अभूतपूर्व कार्य करके अपने प्राणी की बलि देकर आर्य समाज में स्वर्ण अक्षरों में अपने नामों को विख्यात किया।

पं. लेखराम का जन्म पंजाब के जेहलम जिले के ग्राम सैय्यदपुर में सन् १८५०, संवत् १९१६ शुक्रवार को हुआ था। इनके दादाजी का नाम नारायणसिंहजी, पिता का नाम तारासिंहजी था। लेखराम के दो छोटे भाई तोताराम और बालकराम तथा छोटी बहन मायावती थी। लेखराम को छः साल की आयु में मदरसे में भर्ती किया गया, जहाँ अरबी-फारसी की पढ़ाई होती थी। इसी कारण मुसलमानों के कुरान और हदीस तथा ईसाइयों के बाइबल और इंजिल आदि अन्य मतों के ग्रन्थों की इन्हें गहन जानकारी थी। कुरान और इंजिल का तो ये इतना सुन्दर उच्चारण करते थे कि कई बार बड़े-बड़े मौलवी भी 'सुभान अल्लाह', 'सुभान अल्लाह' कह उठते थे। लेखराम का रंग सांवला, ललाट चौड़ा, छाती विशाल और शरीर गठीला, सिंह जैसा फुर्तीला था। ये हँसमुख, सरल प्रकृति के, स्मरण शक्ति तीक्ष्ण थी। दास भावना का अभाव और स्वतन्त्रता इनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। आप कविता प्रेमी थे। ये प्रायः भक्ति से गुरुमुखी (पंजाबी भाषा) में लिखी गीता का पाठ किया करते थे।

२१ दिसम्बर १८७५ को लेखराम को इनके चाचा गण्डराम ने १७ वर्ष की आयु में पेशावर पुलिस में भर्ती कराया। इनकी उन्नति होते-होते ये सार्जण्ट के पद पर पहुँच गए। एक सिक्ख सिपाही के सत्संग से इन्हें ईश्वर उपासना का अभ्यास हो गया। ये ब्रह्म-मुहूर्त में स्नान कर उपासना के लिए बैठ जाते थे। अद्वैतवाद का भी इन पर खूब रंग चढ़ा था। आपने ३६ वर्ष की आयु तक रूद्र नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहकर सं. १९५० में मरी जिले के भत्र गाँव की कुमारी सौ. लक्ष्मीदेवी के साथ विवाह किया। आपने अपनी पत्नी को स्वयं विद्याभ्यास कराया। पं. लेखराम को श्री कन्हैयालाल अलखधारी के साहित्य से महर्षि दयानन्द के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। अतः महर्षि का आशीर्वाद लेने के लिए पाँच मई सन् १८८० को एक माह की छुट्टी लेकर ११ मई को महर्षि दयानन्द के दर्शनार्थ अजमेर चल दिए। १७ मई को सेठ फतहमल की वाटिका में पहुँचकर महर्षि के दर्शन किए। महर्षि के अल्पकालीन सत्संग ने लेखराम के विचारों को दृढ़ कर दिया और उनका विश्वास वैदिक धर्म पर चट्टान की भाँति दृढ़ हो गया। एक बार अजमेर में पं. लेखराम की ग्रे नामक एक पादरी से भेंट हुई। पादरी ने कहा- पं. लेखराम! तुम हिन्दू लोग, बाइबल से चोरी करके कहते हैं कि यह वैदिक शिक्षा है। पं. लेखराम ने कहा- पादरीजी! आप ऐसी शिक्षा बताएं जो वेद में न हो। पादरी ने कहा- हमारी देखा-देखी, तुम भी परमात्मा को पिता कहते हो। भला बताओ तो सही कि वेदों में ऐसा कहाँ है। इस बात पर पं. लेखराम ने कहा- यह वैदिक शिक्षा है। पण्डितजी ने कहा-

'ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।'

अर्थात् इस ऋचा में 'परमात्मा को बन्धु, माता-पिता जो सब कार्यों को पूर्ण करने वाला, सब लोक-लोकान्तरों, स्थान और जन्मों को जानने वाला बताया गया है। यह प्रमाण सुनाकर पं. लेखराम ने पादरी की बोलती बन्द कर दी।

पं. लेखराम ने अपने छोटे-से जीवनकाल में कई रचनात्मक कार्य किए। महर्षि दयानन्द के जीवन-चरित्र की सामग्री एकत्रित करने के लिए अथक परिश्रम किया। लम्बी-लम्बी यात्राएं कीं। जीवन चरित्र का बहुत-सा भाग वे स्वयं लिख चुके थे। जब उन्होंने यह पवित्र कार्य अपने हाथ में लिया तब तक भावपूर्ण ऐतिहासिक पत्र आर्य जगत् के नाम लिखा। **'मैंने ११ दिसम्बर १८८८ से ईश्वर के आश्रय होकर स्वामी दयानन्द के जीवन चारित्र का कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के आदेशानुसार**

प्रारम्भ कर दिया है। उनके जीवन सम्बन्धी सब वृतान्त, घटनाओं या उपलब्धियों का संग्रह करना है। इस कारण सब बन्धुओं से नम्र विनती है कि जिस समय और जिस प्रकार की जिस नगर, वन या ग्राम आदि के वृतान्त स्वामीजी के सम्बन्ध में जिस भाई को ज्ञात हों, उनसे मुझे अवगत कराएं। मैं जहाँ तक सम्भव हो सकता है, आज से दो वर्ष के अन्तर्गत सारे भारत का भ्रमण करूँगा तथा जहाँ-जहाँ किसी प्रकार के वृतान्त जिस महानुभाव के पास पता लगेंगे मैं स्वयं उनकी सेवा में उपस्थित होकर उनको लिखूँगा।

स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से पं. लेखराम एक सच्चे मुसाफिर हो गए और अपनी पुलिस की नौकरी छोड़कर वैदिक धर्म का प्रचार और शुद्धिकरण के कार्य में जुट गए। देश, धर्म के लिए पं. लेखराम का बोरी-बिस्तर हमेशा तैयार रहता था। एक दिन प्रचार-प्रसार से आकर घर बैठे ही थे कि डाकिया ने एक पत्र पं. मुसाफिर के हाथ में थमाया। पत्र में लिखा था कि पण्डितजी। आप अतिशीघ्र आइए वरना सारा गाँव मुसलमान बन जाएगा। बस, फिर क्या था उसी वक्त पं. लेखराम ने बोरी-बिस्तर उठाया और गन्तव्य स्थान की ओर चल दिए। पं. लेखराम की माँ ने कहा- 'बेटा! तुम अभी ही आए हो और अभी चल दिए। तुम्हारे बेटे का स्वास्थ्य बहुत खराब है, उसकी दवाई आदि की व्यवस्था कर दो। तब कहीं भी चले जाना।' पं. लेखराम ने कहा- **'माँ! भारत माता के एक हजार बच्चे जा रहे हैं, बताओ उन्हें बचाऊँ या एक बच्चे को बचाऊँ।'** प्रिय पाठकों जिस पुत्र मोह में महाराजा दशरथ के चार पुत्र होने पर भी अपने प्राण त्याग दिए। किन्तु आर्यवीर पं. लेखराम को देश धर्म के सामने अपने इकलौते पुत्र का मोह भी विचलित नहीं कर सका और वह घर से चल दिए। जिस गाँव में उसे उतरना था वहाँ एक्सप्रेस रेलगाड़ी का स्टैंड नहीं था। अस्तु उतरने से पहले सामान फेंकने के बाद चलती ट्रेन से कूद पड़े। जो कि शरीर पर चोटें भी आईं। येन-केन-प्रकारेण उस गाँव में पहुँचकर हरिजन, आदिवासियों को समझा-बुझाकर उन्हें मुसलमान बनने से बचा लिया। जब पं. लेखराम अपने घर पहुँचे तब तक इकलौता बेटा स्वर्गवासी हो चुका था। बन्धुओं! ऐसे थे महर्षि दयानन्द के वीर सैनिक पं. लेखराम।

मई १८९६ में पं. लेखरामजी आर्य समाज रोपड़ के उत्सव पर पधारे। इसके पूर्व एक नौका में महाशय रामलक्ष्मण और उ.प्र. के एक आर्य बन्धु भी साथ में थे। यात्री आपस में बातें कर रहे थे। इसी नौका में एक मौलवी भोले-भाले हिन्दू स्त्री-पुरुषों को बहकाने लगा। मौलवी गण्डे-ताबीजों की महत्ता पर भ्रामक प्रचार करने लगा। पं. लेखरामजी और दूसरे आर्य बन्धु धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। जबकि मौलवी ऊँचे स्वर में बोल रहा था। पं. लेखरामजी ने उसकी बातें सुनीं और झट से पूछ लिया कि आप लोगों को क्यों बहका रहे हो? मौलवी कुछ कहते, इसके पहले ही एक व्यक्ति ने कहा- मौलवी सा.! ये पं. लेखरामजी हैं। पण्डित का नाम सुनते ही मौलवी ने चुप्पी साध ली। ऐसा था पं. लेखराम की तकरीर का प्रभाव।

मिर्जा गुलाम अहमद ने **'सत्वचन'** नाम से एक पुस्तक छापी। जिस में यह सिद्ध करने का यत्न किया कि गुरुनानकदेवजी पक्के मुसलमान थे। इस पुस्तक से सिक्खों में बड़ी हलचल मची। सिक्खों की विनती पर पं. लेखरामजी ने भारी खोजबीन करके सामग्री तैयार की। व्याख्यान का विषय था **'गुरु नानकदेवजी के बारे में ख्यालात।'** भारी संख्या में सिक्ख जनता और सेना के सिक्ख जवान वहाँ उपस्थित थे। अपनी विद्वत्ता, ओजरूपी वाणी, धर्मभाव एवं साहस से पं. लेखरामजी ने उपस्थित जन-जन के हृदय को जीत लिया तत्पश्चात् सेना के जवानों ने पं. लेखराम को ऐसे अपने कन्धों पर उठा लिया जैसे विजयी पहलवान को उठा लिया हो।

फरवरी १८९७ के बीच एक काला, नाटा, मुसलमान अपनी शुद्धि कराने के बहाने पं. लेखरामजी के पास आया। अनेक मित्रों की चेतावनी के बावजूद भी पण्डितजी इस ढोंगी बिल्ले को धर्मोपदेश देते रहे। एक दिन सायं स्वामी दयानन्द की जीवनी लिख उठकर अँगड़ाई ली ही थी कि उस नीच अधम ने पं. लेखरामजी के पेट में छुरी घोंप दी। बहुत इलाज करने पर भी अन्तत: दिनांक ६.०३.१८९७ को रात्रि दो बजे प्राणान्त हो गया। नश्वर शरीर को छोड़ने से पहले पण्डितजी ने ओ३म् के साथ प्रार्थना मन्त्र, गायत्री का जाप किया। पं. लेखरामजी की अन्तिम यात्रा में ६० हजार जनसमूह सम्मिलित था।जो इनके गुण-गानों को गा रहे थे। आज का ज्वलन्त प्रश्न यह कि दयानन्द के सिपाहियों द्वारा शुद्धिकरण करने पर उनकी हत्या कर दी जाती है तो हिन्दू को मुसलमान या ईसाई बनाने पर मौलवी या पादरी की हत्या क्यों न की जाए। ताकि पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द आदि की आत्मा को श्रद्धांजलि प्राप्त हो सके। ■

'तन-मन-धन सर्वस्व लुटाकर, ऊँचे कर्म कमा गया।
जन्म-मरण के भेद मुसाफिर, सारे हमें बता गया।।
गर्व करें हम जिस पर ऐसा, वह इतिहास बना गया।
लेखराम बलिदानी योद्धा, जीवन भेंट चढ़ा गया।।

(जिज्ञासु)

आर्य बनो

विधर्मी बन्धु धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने सोते हुए आर्य समाज रूपी सिंह को जगा दिया है और आर्य समाज ने उनकी चुनौती को स्वीकार किया है। आर्य समाज ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक क्रान्ति का बिगुल बजाते हुए हिन्दू जाति के सभी वर्गों से अपील की है कि अब वह जन्म पर आधारित जात-पात, छूत-छात, ऊँच-नीच की भावना का सर्वथा परित्याग कर गुण-कर्म पर आधारित वेदानुकूल वर्ण व्यवस्था को स्वीकार करें। इसके लिए उन्हें अन्तर्जातीय विवाहों, सहभोज तथा शुद्धि यज्ञों को प्रोत्साहन देना होगा। यदि हम ऐसा करने में सफल हो गए तो वैदिक धर्म की महानता सम्मुख भारत के विधर्मी ही नहीं अपितु सारा संसार ही सिर झुकाएगा। देखते ही देखते सारा का सारा संसार वैदिक धर्म की शरण में आ जाएगा। ऐसा होने पर आर्य जाति को संसार की कोई शक्ति इसके **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के पुनीत संकल्प से अर्थात् संसार भर को आर्य बनाओ के घोष को क्रियात्मक रूप देने से नहीं रोक सकेगी। ■

• देवकुमार प्रसाद आर्य
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज,
५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

'चित्रं देवानामुदगादनीकम्'

अति विचित्र माया तुम्हारी जगत् के रचनाकार।
पाप नाशक अद्भुत बलदाता ध्यान धरें हम बारम्बार।

• **रामफल सिंह आर्य**
वैदिक प्रवक्ता, भिवानी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१८२७७७१४, ९४१८४७७७१४

यह संसार इतना विचित्र, इतना अद्भुत है कि बुद्धिमान मनुष्य भी यदि केवल इसके बाह्य रूप से भी परिचित होना चाहे तो भी एक जीवन उसके लिए पर्याप्त नहीं है। पृथ्वी पर कितने प्रकार के वृक्ष हैं, कितने प्रकार की वनस्पतियाँ हैं, कितने रंग के फूल-पत्ते हैं, कितने प्रकार की लताएँ हैं, कितने प्रकार के फल-सब्जी हैं, कितने प्रकार के अन्न हैं, कितने प्रकार के कन्द-मूल हैं, शाक हैं, जड़ी-बूटियाँ हैं, घास है, औषधियाँ हैं, सुगन्धित पुष्पों से लदी हुई टहनियाँ हैं, समुद्र तट पर उगने वाले, मरूभूमि में उगने वाले, पहाड़ों पर उगने वाले, मैदानी समतल क्षेत्रों में उगने वाले, हिम से ढंकी हुई उन्नत शैल शिखरों पर पनपने वाले कितने पेड़-पौधे हैं क्या कोई एक मनुष्य बता सकता है? फिर प्राणी जगत् पर दृष्टिपात कीजिए और बतलाइए कि कितने प्रकार के उड़ने वाले, रेंगने वाले, चलने वाले, जल में रहने वाले, घनघोर जंगलों में रहने वाले, पृथ्वी के भीतर अपने बिल बनाकर रहने वाले जीव-जन्तु हैं? फिर तनिक आकाश की ओर दृष्टिपात कीजिए। कितना विशाल यह गगन और इसमें स्थित अनगिनत सूर्य, सितारे, ग्रह, उपग्रह आदि। हमारी कल्पना से भी परे उनकी गति और स्थिति। एक नन्हे से परमाणु से लेकर विशाल आकाश गंगायें और यह विचित्र ब्रह्माण्ड। हम कितना जानते हैं इसके बारे में? अपने शरीर की ओर निहारिये और इसकी रचना, कार्य और विचित्रता तो देखिए। इसका निर्माण कहाँ होता है। अभी तक हम केवल बाह्य स्वरूप की चर्चा ही कर रहे हैं। आन्तरिक संरचना, कार्यशैली, गुण-धर्म, धारण-आकर्षण, मानव मन में उपस्थित आवेश, संवेग, संवेदना, प्रेम, वात्सल्य, काम, क्रोधादि वृत्तियाँ, उनसे प्रेरित होता समाज और सामाजिक रीति-नीति इस बात की तो चर्चा अभी हुई ही नहीं है। इसी विचित्रता की ओर यजुर्वेद की यह उपरोक्त सूक्ति संकेत कर रही है। हमारे पूज्य आचार्य प्रवर महर्षि दयानन्दजी महाराज ने इस मन्त्र का विनियोग वैदिक संध्या कर्म में **'उपस्थान'** मन्त्रों के अन्तर्गत किया है। ऋषिवर ने संध्या में प्रयुक्त मन्त्रों को विभिन्न शीर्षकों के नीचे रखा है। हम प्राय: उन शीर्षकों के नाम से और उस नाम के रहस्य से अपरिचित रहते हैं जिसके कारण संध्या से यथेष्ट लाभ से भी वंचित ही रहते हैं। उपस्थान का क्या अर्थ है? समीप स्थित हो जाना। किसके समीप? स्पष्ट है कि उपास्य के समीप, जिसकी हम उपासना करने बैठे हैं। किसलिए समीप हो जाना? इसलिए कि उसे जान सकें, पहचान सकें और उसके आनन्द को भी प्राप्त कर सकें। जब तक उसकी विशालता की ओर नहीं बढ़ेंगे तो उसे जानना दुष्कर है। उसे जानने के लिए उसकी रचना को जानना अति आवश्यक है। क्या उसकी रचनाएँ निरर्थक हैं? अनावश्यक है? क्या उसने यूँ ही मनोविनोद के लिए यह सब ढाँचा खड़ा कर दिया है? नहीं-नहीं कदापि नहीं। ये रचनाएँ निष्प्रयोजन नहीं है। उसका कोई भी कार्य निष्प्रयोजन नहीं है। उसका बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण अर्थ है। उस प्रयोजन को भी जानना है और प्रयोजन के उस साधन को भी। अपने इस विचार को थोड़ी देर के लिए हम यहाँ पर विराम देकर कुछ चर्चा उसकी विचित्रता की ही करते हैं जिससे कि विषय भली प्रकार से स्पष्ट हो सके।

अभी हम बाह्य विचित्रता की बात कर रहे थे जो कि अति विशाल है। यद्यपि हमारी दृष्टि उस ओर नही जाती अत: उसे भी हम ठीक से नहीं जान पाते। क्या आपने सर्दी की ऋतु में कभी पहाड़ों पर यात्रा की है? यदि की है तो आप गगनचुम्बी शिखरों पर फैली हुई हिम की श्वेत पट्टिका को नहीं भूल पाए होंगे। उसके ऊपर से प्रवाहित होकर आती हुई शीतल वायु के स्पर्श से शरीर में उत्पन्न होने वाला कम्पन आपको अवश्य ही स्मरण हो रहा होगा। चीड़, देवदार, कैल आदि वृक्षों के ऊपर जमे हुए हिमकण, उनकी घनी छाया में पनपती असीम नीरवता, पहाड़ी झरनों का निनाद, नदियों का कल-कल, छल-छल बहता हुआ निर्मल नीर, गहरी-गहरी घाटियों की दूर तक गम्भीरता को धारण किए हुए किसी समाधिस्थ योगी सम खामोशी आपके अन्त:करण में अभी तक स्मृति बनी हुई आपको उधर पुन:-पुन: आकर्षित कर रही होगी। आपने बड़े-बड़े राजप्रसादों को, गगनचुम्बी अट्टालिकाओं को भव्य एवं रमणीय भवनों को, सुन्दर उद्यानों को भी देखा ही होगा, परन्तु वहाँ पर आपको वह आनन्द नहीं आया होगा जो उपरोक्त पर्वतीय स्थलों को देखने में आया होगा। आपने कभी विचार किया कि ऐसा क्यों है? इसका कारण यह है कि मानव निर्मित संरचनाएँ संकीर्ण हैं और ईश्वर निर्मित यह मनोहर दृश्यावलि विशाल एवं असीम है। संकीर्णता में, लघुता में सुख कहाँ? मानव मन तो विशाल गगन में उड़ने की कामना करने वाला हंस है। कभी वर्षा ऋतु में भी पर्वतीय स्थल पर जाकर देखिए। गहन हरियाली लिए वन मण्डल के ऊपर मंडराते हुए काले-काले मेघों ने न जाने कितने कालिदासों से कितने **'मेघदूतों'** की रचना करवा डाली। घनघोर घटाओं के बीच से अपना तेज प्रकट करती हुई चपल दामिनी और घोर गर्जन कितने ही प्राणियों के हृदयों को विचलित कर जाता है। वर्षा का तीव्र वेग युग-युगान्तर से धरा पर अविचल भाव से खड़े पर्वतों के वक्षस्थल को विदीर्ण करके अपना मार्ग तो बनाता ही है, साथ-साथ पर्वत के गर्व को भी मिटा डालता है। मानो सन्देश दे रहा है- **'विशाल होने से कुछ नहीं होता, जब तक कि तुम्हारी पैठ सूक्ष्म से दिखने वाले छिद्रों तक न हो। इसलिए छिद्र रहित होना भी आवश्यक है। शत्रुदल सदैव आपके छिद्रों का ही लाभ उठाता है।'**

अब तनिक समुद्र के किनारे पर खड़े होकर उसकी विशालता और गंभीरता को निहारिये। अथाह जलराशि की न तो गहराई का अनुमान है और न ही उसके रहस्य का। तनिक उसकी उथली सतह को देखिए। यहाँ का दृश्य आपको सोचने पर विवश कर देगा कि जल के भीतर इतना

विशाल जीवन है। अनेक प्रकार के शैल, शैवाल, प्रवाल, जलीय वनस्पति और नाना प्रकार के जीव-जन्तु। कौन है इनका सृजनहार? कौन है इनका पालनहार? जल के नीचे का संसार बाहरी संसार से किसी भी अर्थ में कम नहीं है।

अब तनिक मरूस्थल की ओर देखिए जहाँ तक दृष्टि जाती है, रेत ही रेत दिखाई देती है कहीं पर कोई वृक्ष दिखाई नहीं देता। यदि कुछ दिखता भी है तो कांटेदार झाड़ियाँ जिनमें पत्ते कम हैं और कांटे अधिक। दिन में सूर्य के प्रचण्ड ताप से तपता रेत शरीर के जल को भी अवशोषित कर डालता है, परन्तु रात्रि में वही रेत इतना शीतल हो जाता है कि बिना गर्म कम्बल या रजाई के रहना ही कठिन हो जाता है।

किसी गहन वन में कभी प्रवेश कीजिए। नाना प्रकार के छोटे-बड़े वृक्षों से लदे-फदे इन वनों में कितने ही स्थल तो ऐसे हैं जहाँ पर तेजस्वी रवि की किरणें भी विवश होकर हार मान लेती हैं। कुछ पेड़-पौधे जीवनदायक तत्वों से भरपूर हैं तो कुछ अत्यन्त विषैले। कुछ के पुष्प मनमोहक सुगन्ध से किसी को भी बाँध सकते हैं तो कुछ की सुगन्ध अचेत तक कर डालती है। विष और अमृत दोनों ही से परिपूर्ण ये घने वन क्या जीवन की उलझनों, चुनौतियों से कहीं भी कम है?

अब थोड़ी सी दृष्टि विज्ञान की ओर डालिए। विज्ञान बाहरी रंग-रूप को भी जाँचता, परखता है और आंतरिक स्वरूप को भी। वह केवल फूलों के रंगों और पत्तों की बनावट को ही नहीं देखता अपितु यह भी देखता है कि ये विभिन्न रंग किस-किस गुण को अपने भीतर समेटे हुए हैं। ये खट्टे-मीठे, कड़वे, कसैले फल-फूल शरीर पर क्या-क्या प्रभाव डालते हैं। विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों को आपस में मिलाकर कैसे एक नई वस्तु निर्मित की जा सकती है। किस प्रकार से एक पौधे के पंचावयव को प्रयोग करके विभिन्न रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। अपने उत्पत्ति काल से ही मानव मन में यह अभिलाषा जगी रही है कि पेड़-पौधों से, लताओं से, खनिजों से विभिन्न प्रकार के फल- पत्तों से अनेक विधियों द्वारा औषधियों का निर्माण करके जीवन की रक्षा की जाए।

यह सत्य है कि मानव ने इस दिशा में बहुत उन्नति भी की है, सफलता प्राप्त की है परन्तु उतना ही सत्य यह भी है कि हम अभी तक इस बारे में बहुत ही अल्प सम्भवत: एक प्रतिशत भी नहीं जान पाए हैं, क्योंकि जिसने इन्हें रचा है वह ऐसा वैज्ञानिक है कि जिसे पूर्ण रूप से जान सकना मनुष्य के सामर्थ्य के बाहर की बात है। मनुष्य जितना-जितना जानता जाता है उतना-उतना ही रहस्य बढ़ता चला जाता है। क्या संसार का कोई भी बड़े से बड़ा वैज्ञानिक या वैद्य, कोई चिकित्सक यह घोषणा कर सकता है कि एक साधारण सी घास का तिनका भी किसी अन्य वनस्पति के साथ मिलकर किस-किस रोग का उपचार करने में सक्षम है? कदापि नहीं। जिन वस्तुओं को हम निरर्थक समझकर, अनावश्यक समझकर उठा-उठाकर फेंक रहे थे, एक दिन पता चलता है कि यह तो अपार गुणों की भण्डार थी तब चकित रह जाना पड़ता है। तनिक विचारिए तो कि यह पृथ्वी अपने ऊपर सब कुछ स्थित रखते हुए, जंगल, पर्वत, मैदान, झरने, नदियाँ, जीव-जन्तु, समुद्र को लपेटे हुए अपने गर्भ में अनेक रत्नों को छुपाए हुए न जाने कितने ज्वालामुखियों को समेटकर किस गति से घूमते हुए अन्तरिक्ष में स्थित है। इसकी तीव्र गति का हमें भान तक नहीं होता। हम सदैव इसे स्थिर ही अनुभव करते हैं। इससे अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थों को प्राप्त करके शरीर का पोषण करते हुए क्या कभी यह विचार करते हैं कि इन पदार्थों में ये पोषक तत्व, ये गुण, ये स्वाद, ये विभिन्न रस कहाँ से आये? गन्ने जैसे मीठे पौधे भी इसी भूमि से उगते हैं और नीम एवं गिलोय जैसे कड़वे पौधे भी वहीं से उगते हैं। वही मिट्टी, वही खाद, वही पानी, परन्तु गुणों में इतनी भिन्नता? इमली में इतनी खटास कि केवल स्मरण मात्र से मुँह में पानी आ जाता है। विज्ञान की शक्ति ने ही दूध को द्रव अवस्था से परिवर्तित करके ठोस अवस्था प्रदान की जिसे लम्बे समय तक प्रयोग के लिए रखा जा सकता है।

सृष्टि की विशालता की कोई सीमा नहीं है तो उसकी सूक्ष्मता की भी कोई सीमा नहीं। अनेक अज्ञात रहस्यों को स्पष्ट करते-करते जब वैज्ञानिक इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन और न्यूट्रॉन से भी आगे **'क्वार्क'** तक पहुँचा तो वहाँ भी एक निश्चित क्रम और व्यवस्था को देखकर चकित हुए बिना न रह सका। यह उस विधाता की विचित्रता नहीं तो और क्या है। केवल जड़ पदार्थों में ही इतनी विविधता और विचित्रता भरी पड़ी है कि उसका ही पारावार पाना कठिन है तो फिर चेतन जगत् का तो कहना ही क्या।

विज्ञान इस बात पर, कि कैसे एक लकड़ी का लट्ठा जो समुद्र के किनारे पर दीर्घकाल तक पड़ा-पड़ा पत्थर में परिवर्तित हो गया, जितनी सरलता से कार्य कर सकता है उतनी सरलता से किसी मक्खी या मच्छर के व्यवहार के बारे में नहीं जान सकता। जितनी सरलता से किसी कुत्ते, गाय या चिड़िया का स्वभाव जान सकता है, उतनी सरलता से किसी मनुष्य का व्यवहार नहीं जान सकता। असंख्य प्रकार के नियम, कानून और सुरक्षा साधनों के उपलब्ध होने पर दण्ड व्यवस्था में मृत्यु दण्ड की उपस्थिति होने पर भी न तो अपराध ही रुकते हैं और न ही अन्याय और अत्याचार रुक पाते हैं। जड़ की अपेक्षा चेतन जीवन अधिक उलझन भरा है और चेतन में भी मानव जीवन सबसे अधिक जटिल है क्योंकि वहाँ पर कर्म की स्वतन्त्रता है। एक निश्चित नियम में बंधा हुआ यन्त्र उस नियम के विरूद्ध कार्य नहीं करता है जबकि स्वतन्त्र मनुष्य कब, क्या कर डाले कोई नहीं जानता।

अब तनिक मनुष्य के सिर के भीतर जो मस्तिष्क है, जो देखने में एक अखरोट की गिरी जैसा दिखता है, मांस का लोथड़ा कितनी विचित्रता से भरा हुआ है इसका अनुमान भी हमें नहीं है। उसमें दिखाई देने वाली रेखाएँ या खाइयाँ बहुत सूक्ष्म से बिन्दुओं द्वारा जिन्हें **'सेल्स'** कहा जाता है, निर्मित है। इन एक-एक सेल्स में अरबों-खरबों घटनाओं के स्मरण रखने की शक्ति है और ऐसे सेल्स की संख्या भी अरबों-खरबों में है। तनिक मस्तिष्क की क्षमता का अनुमान तो लगाइए। फिर उस दिखाई देने वाले मस्तिष्क के ऊपर 'मन' भी है जिसकी शक्ति, क्षमता और विचित्रता का कोई परावार ही नहीं है। आश्चर्य तो इस बात की है कि खोपड़ी के भीतर मस्तिष्क तो दिखाई देता है परन्तु मन कहीं भी दिखाई नहीं देता और सारे शरीर पर उसका साम्राज्य है।

इस प्रकार से चिन्तन करता-करता मनस्वी ऋषि जब यह सब देख चुका तो अनायास ही उसके मुख से निकल पड़ा-

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।

(यजु. ७/४२)

हे देव! हे स्थावर एवं जगत् के जानने और जनाने वाले! हे पृथ्वी से द्युलोक तक सारी व्यवस्था करने वाले! इस सारी व्यवस्था में आपकी ही रचना कौशल प्रकट हो रहा है। हे मित्र! हे वरुण! हे अग्ने! आपके बिना भला किसका सामर्थ्य है जो इस अद्भुत रचना का एक कण भी जान सके, हिला सके और संचालित कर सके। क्योंकि आप अनन्त बल, ज्ञान और अर्थ से युक्त हैं इसीलिए तो यह अद्भुत रचना सम्पूर्ण होने के पश्चात् भी आपके नियन्त्रण से बाहर रत्तीभर भी इधर-उधर नहीं हो सकती। आपकी यह रचना ही आपको प्रकट कर रही है। मुझ अल्पज्ञ का भला यह सामर्थ्य कहाँ था कि मैं सीधे-सीधे आपकी ओर चल पड़ता, आपकी अनुभूति कर पाता। तभी तो वेदमाता ने आपकी रचना का गीत गाया आपकी विचित्रता का गीत गाया। समस्त जड़, चेतन ने इसमें अपनी तान मिलाई, प्राणी जगत् ने इसमें सुर मिलाए और आपका स्नेह का सरस राग गूंज उठा। मेरा थका-मांदा मन आपकी शीतल छाया पाने के लिए लालायित हो उठा और सर्वत्र आपका ही दर्शन करने लगा, आपने ही कहा चल जंगल की ओर चल, पर्वतों की गुफाओं की ओर चल, नदियों के संगम की ओर चल। निकल इस भीड़ से, त्याग इस मोह बन्धन को देख ऋचा गान कर रही है-

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत।। (ऋ. ८/६/२८)

तेरे जीवन का लक्ष्य विप्र बनना है। विप्र का अर्थ है **'वि'** विशेष रूप से **'प्र'** जान। बुद्धि को जाग्रत कर और जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर। परन्तु यह कैसे सम्भव हो सकेगा? तेरी इस बस्ती में, भीड़ में, आपका मेल नहीं हो पाएगा। चल नदियों के संगम की ओर। वहाँ पर दो-तीन धाराएँ आकर एकाकार हो गई हैं वहीं तेरी ओर मेरी धारा भी मिलेगी। जब वहाँ मेल होगा तो एक चमत्कार होगा। आह! उस आनन्द की कल्पना भी कितनी रोमांचकारी है। साधक अपनी साधना की सफलता पर अपने परम प्यारे प्रभु का साक्षात्कार कर सकेगा। कितना पावन, कितना मधुर, कितना मंगलकारी होगा वह क्षण!!!

इससे पूर्व कि हम अपने लेख को विराम दें, एक विषय जो हमने कुछ देर के लिए छोड़ दिया था, उस पर भी कुछ विचार कर लेते हैं। ईश्वर की सारी रचना का, सारी कलाकारी का प्रयोजन वास्तव में क्या है? आधुनिक जीवन के पास इस बात का कोई भी उत्तर नहीं है यह सारा कार्य क्यों? रचना कैसी है, नियम क्या है इसका उत्तर तो विज्ञान दे रहा है परन्तु क्यों है किसलिए है इस प्रश्न का उत्तर उनके पास नहीं है। इस प्रश्न का उत्तर केवल वैदिक ऋषि के पास है। क्योंकि उसका चिन्तन सर्वांगीण है, एकांगी नहीं है और उत्तर यह है कि यह सब कुछ तो भोले मनुष्य तेरे कल्याण के लिए ही तो है। तू इसे देख, जांच परख और इसके पीछे स्थित रचनाकार को प्राप्त कर और स्थायी सुख का उपभोग कर। यहीं पर आकर तेरी समस्त कामनाएँ पूर्ण हो सकेंगी और तू एक ऐसे सुख को पा सकेगा जिसमें किंचित् मात्र भी दुःख मिला हुआ नहीं है। अरे पगले! यदि रचनाकार की रचना तुझे मन्त्रमुग्ध न कर दे तो फिर रचना ही क्या है? जिसे जानते समय तेरे मुख से स्वभाविक रूप से निकल पड़ेगा- ***अहो! चित्रं अथे चित्रतम्।*** ■

अनुभव का चिन्तन

हीरे यहाँ बिखरे पड़े हैं, क्यों न उन्हें सम्हालूँ मैं।
कंकड़ पत्थर शूल झोली से, क्यों न तुरत निकालूँ मैं।।
कद्र करूँगा मैं तो गुणों की ही, मूरख स्वार्थ त्यागूँ मैं।
कुल खानदान कोई भी हो क्यों न, गुण व्यवहार ही पालूँ मैं।।
गलती से पले हैं अब तक, बहुत सर्प आस्तीनों में।
फर्क नहीं कर पाये थे, दुर्जन-सज्जन और कमीनों में।।
क्योंकि छिपे हुए थे अब तक, वो पवित्र रिश्तों के मुखौटों में।
आखिर हम तो ठहरे मानव, अन्तर्मन को कैसे जानूँ मैं।।
निज कर्तव्य जैसे समझते, ऐसे ही औरों को भी माने।
जब दुष्टों ने रूप दिखाया, तब ही हम उनको पहचाने।।
जिनका शुभ करते रहे अब तक, उन सर्पों ने ही डस डाला।
जाने कैसा देवयोग है, जो इनसे मुझे पड़ गया पाला।।
जैसे चूहे छिपकली कॉकरोच, अनचाहे ही घर में रहते हैं।
ऐसे ही जीवों की भाँति कुछ, दुष्ट प्राणी भी पड़े रहते हैं।।
जिनके घर में रहते हैं मच्छर, उनका ही खून पीते हैं।
इनको ही कहते हैं राक्षस, दुःख देकर ही ये जीते हैं।।
इनकी अगली पीढ़ी भी, दुःख देने वाली होती है।
इसीलिए कीट नाशक से, ही फिर रखवाली होती है।।
जब तक जिंदे रहें राक्षस, खुशहाली कहीं न होती है।
स्वार्थ भाव में ये डूबे रहते, आँखें नहीं खुली होती है।।
अच्छा भले ही न लगे, और ना ही हृदय को भाय है।
महाभारत का धर्मयुद्ध ही, इनका एकमात्र उपाय है।।

● **आर्य पी.एस. यादव**
प्रधान आर्य, समाज, मण्डीदीप
जनपद : रायसेन (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५००४३७९

उद्योगे नास्ति दारिद्र्यम् जपतो नास्ति पातकम्।
मौने च कलहो शांति नास्ति जागरिते भयम्।। -चा.नीति ३/११

जीवन में चाहो सुख-शान्ति, चार बातों को लो अपनाय।
श्रम, जप, मौन, जागृति जगहित, श्लोककार ने दिए बताय।
जो करता है परिश्रम भाई, पास न कभी दरिद्रता आय।
जिसके जीवन जप तप भारी, पाप न कभी फटकने पाय।
जो रहता है मौन शान्त, विवाद भी उससे जिया चुराय।
और जागृति की तो बात ही क्या, हो विमल सदा प्रसन्न निर्भय।।

● **आचार्या विमलेश बंसल 'आर्या'**
'विमल वैदेही', दिल्ली

सत्य सनातन सिद्धान्तों की पाठशाला : आर्य समाज

• **डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'**
चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

विश्व में आर्य समाज ही एकमात्र ऐसा संगठन है जो वेद की सनातनता की पुनर्स्थापना के लिए विरोधियों की गालियाँ सुनने के बाद भी मनुष्यता की भलाई के लिए सत्य-सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार का कार्य भी करता है। जो लोग नहीं जानते कि आर्य समाज क्या चीज है, वे लोग इस संगठन पर तरह-तरह के आरोप-प्रत्यारोप लगाते ही रहते हैं। उन्हें अज्ञानतावश और अपने पूर्वाग्रहों के कारण यह नहीं पता होता कि आर्य समाज **'वेद'** के सत्य-सनातन सिद्धान्तों का वैज्ञानिक विधि से प्रचार करता है जिसमें सम्पूर्ण मनुष्य जाति के कल्याण की बात है। कुछ लोग इसे दिल को ठेस पहुँचाने वाली संस्था कहते हैं वो अज्ञानतावश भ्रम में हैं। क्योंकि दिल को ठेस भी दो प्रकार से लगाई जाती है- एक किसी की भलाई के लिए और दूसरी किसी को जान-बूझ कर दुःख देने के लिए। जो ठेस किसी की भलाई के लिए लगाई जाती है वह किसी को हानि पहुँचाने के लिए नहीं बल्कि उस मनुष्य के लाभ के लिए लगाई जाती है।

उदाहरणार्थ- एक आदमी की टाँग पर फोड़ा निकल आया। फोड़े में पस (मवाद) पड़ गया। पस में कीड़े पड़ गए। वह आदमी औषधालय में गया। औषधालय में डॉक्टर ने उसकी टाँग का निरीक्षण किया और निरीक्षण करने के पश्चात् डॉक्टर नेक नीयत से इस परिणाम पर पहुँचा कि हो सकता है फोड़े के अन्दर से उसकी पस निकालने के लिए सम्भवत: इसकी टाँग पर बड़ा चीरा लगाना पड़े। अब डॉक्टर नेक नीयत से इसको ठीक करने के लिए चीरा लगाना शुरू कर देता है। जहाँ डॉक्टर ने चीरा लगाना आरम्भ किया उधर रोगी ने चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया कि ये डॉक्टर तो बड़ा निर्दयी है। दिल दुखाने वाला है और लगे हाथों मन ही मन डॉक्टर को दस-बीस गालियाँ भी दे देता है। अब सोचो कि इस अवस्था में उस डॉक्टर के क्या कर्तव्य है? क्या डॉक्टर का यह कर्तव्य है कि वह रोगी की गालियों से क्रोधित होकर अपने औजारों को अनुचित जगह चलाकर रोगी को हानि पहुँचाए? कदाचित् नहीं। यदि डॉक्टर रोगी की गलतियों से क्रोधित होकर अपने औजारों को अनुचित चलाकर रोगी को हानि पहुँचाता है तो वह डॉक्टर अपने कर्तव्य से गिरा हुआ माना जाता है क्योंकि वह अपने कर्तव्यों को पूरा नहीं कर रहा होता और क्या डॉक्टर का यह कर्तव्य है कि वह रोगी की गालियों से निराश होकर इलाज करना छोड़ दे? तो भी वह अपने कर्तव्य से गिर जाता है। डॉक्टर का तो यह कर्तव्य है कि वह रोगी की गालियों की तरफ ध्यान न देकर नेक नीयत से उसके जीवन को बचाने के लिए निरन्तर इलाज जारी रखे। एक समय ऐसा आएगा जब सब ठीक हो जाएगा और रोगी की टाँग की सारी पस निकल जाएगी और डॉक्टर इस पर मरहम पट्टी करेगा और रोगी को आराम आ जाएगा। इस स्थिति में वही रोगी जो डॉक्टर को गालियाँ दे रहा था, अब वह डॉक्टर को आशीर्वाद और धन्यवाद देगा कि आपने मेरा जीवन नष्ट होने से बचा लिया। बस यही हालत आर्य समाज की है। बस आर्य समाज रूपी डॉक्टर जब पाखण्ड से लुटने वाले मनुष्य को सत्य का आभास कराता है और तब तक वह भी फोड़े में चीरा लगा रहे डॉक्टर को जैसे रोगी गालियाँ देता है, उसी प्रकार कोसता रहता है। जब तक कि वह पाखण्ड से ही रही लुटाई से बच नहीं जाता। और जब वह बच जाता है तो आर्य समाज को बड़ा उपकारी मानता है अर्थात् जब उसे अहसास होता है कि आर्य समाज उसके हित में कार्य कर रहा है तो वह नतमस्तक हो ईश्वर को धन्यवाद करता है कि उसे ईश्वर की कृपा से आर्य समाज रूपी संस्था का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने अनुभव किया कि तथाकथित हिन्दुओं, मुस्लिमों, ईसाइयों के अन्दर बहुत से गलत रीति-रिवाज और अहितकारी मान्यताएँ विद्यमान हैं। अगर इनको समय रहते हुए न निकाला गया तो सम्भव है इस तथाकथित हिन्दू जाति के साथ ही अन्य मनुष्यों का नामोनिशान भी संसार में न रहेगा और रहेगा भी तो वह सुख-शान्ति, समृद्धि, सद्भावना से वंचित रहेगा। इस बात का विचार करते हुए महर्षि दयानन्द ने अपने समय में और उनकी मृत्यु के बाद आर्य समाज ने नेक नीयत के साथ मनुष्यता को बचाने हेतु उनकी गलत मान्यताओं और अहितकारी रीति-रिवाजों का खण्डन आरम्भ किया जो मानव समाज को दीमक की भाँति खोखला कर उसे कमजोर बना रहे थे। खण्डन आरम्भ करने के बाद तथाकथित हिन्दू जाति के साथ ही अन्यों ने भी महर्षि दयानन्द जी के साथ और उनकी मृत्यु के बाद आर्य समाज के साथ बुरा व्यवहार किया। गाली-गलौच की, ईंटें व पत्थर बरसाए और अब भी कई स्थानों पर आर्य समाज के साथ ऐसा ही व्यवहार हिन्दू जाति की तरफ से किया जा रहा है। अब ऐसी अवस्था में आर्य समाज का क्या कर्तव्य है? क्या आर्य समाज का यह कर्तव्य है कि वह पौराणिक हिन्दू जाति की गाली-गलौच और उनके बुरे व्यवहार से क्रोधित होकर अनुचित भाव से हिन्दू जाति को चिढ़ाने के लिए या उसे हानि पहुँचाने के लिए उनकी मान्यताओं का खण्डन करे और उन्हें गलत रास्ते पर चलने के लिए छोड़ दे? कदापि नहीं। अगर आर्य समाज ऐसा करता है तो वह अपने नियम व सिद्धान्तों का पालन न करने से अपने कर्तव्य से गिर जाता है। अर्थात् वह अपने कर्तव्यों को पूरा नहीं करता। ऐसी अवस्था में आर्य समाज का यह कर्तव्य बनता है कि वह हिन्दू जाति की गाली-गलौच व बुरे व्यवहार को अनदेखा कर नेक नीयत से अर्थात् सद्भावना सहित धर्म भाव से हिन्दू जाति के सुधार और उसके जीवन को स्थिर रखने के लिए निरन्तर इसके बुरे रीति-रिवाजों और गलत मान्यताओं का खण्डन करता हुआ चले। ऋषि दयानन्द के जीवन तथा आर्य समाज स्थापना के पश्चात् यह अभियान निरन्तर चला आ रहा है और इसके परिणाम सार्थक सुखद रहे हैं। अनेक अवैदिक-अमानवीय-अधार्मिक मान्यताएँ दम तोड़ चुकी हैं। वह समय

अति निकट होगा जब हिन्दू जाति के अन्दर से गलत मान्यताएँ और अहितकारी रीति-रिवाज पूर्णतः समाप्त हो जाएँगे और **वह अपने पहले वाले सनातन स्वरूप को प्राप्त होकर 'वेद' के रास्ते पर चलकर 'आर्य' कहलाने में गौरव महसूस करे, 'हिन्दू' कहलाने में नहीं। इसके बाद ही हिन्दू से बने आर्यों में वह ताकत आएगी जिससे कि वह मुस्लिम, ईसाई, सिख, पारसी, जैन आदि अनेक मतों में जो अवैदिक मान्यताएँ आ गई है उनको दूर कर सकेंगे।** यह हिन्दू जाति फिर से सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में पिरोकर रख सकेगी। तब इस तथाकथित हिन्दू जाति के अन्दर आर्य समाज के प्रति सद्भावना जागृत हो जाएगी और इसके लिए वह ईश्वर को धन्यवाद देगी कि उसकी बड़ी कृपा हुई कि वह सत्य सनातन सिद्धान्तों की पाठशाला आर्य समाज का उसे सान्निध्य प्राप्त हुआ। इसलिए जो लोग यह कहते हैं कि आर्य समाज एक दिल दुखाने वाली संस्था है, भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली संस्था है, ये उनका कोरा भ्रम है। ■

वह दीया पानी से जलता है

डरे हुए, मरे हुए लोग,
क्रान्तिदूत, अग्निपथी नहीं होते,
सहमे-सहमे से, नजर झुकाए हुए,
ये काहिल कमजोर लोग,
क्रान्तिदूत, अग्निपथी नहीं होते।
वे होते हैं, अलग किस्म के लोग,
जो जीते जी शहीद होते हैं,
कदम-कदम क्रान्ति के बीज बोते,
वे आसुओं के बोझ नहीं ढोते।
वे चलते हैं,
मुट्ठी में लेकर अपनी मौत,
यह अम्बर ही, उसका कफन होता है,
वह जागता है, जब सारा संसार सोता है।
उसके चेहरे पर होता है पानी,
उसके तलवारों पर चढ़ा होता है पानी,
वह रखता है देश का पानी,
वह दीया समान बलता है,
वह दीया पानी से जलता है।
ऐसे ही लोग फैलाते हैं प्रकाश
ऐसे ही लोग जगाते हैं आस,
ऐसे ही लोग मिटाते हैं हाहाकार,
हिम्मत हारे लोग, कुछ नहीं कर पायेंगे,
वे पानी से दीया क्या जला पाएँगे? ■

● **डॉ. लक्ष्मी निधि**
'निधि विहार', १७२, न्यू बारादारी, ह्यूम पाइप रोड
नया कोर्ट रोड, पो. साकची, जमशेदपुर-१ (झारखंड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

फूट-व्यथा : एकता आह्वान

ओ आर्य हिन्दुओं हाय आपको क्या हो गया,
आपकी एकता को क्या गद्दार जयचन्द खा गया?
आपसी फूट में आज आप क्यों लुट-पिट रहे,
अपनी अज्ञानता के अहं से क्यों अलग बँट रहे?
सम्भलो समय अब मिटने का निकट आ गया,
सर्वनाश का रास्ता क्यों आपको विकट भा गया?
संसार में सर्वप्राचीन संस्कृति अपनी शान है,
उठो जागो स्वयं सम्भालो बची कुछ आन है।।
राम और कृष्ण भी आदर्श मर्यादा हमारी पहचान है,
आराध्य अपने बुद्ध, महावीर, नानक, दयानन्द महान् है।।
गौरव हमारे वीर शिरोमणि शिवाजी, राणा प्रताप उत्कृष्ट हैं,
राष्ट्ररक्षा हित त्याग बलिदान उनका सर्वश्रेष्ठ है।।
प्रभु प्रसाद पवित्र वेद, अपने अध्यात्म की खान है,
विश्व शक्ति व बन्धुत्व इनका उत्कृष्ट वरदान है।।
आज आपके संगठन सूक्त मात्र पाठ ही रह गए,
इन पर आचरण व क्रियान्वयन क्यों अधूरे रह गये?
आप आर्य से हिन्दू व इण्डियन कैसे बन गये,
विदेशी अपमानित दासता नामों से इतने क्यों सन गये?
हम पवित्र आर्य 'भारती' पुत्र ज्ञानी भारतीय हैं,
हमारी पुरातन सभ्यता, संस्कृति, संस्कार अतुलनीय है।।
उस देश की आन-बान-शान को कौन बचाये?
जिसके रखवाले ही बेफिक्र हो गहरी नींद सो जायें।।
संगठन की सीख देने वाले ही फूट में फंस गये,
कीच से निकालने वाले ही कीच में धंस गये।।
बन्धुओं हमारे संगठन हेतु दयानन्द बलिदान हो गये,
अन्त में एकता सन्देश देकर स्वाभिमान दे गये।।
बन्धुओं अपनी संगठन शक्ति, आत्मरक्षा हित बढ़ाओ,
सबको मीत बना, प्रीत अपनी सर्वहित लुटाओ।।
आपको मिटाने हेतु दुष्ट दुश्मन तैयार बैठे हैं,
क्रूर, हिंसक, द्वेषी, शैतान ले हथियार बैठे हैं।।
आर्य कवि आपके संगठन हेतु अति व्यथित हो रहा,
हृदय को थाम मार्मिक एकता आह्वान कर रहा।।
भारत एक हजार साल फूट से विदेशी दास रहा,
हमारे पूर्वजों ने अपार अपमानों का फाँस सहा।।
अब भी सम्भल जाओ सुदृढ़ संगठन अपना बनाओ,
एकता बद्ध हो शक्ति से अस्तित्व अपना बचाओ।
एक भारत माँ के पुत्र हम सब हैं, भाई-भाई,
परस्पर सुख-दुःख में, हम होवें सदा सहाई।।
फूट डाल अलग करने की कटुता किसने फैलाई,
जो मातृभूमि के दुश्मन एकता उन्हें नहीं सुहाई।।
एक पवित्र परमेश्वर की पवित्र हम सब सन्तानें,
यह अपवित्र फूट कहाँ से आई हमें मिटाने? ■

● **अम्बालाल विश्वकर्मार्य**
पिपलिया मण्डी, मन्दसौर
चलभाष : ८९८९५३२४१३

आर्यसमाज और आर्यसमाज के दस नियम सर्वहितकारी वेदानुकूल ईश्वरीय संविधान है

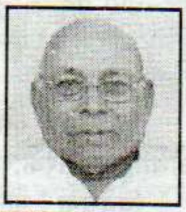

• **पं. उम्मेदसिंह विशारद**
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०११, ९५५७६४१८००

आर्य समाज सृष्टि उत्पत्ति के बाद सर्वप्रथम देव पुरुषों का प्राचीन संगठन है। महाभारत काल तक सम्पूर्ण सृष्टि में केवल सत्य सनातन वैदिक धर्म को मान्यता थी। पश्चात् अनेक मत-मतान्तरों के पनपने के कारण वैदिक धर्म में विकृति आने लगी थी और जो ईश्वरीय संविधान वैदिक आचरणों की व्यवस्था थी वह छिन्न-भिन्न होने लगी थी। मानवीय समाज में अनेक प्रकार की धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ एवं प्रबुद्ध वर्ग द्वारा शोषण प्रवृत्ति चरम पर थी। फलस्वरूप अपना भारत विदेशियों का गुलाम हो गया और हजारों वर्षों तक भारत गुलाम रहा।

ईश कृपा से अठारहवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी का जन्म हुआ। उन्होंने समाज में तमाम धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कुरीतियों के विरोध में एक सुधारवादी सात्विक वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया और १० अप्रैल १८७५ को बम्बई में प्राचीन काल की तरह आर्य समाज की स्थापना की थी। फलस्वरूप आर्य समाज ने उक्त तमाम चुनौतियों को स्वीकार किया और निरन्तर कर रहा है। आर्य समाज सम्पूर्ण विश्व में फैला हुआ है। स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यों ने सर्वाधिक बलिदान दिया है।

आज जो भारत सरकार में समाज सुधार के कानून बने हैं वह सब आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुकूल बने हुए हैं। आर्य समाज स्वस्थ समाज अर्थात् वेदानुकूल ईश्वरीय व्यवस्था जिसमें संसार चल रहा है। उस सृष्टिक्रम के वैज्ञानिक आधार पर समाज में साम्यवाद की संरचना कर रहा है। आर्य समाज चाहता है कि हमारा राष्ट्र पुनः विश्वगुरु बने व बन रहा है। आर्य समाज कोई मत पंथ नहीं है यह संसार में जो भी श्रेष्ट अर्थात् वेदानुकूल सृष्टिक्रमानुसार सर्वसुख व शान्ति कारक कर्म है उसको मानता है। आर्य समाज एक शुद्ध व शान्तिदायक वैचारिक संगठन है। इसका वह प्रत्येक सदस्य है जो उपर्युक्त विचारों पर चलता है। कोई भी मनुष्य मात्र इसका सदस्य बन सकता है।

आइए! महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने संसार के कल्याण अर्थात् सर्वहितकारी सुधारवादी, मानवतावादी, वेदानुकूल जो विश्व प्रसिद्ध दस नियम बनाए हैं, उन पर क्रमशः विचार करते हैं। यह दस नियम ऐसे हैं जो सम्पूर्ण विश्व में अपार शान्ति ला सकते हैं।

आर्य समाज के सर्वहितकारी दस नियम का अवलोकन

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

अर्थात् संसार में जितना भी ज्ञान-विज्ञान का आविष्कार और तकनीकी विद्या का प्रवाह है व सृष्टि क्रम का ज्ञान-विज्ञान का रहस्य व प्रकृति का रहस्य भिन्न-भिन्न रूपों में प्रत्यक्ष दिखता है। उसका आदि मूल केवल ईश्वर है।

विवेचना : मानव जगत् सत्य विद्या और सृष्टिक्रम के ज्ञान पर चल कर ही विश्व में शान्ति ला सकता है। इसके विपरीत ज्ञान संचालन में विनाश ही विनाश है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर-अमर, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

विवेचना : संसार में सबसे बड़ा धोखा जड़ पूजा है। जड़ पूजा से ईश्वर की पूजा कभी भी नहीं हो सकती है। जब मानवों को जड़ व चेतन का ज्ञान हो जाएगा उसी दिन से ईश्वर के नजदीक हो जाएँगे। जड़ वस्तु दृश्य है, इसलिए अदृश्य को मानना पड़ता है। जड़ वस्तु विनाशी है। इसलिए अविनाशी को मानना पड़ता है। जड़ वस्तु परिवर्तनयुक्त है इसलिए अपरिवर्तनशील को मानना पड़ता है। जड़ वस्तु दुःखमय है इसलिए दुःख विनाशी को मानना पड़ता है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

विवेचना : ईश्वर ने सृष्टि को एक राज्य बनाया है और वेद ज्ञान उसका संविधान है। राज्य व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु संविधान आवश्यक है और वेद संविधान को जानने वाले भी आवश्यक हैं। इसलिए वैदिक धर्म पालन में ही सर्वसुख है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

विवेचना : सत्य-असत्य में मूल भेद क्या है। असत्य वस्तु, असत्य विचार, असत्य संस्था के भीतर ही उसके तोड़ने वाले तत्व रहते हैं इसी को अन्तर्द्वन्द्व कहा है। असत्य के पेट में पड़ा अन्तःविरोध उसको धीरे-धीरे फोड़ता है और असत्य के भीतर छुपा हुआ सत्य अपने पैनेपन से उभर आता है। सत्य के पेट में कोई दुविधा नहीं होती क्योंकि उसमें कोई अन्तर्द्वन्द्व नहीं होता। जहाँ भीतर दोनों हों वहीं संघर्ष होता है। जितनी भी संस्थाएँ बनती हैं उनका लक्ष्य सत्य को ढूँढना होता है। जज व वकीलों का कार्य भी सत्य को ढूँढना होता है। विश्व यदि टिका हुआ है तो केवल ऋत सत्य और सत्य के आधार पर टिका हुआ है।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

विवेचना : आदि सृष्टि में संस्कार, संस्कृति, सभ्यता का मूल आर्य संस्कृति, सत्य धर्म का मूल वैदिक संस्कृति-वैदिक संस्कृति का मूल चारों वेद-चारों वेद का मूल चार ऋषि वायु, अग्नि, आदित्य व अंगिरा और चारों ऋषियों का मूल ईश्वर है। इसलिए वैदिक आर्य है। बाकी आप स्वयं चिन्तन करें।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

विवेचना : मानव जीवन को धार्मिक व सुखी बनाने का मुख्य आधार स्वस्थ तथा बलवान शरीर है और आत्मा स्वयं देखने वाला है। उससे देखना, सुनना, मनन करना नहीं किया जा सकता है। वह स्वयं सब कुछ देखने वाला है। यह आत्मा सभी प्राणियों के भीतर है। जो आत्मवत चलता है वही समाज की उन्नति कर सकता है।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

विवेचना : सब प्राणियों के प्रति दया भाव रखना तथा वेद ईश्वर आदि में श्रद्धा भाव रखकर वर्तना आदि।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

विवेचना : यज्ञ भाग या अन्य कर्म काण्ड आदि अपरा विद्या है। इससे परम ब्रह्म प्राप्त नहीं होता है और ईश्वर प्रणिधान, ज्ञानकाण्ड, योग, ध्यान आदि परा विद्या है। इसी से ईश्वर की अनुभूति होती है। वास्तव में तो अपरा अविद्या है और परा ही विद्या है क्योंकि परा विद्या से ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

विवेचना : परमेश्वर वेदों द्वारा उपदेश करते हैं कि तुम पक्षपात निजस्वार्थ रहित सत्याचरण से जो धर्म है उसी को ग्रहण करो। तुम लोग वाद-विवाद छोड़कर परोपकार की भावना से उत्तम कार्य करो और जो व्यवहार तुम दूसरों से अपने लिए चाहते हो वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ करो। केवल अपनी ही उन्नति में न लगे रहो। दूसरों को भी सहयोग करें।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

ध्यानाकर्षण

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी सच्चे ईश्वर भक्त थे। उन्होंने कोई नया मत नहीं बनाया और न ही किसी मत में शामिल हुए। उन्होंने प्राचीन ऋषि परम्परा वेदानुकूल संस्कृति को पुनः जीवित किया और प्रचार के लिए प्राचीन सबसे पुराना संगठन आर्य समाज का पुनः उद्धार दिया और उसके दस नियम सार्वभौम सर्वहितकारी स्वार्थ रहित बनाए। यही प्राचीन ऋषि परम्परा का इतिहास है। आइए हम आर्य समाज के साथ मिलकर संसार का उपकार करें। ■

पावन त्योहार होली का महत्व

पावन होली त्योहार का लो महत्व समझ नर-नारी।
देवों के सद्व्यवहार का लो महत्व समझ नर-नारी।।

आर्यों का है यह त्योहार, हमको होली से है प्यार।
ऋषियों के उच्च विचार का, लो महत्व समझ नर नारी।।१।।
पावन होली त्योहार का...

'होली नवसस्येष्टि यज्ञ' कहते सब वैदिक मर्मज्ञ।
यदि हित चाहो संसार का तो महत्व समझ नर-नारी।।२।।
पावन होली त्योहार का...

रबी की फसल पूर्ण पक जाती, जनता भारी हर्ष मनाती।
अवसर है खुशी अपार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।३।।
पावन होली त्योहार का...

आर्य देव यज्ञ करते थे सारे जग के दुःख हरते थे।
यह पर्व का परोपकार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।४।।
पावन होली त्योहार का...

लागू थे जब वैदिक नेम, था सर्वत्र परस्पर प्रेम।
लक्ष्य विश्व उद्धार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।५।।
पावन होली त्योहार का...

तज दो सभी ईर्ष्या-द्वेष, परहित सोचो सभी हमेश।
यह जगत बाग करतार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।६।।
पावन होली त्योहार का...

छोड़ो चोरी जुआ शराब, तज दो आदत सभी खराब।
रंग डालो सब पर प्यार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।७।।
पावन होली त्योहार का...

गन्दी प्रथाओं को तोड़ो, सच्चाई से नाता जोड़ो।
जीवन जीओ सत्कार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।८।।
पावन होली त्योहार का...

अब तक होली जो तो होली, सबसे बोलो मीठी बोली।
फल पाओ प्रेमोपहार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।९।।
पावन होली त्योहार का...

ऋषियों की शिक्षाएँ मानो, अपना भला-बुरा पहचानो।
यह वक्त नहीं तकरार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।१०।।
पावन होली त्योहार का...

सर्वोत्तम है मानव चोला, अब चोलों से है अनमोला।
कुछ भला करो संसार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।११।।
पावन होली त्योहार का...

कहता नन्दलाल कर जोड़, खोटे कर्मों को दो छोड़।
यह समय वेद प्रचार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।१२।।
पावन होली त्योहार का... ■

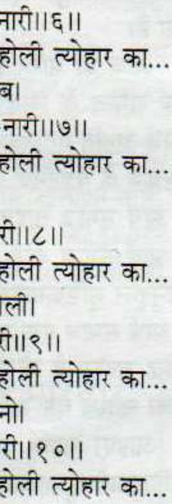

• **पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य**
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

महर्षि दयानन्द सरस्वती की वास्तविक जन्मतिथि : २० सितम्बर १८२५

• आचार्य दार्शनेय लोकेश
सम्पादक : श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्
(एकमात्र वैदिक पञ्चाङ्ग)
सी–२७६, गामा–१, ग्रेटर नोएडा
दूरभाष : ०१२०–४२७१४१०

ज्योतिष का विद्यार्थी होने के नाते मेरे संज्ञान में यह बात आई है कि महर्षि जी की जन्म तिथि पर अब तक जितने भी विद्वानों ने कार्य किया है वे सब के सब पञ्चाङ्ग के उपयोग की यथावत जानकारी के अभाव में सही निर्णय तक नहीं पहुंच पाए हैं। गलती सबसे हुई है और वह यह है कि महर्षि द्वारा स्वयं लिखित रूप से प्रस्तुत कथन, 'जन्म संवत् १८८१ और स्थान दक्षिण गुजरात प्रान्त देश काठियावाड़ का मजोकठा देश मोरवी का राज्य....' और पं. ज्वालादत्त शर्मा जी के कथन कि '**दक्षिणे देशवर्ये**' के सन्दर्भ पूर्वक जन्म संवत् का ही यथावत संज्ञान नहीं ले पाए। महर्षि की जन्म तिथि के निर्धारण में यही मूल एवं मुख्य गलती रही है, ऐसा मेरा मानना है।

मैं, २६ अगस्त १८७९ ई. के भाद्रपद शुक्ल नवमी संवत् १९३६ को, महर्षि के द्वारा कर्नल ऑल्काट महोदय के लिए लिखे गए जन्म चरित्र और ज्वालादत्त जी के श्लोक '**क्षोणीभाहीन्दुभिरभिहुते**' (क्षोणी=पृथ्वी १, इभ=हाथी=दिग्गज ८, अहि=सर्प ८, इन्दु=चन्द्र १ अर्थात् १८८१) **वैक्रमे संवत्सरे** (विक्रम संवत् में) **यः** ('जो' यानी स्वामी दयानन्द सरस्वती) **प्रादुर्भूतो** (जन्मे) **द्विजवरकुले** (ब्राह्मण कुल में) **दक्षिणे देशवर्ये** (एक श्रेष्ठ दक्षिण देश में, यहां पर कार्तिकीय विक्रम संवत् का सन्दर्भ भी बनता है)। **मूलेनासो** (मूल नक्षत्र में जन्म लेने से मूल शब्द में इनको) **शङ्करापरेण** (शङ्कर जोड़कर यानी मूल शङ्कर नाम दिया गया) **ख्यातिं प्रापत् प्रथमवयसि प्रीतिदां सज्जनानाम्**'।। (सज्जन -सत्पुरुषों को प्रीति दायक नाम दिया गया।)। इस श्लोक को प्रमाण मानते हुए महर्षि का गृह त्याग संवत् १९०३ के लगते में तो हुआ था किन्तु गुजरात में तब के लिए यानी गृह त्याग के लिए डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी द्वारा मान्य 'अप्रैल १८४६' में 'संवत् १९०३' था ही नहीं। अस्तु महर्षि जी के द्वारा कही गई संवत् १९०३ के आरम्भ में गृह त्याग की बात तभी सही हो सकती है जब उसको कार्तिक शुक्ल पक्ष यानी २१.१०.१८४६ से कार्तिक पूर्णिमा यानी ३.११.१८४६ के बीच के काल से जोड़ कर लिया जाए।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रामाणिक जन्म तिथि नामक पुस्तक के पृष्ठ ७१ पर जो यह सहमति व्यक्त है कि स्वामी जी ने वस्तुतः चैत्र शुक्ल पक्ष १९०३ विक्रमी में अर्थात् १८४६ ईस्वी के अप्रैल मास में ही गृहत्याग कर दिया था, यह बात शतप्रतिशत गलत है। साथ ही पुस्तक के इसी पृष्ठ पर कहा गया है कि भाद्र मास में जन्म मानने पर स्वामी जी का गृहत्याग संवत् १९०२ में मानना होगा, यह कथन भी उतना ही, यानी शत प्रतिशत गलत है।

वास्तव में भाद्र शुक्ल नवमी संवत् १८८१ का जन्म लेने पर संवत् १९०२ के दिनाङ्क ३१ अगस्त १८४६ को ही महर्षि का २१वाँ वर्ष पूर्ण हो जाने का हिसाब बनता है और लगभग ५१ दिनों के बाद ही कार्तिकादि संवत् १९०३ शुरू हो गया था। इस तथ्य का स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि उनकी २२वीं जन्मतिथि यानी २१ वर्ष की पूर्ति सोमवार, ३१.०८.१८४६ को होती है। इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि फाल्गुन मासान्तर्गत उनका जन्म होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

पुस्तक के पृष्ठ ७० पर कहा गया है, 'अतः उनके २१वें वर्ष की समाप्ति संवत् १९०२ और गृह त्याग का संवत् १९०३ में लगभग डेढ़ डेढ़ मास का अन्तर होना चाहिए।' अन्तर की बात सही है किन्तु १९०३ विक्रमी (कार्तिकीय) शुक्ल पक्ष का आरम्भ हुआ है न कि चैत्रीय शुक्ल पक्ष का।

ज्ञातव्य है कि महर्षि की २२ वर्ष तक की सभी घटनाओं का दिनांक केवल और केवल कार्तिकीय विक्रम संवत् के अनुसार लेना उचित, उचित ही नहीं बहुत आवश्यक भी है। इसका उल्लंघन कोई भी नहीं कर सकता। अज्ञात काल से गुजरात में कार्तिकीय विक्रम

वैदिक होली

महर्षि ने ऐसी महक महकाई, दयानन्द ने ऐसी होली मनाई,
वैदिक ज्ञान की ज्योति जलाई।
ऋषि ने ऐसी होली मनाई...

घोर पाखण्ड के पथ को नकारा, सत्य सनातन से तन को सँवारा।
पाखण्ड खण्ड की ध्वजा फहराई, अज्ञान की होली जलाई।
ऋषि ने ऐसी होली मनाई...

बिछुड़ों को आपस में मिलाये, एकता के रंग में रंगाये।
भूले भटकों को राह दिखाई, ब्रह्मचर्य की शक्ति बताई।
ऋषि ने ऐसी होली मनाई...

सबकी बसंती रंग लगाया, राष्ट्र प्रेम का जज्बा जगाया।
दीवानों को ऐसी गुलाल लगाई, तन–मन गये है रंगाई।
ऋषि ने ऐसी होली मनाई...

नारी शूद्र को वेद पढ़ाया, आडम्बर अन्धकार मिटाया।
सत्य ज्ञान की चुनर ओढ़ाई, वेदों की सुरसरी बहाई।
ऋषि ने ऐसी होली मनाई...

सारे विरोधी मन में लजाए, शास्त्रार्थ में ऋषि से मुँह की खाए।
दयालु ने ऐसी दया दर्शाई, वैदिक सत्य की राह बताई।
दयानन्द ने ऐसी होली मनाई, वैदिक ज्ञान की ज्योति जलाई।

• राधेश्याम गोयल
न्यू कॉलोनी, कोदरिया (महू)
चलभाष : ९६१७५९७९१०

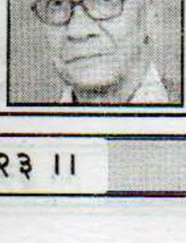

संवत् चलता आया है और यह स्थिति आज भी ऐसी ही चालू है।

हमारे यशस्वी प्रधानमन्त्री जी, आदरणीय नरेंद्र मोदी जी की जन्मतिथि दि. १७.०९.१९५० के साथ भी यही स्थिति है। यह तिथि भाद्रपद शुक्ल षष्ठी संवत् २००६ शक संवत् १८७१, कार्तिकीय संवत् के अनुसार ही होती है, न कि चैत्रादि विक्रम संवत् के अनुसार संवत् २००७।

समग्र भारत में घटनाओं के दिनांक स्थानीय परम्परानुसार ही चलते आये है। जहां जन्म होता है वहीं के अनुसार होता है, भले ही बाद में हम कहीं पर भी क्यों न रह रहे हों। उदाहरण के लिए उत्तराखण्ड में गते की परम्परा है। मेरा स्वयं का जन्म आषाढ़ इतवार ११ गते, संवत् २००८ का है। अब मैं यदि बाद में किसी वर्ष स्वीडन में होऊँ या इण्डोनेशिया में और वहां मुझसे मेरी जन्मतिथि पूछी जाए तो तब भी मैं आषाढ़ के इतवार, ११ गते, संवत् २००८ के अनुसार ही कहूंगा और वह उत्तराखण्ड की परम्परा के अनुसार पारम्परिक निरयन सौर मास की गते से जुड़ी तिथि के अनुसार ही समझी जाएगी।

वस्तुतः उक्त पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठ में ही कहीं पर लिख दिया गया कि ऋषि अपने आत्मचरित्र में सर्वत्र विक्रम संवत् का ही प्रयोग करते हैं। चैत्रीय यानी चैत्र शुक्ल पक्ष से शुरू होने वाला संवत् हो या कार्तिकीय याने कार्तिक शुक्ल पक्ष से शुरू होने वाला संवत् हो, परन्तु होते तो दोनों ही संवत् विक्रम संवत् ही हैं। गुजरात या महर्षि की जन्म तिथि के सन्दर्भ से इसे विक्रम कार्तिकीय कहा जाना आवश्यक है।

ऐसा लगता है कि डॉ. शास्त्री जी ने महर्षि की जन्म तिथि के बारे में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा पहले से ही ले लिए गए निर्णय को सम्पुष्ट मात्र किया है। पुस्तक के पृष्ठ १५ पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तात्कालिक प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी ने डॉक्टर शास्त्री से जो कुछ कहा वह सब इस बात में प्रमाण है। इस अर्थ में '**महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रामाणिक जन्म तिथि**' नामक उनकी पुस्तक, एक संयोजन पुस्तक है, अनुसन्धान नहीं।

संयोजन का यह भाव तब और भी स्पष्ट हो जाता है जब उनके द्वारा इस पुस्तक में प्रायः जब भी शिवरात्रि का उल्लेख किया जाता है तो '१४वें वर्ष के आरम्भ में' लिखते हुए ही किया गया है। सत्य यह है कि महर्षि कह रहे हैं, '**....जब शिवरात्रि आई तब त्रयोदशी के दिन...**' इसमें स्पष्ट हो रहा है कि अगर शिवरात्रि १४वें वर्ष के आरम्भ में ही होती तो तब महर्षि 'जब शिवरात्रि आई तब त्रयोदशी के दिन' ऐसी भाषा नहीं कह सकते थे। सही यह है कि वह शिवरात्रि जो उनके और हमारे लिए बोधरात्रि बन गई है, वो महर्षि की १४वें वर्ष की शिवरात्रि तो थी किन्तु १४वें वर्ष के 'आरम्भ की शिवरात्रि' नहीं थी।

आइए, अब ग्रहचक्र या कुण्डली की बात करें। यह विषय ई. २०१८ की शुरूआत में मेरे विचारार्थ सामने आया था तो स्वयं एक ज्योतिष का विद्यार्थी होने के नाते मेरा ग्रह गणित पर ध्यान जाना स्वाभाविक था और आवश्यक भी। इसी से कुण्डली या होरोस्कोप जो काल गणना का एक बहुत ही प्रामाणिक आलेख होता है, उसकी कल्पना करना शुरू कर दिया। महर्षि के कथन, '........ **तब तक २१वां वर्ष भी पूरा हो गया। जब मैंने निश्चित जाना कि अब विवाह किए बिना कदाचित न छोड़ेंगे फिर गुपचुप संवत् १९०३ के वर्ष घर छोड़कर सन्ध्या के समय भाग उठा....**' इत्यादि पढ़ा।

स्पष्ट है कि गुजरात में तात्कालिक संवत् १९०३ के लगते से दो-तीन माह पीछे ही महर्षि जी का जन्म मास हुआ होगा यानी- श्रावण या भाद्रपद या फिर आश्विन में। महर्षि जी की दो कालजयी रचनाओं में भाद्र शुक्ल पक्ष का खास उल्लेख हुआ है। मानवीय मनोविज्ञान का यह एक खास कोण है। इसे हम एक बॉडी लैंग्वेज या लेखक के अपने अव्यक्त आशय की सङ्केत भाषा के रूप में देख लें तो उचित होगा।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव के पक्ष की बात इसी में स्पष्ट है कि महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश को भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में ही लिखना शुरू किया था। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखना शुरू करने के मुहूर्त को उन्होंने स्वरचित श्लोक, '**कालरामाङ्कचन्द्रे** (काल=३, रा=३, अङ्क=९ एवं चन्द्र = १ अर्थात् ३३९१ यानी 'अङ्कानां वामतो गतिः' के अनुसार १९३३) **भाद्रमासे सितेदले प्रतपद्यादित्यवारे** (भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा रविवार के दिन) **भाष्यारम्भकृतो मया...**' (मेरे द्वारा भाषा आरम्भ किया गया है) के माध्यम से भी स्पष्ट किया है। सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण तो भाद्र शुक्ल की नवमी को ही लिखा बताया जाता है। यह संस्करण मैंने नहीं देखा परन्तु उनका 'अपना जन्म चरित्र' भाद्र शुक्ल नवमी संवत् १९३६ तदनुसार २६.८.१८७९ को अपने लेखक से लिखवाकर स्वयं हस्ताक्षर करके उन्होंने कर्नल ऑल्काट को भिजवाया था, यह प्रत्यक्ष प्रमाण की तरह है। कुल मिलाकर, हमने पूर्व में कहे श्रावण, भाद्र और आश्विन में से भाद्रमास को कुण्डली परीक्षण के लिए चुना।

भाद्र मास में जब हमने ज्वालादत्त जी के प्रमाण से **(मूलेनासो जननविषये शङ्करापरेण)** मूल नक्षत्र को टटोला तो यह देखकर हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि उस दिन नवमी भी थी और भाद्र शुक्ल नवमी के साथ मूल नक्षत्र का योग का भी। यह दिन निकला १९/२० सितंबर १८२५ ईस्वी का। अब जब उस दिन के ग्रह विस्थापन को देखा तो धनु राशि में चन्द्रमा, कन्या राशि में सूर्य, बृहस्पति,मंगल और बुध सिंह राशि में, शुक्र कर्क एवं शनि मिथुन राशि में और राहु व केतु क्रमशः वृश्चिक और वृषभ राशि में मिले। मुझे हैरानी तब और भी अधिक हुई जबकि महर्षि कि यह कुण्डली उनकी प्रचलित कुण्डली बन जाती है। इस प्रकार स्वामी जी की जन्मतिथि की स्थिति बहुत ही स्पष्ट हो जाती है और वह है भाद्र शुक्ल नवमी वि. संवत् १८८१ (कार्तिकीय)। इस प्रकार से हमने महर्षि की जन्म तिथि (दि. १९/२० सितंबर, १८२५ ई.) का स्पष्टीकरण गणितीय प्रमाण से भी सिद्ध कर दिया है।

सत्य को स्वीकारने अथवा ठुकराने के लिए आप सब स्वतन्त्र हैं किन्तु मेरा सत्य तो यही है। ओ३म्। शान्तिः।

महर्षि का स्वहस्त लिखित यह जन्म चरित्र पहले पहल परोपकारिणी सभा के संयुक्त मन्त्री डा. भवानी लाल भारतीय ने परोपकारी पत्र के मार्च, १९७५ ई. के अङ्क में प्रकाशित किया था। बाद में इसे उन्होंने पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया था। निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित दयानन्द ग्रन्थ माला में भी यह प्रकाशित है। प्राप्त जानकारी के अनुसार २०१९ में यह जन्म चरित्र ***'सर्व कल्याण धर्मार्थ न्यास'***, *पानीपत ने भी महर्षि दयानन्द कृत लघुग्रन्थ संग्रह में प्रकाशित किया है।* ■

राष्ट्रवाद पर दयानन्द का प्रखर चिन्तन

● **डॉ. विवेक आर्य**
शिशुरोग विशेषज्ञ, वात्सल्य मल्टीस्पेशलिटी सेंटर
१४६६-ए, सैनी मोहल्ला, नजफगढ़
दिल्ली-११००४३
चलभाष : ९३१०६७१०१०

अंग्रेजी राज में भारतीयों का स्वाभिमान लुप्त हो गया था। स्वदेशवासी स्वदेशवासियों पर अत्याचार करने पर उतारू था। स्वामी दयानन्द ने सर्वप्रथम देशवासियों को मनुष्य बनने की प्रेरणा दी। स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्य की परिभाषा करते हुए लिखते हैं- 'मनुष्य उसी को कहना कि मनन-शील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हो। उनकी रक्षा, उन्नति, प्रिय आचरण, और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जावें परन्तु इस मनुष्य रूपी धर्म से पृथक् कभी न होवे।'

स्वामी दयानन्द ने स्वदेशीय राज्य सर्वोपरि और उत्तम बताया। उन्होंने लिखा- 'अब अभागोदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय भारत इस समय नहीं है। जो कुछ है सो कुछ भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राज्य स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार से दुःख भोगने पड़ते हैं। कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।' विदेशियों का राज्य कभी भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। स्वामीजी लिखते हैं कि जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादव का सत्यानाश हो गया। परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डुबा मारेगा? (सत्यार्थ प्रकाश)

पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात झूठी है। परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लौह रूपी दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश)। आर्यों के राज्य के लाभों को गिनाते हुए स्वामीजी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि- 'एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर हजार छह सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है। वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दें।'

स्वामीजी भारतीयों को यूरोपियन का स्वदेश प्रेम सिखाते हुए लिखते हैं- 'देखो यूरोपियन अपने देश के बने हुए जूते को कचहरी और कार्यालय में जाने देते हैं, इस देश के जूते नहीं। इतने ही में समझ लो कि अपने देश के बने जूतों की भी जितनी मान प्रतिष्ठा करते हैं, उतनी भी अन्य देशस्थ मनुष्यों की नहीं करते।' 'देखो, सौ वर्ष से कुछ ऊपर इस देश में आए यूरोपियनों को हुए, और आज तक ये लोग मोटे कपड़े आदि पहनते हैं। जैसा कि अपने स्वदेश में पहनते थे, परन्तु उन्होंने अपना चाल-चलन नहीं छोड़ा और तुम में से बहुत लोगों ने उनका अनुसरण कर लिया। इसी से तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान ठहरते हैं।'

स्वामीजी १८७७ में एकता परिषद् के प्रस्ताव में कहते हैं- 'हम भारतवासी सब परस्पर एकमत होकर ही रीति से देश का सुधार करें तो आशा है भारत देश सुधर जाएगा। किन्तु कतिपय मौलिक मंतव्य में मतभेद होने के कारण सब एकता सूत्र में आबद्ध नहीं हो सके।'

स्वदेशी भाषा को एकता का सूत्र मानने वाले स्वामी दयानन्द से जब वेदों का अन्य भाषा में अनुवाद रूपी प्रश्न पूछा गया तो स्वामीजी कहते हैं- 'अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है। नागरी के अक्षर थोड़े दिनों में सीखे जा सकते हैं। आर्य भाषा का सीखना कोई कठिन काम नहीं। फारसी और अरबी के शब्दों को छोड़कर, ब्रह्मावर्त की सभ्य भाषा ही आर्यभाषा है। यह अति कोमल और सुगम है। जो इस देश में उत्पन्न होकर अपनी भाषा को सीखने में कोई भी परिश्रम नहीं करता, उससे और आशा क्या की जा सकती है? उसमें धर्म लग्न है, इसका भी क्या प्रमाण है? आप तो अनुवाद की सम्मति देते हैं परन्तु दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त में भाषा का एक्य सम्पादन करने के लिए ही अपने सकल ग्रन्थ आर्यभाषा में लिखे और सम्पादित किये हैं।'

स्वामीजी का मूल चिन्तन वेदों पर आधारित था। वेदों में अनेक मन्त्रों में राष्ट्र एकता एवं स्वाधीनता का सन्देश मिलता है।

वेदों में स्वदेशी राज्य का सन्देश- 'मनुष्यों को चाहिए कि पुरुषार्थ करने से पराधीनता छुड़ाके स्वाधीनता को निरन्तर स्वीकार करें।' 'इस संसार में किसी मनुष्यों को विद्या के प्रकाश का अभ्यास, अपनी स्वतन्त्रता और सब प्रकार से अपने कामों की उन्नति को ना छोड़ना चाहिए।' 'राजपुरुषों को योग्य है कि भोजन, वस्त्र और खाने-पीने के पदार्थों से शरीर के बल को उन्नति देवें, किन्तु व्यभिचार आदि दोषों में कभी प्रवृत्त न होवें।' 'जिस देश में पूर्ण विद्या वाले राज कर्मचारी हों वहाँ सबकी एक मती होकर अत्यन्त सुख बढ़े।' -यजुर्वेद

'राजा प्रजाजनों को चाहिए कि विद्वानों की सभा में जाकर नित्य उपदेश सुनें जिससे सब करने और न करने योग्य विषयों का बोध हो।' -ऋग्वेद १/४७/१०

लाला लाजपतराय ने स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवाद रूपी चिन्तन पर गम्भीर एवं अति महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए अपनी पुस्तक आर्यसमाज में लिखा है- 'स्वामी दयानन्द का एक-एक शब्द चाहे उसे सत्यार्थ प्रकाश में पढ़िए, चाहे आर्याभिविनय में अवलोकन कीजिये, चाहे वेद भाष्य में देखिये, राजनीतिक स्वाधीनता की अभिलाषा से परिपूर्ण है। स्वामी दयानन्द पूर्ण देशभक्त थे और जब कभी इस देश की स्वाधीनता का इतिहास लिखा जाएगा तो स्वामी जी का नाम उन महापुरुषों की प्रथम श्रेणी में अंकित होगा। जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी में इस देश को स्वतन्त्र करवाने की नींव डाली।' यही १९४७ के पश्चात् वेदों पर आधारित और स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित एकता का सन्देश हमारे संविधान में अपनाया जाता तो आज हमारे देश में जितनी भी समस्याएँ हैं, जैसे भाषावाद, प्रान्तवाद, मतवाद, परम्परावाद, जातिवाद, क्षेत्रीयवाद आदि का निराकरण कब का हो गया होता। स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवाद रूपी चिन्तन को अपनाया जाना चाहिए जिससे भारत देश फिर से संसार में शिरोमणि कहला सके। क्योंकि मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने-कराने के लिए है न कि वाद-विवाद विरोध करने-कराने के लिए। ■

घर पर रहने वाले वृद्ध व्यक्ति क्या कर सकते हैं?

• सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास
बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९९२६७६११४३

'सुन्दर' स्वस्थ रहने को सूर्य उदय से पहले उठे, करें व्यायाम।
नित्य क्रिया से निवृत्त, भजे ओ३म्, ईष्ट आठों याम।।१।।

'सुन्दर' रोज करे स्वाध्याय सद्ग्रंथों का, वैदिक धर्म है सूर्य प्रकाश।
कम बोलें, काम का बोलें, निज घर सहकारिता सहयोग खास।।२।।

'सुन्दर' घर मोहल्ले में आये गोवंश, देवे रोटी उठाये गोबर।
छत पर छोटे कंडे बनायें, उपयोग में आये घर।।३।।

'सुन्दर' गिलोय तुलसी अश्वगंधा सहजिना तुलसी जो भी मिले पास।
सबको संग्रह कर कूट पीस, हवन सामग्री बने खास।।४।।

'सुन्दर' छत पर पक्षियों को पेयजल, चूगा डालें रोज।
ईशकृति से करें प्यार, जागे करुणा बने राजा भोज।।५।।

'सुन्दर' बाल वाटिका गमले में, पालक मैथी एलोवेरा सब्जी करें तैयार।
शुद्ध जैविक, खाये बाबत करें नित्य मने त्योहार।।६।।

'सुन्दर' छोटे बच्चों को पास बैठा, संत शहीद समाज सुधारकों का।
जीवन चारित्र, दादी माँ के नुस्खे, कथा कहानी हो ज्ञान का।।७।।

'सुन्दर' अच्छे संस्कार देवें बच्चों को, गीली मिट्टी के मान चाहे गढ़ें खिलौने।
लेख कविता रचना अध्यात्म पर लिखें मूल्यवान समय न खोवें।।८।।

'सुन्दर' अपना काम स्वयं करें, कपड़े धोना प्रेस, स्वच्छता से हो प्यार।
दूसरों की सेवा पर निर्भर न रहें, परिजनों का बने न भार।।९।।

'सुन्दर' स्तुति निंदा करें, न सुने, न फूले न कुम्हलाये मित्रवर।
मोह माया से परे वैराग्य वृत्ति हो, ईश निराकार से प्यार।।१०।।

'सुन्दर' जग में ज्ञान कर्म भक्ति, सत्संग स्वाध्याय हो परोपकार।
दीन दुखी मोहताज बिमार दिव्यांगों की सेवा कर, बने सरल उदार।।११।।

'सुन्दर' सादा जीवन उच्च विचार, आर्य संस्कृत में है सदाचार।
धनबल जनबल बुद्धि हो अपार, ईश भक्ति बिना सब बेकार।।१२।।

'सुन्दर' समय का सदुपयोग करो, संत शूरमा दानी सा काम करो।
प्रेरणादायी जीवन हो, दुनिया देश का सदा शृंगार करो।।१३।।

'सुन्दर' व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र हित सोलह है संस्कार।
पंचयज्ञ दस नियमों पर चल, जीवन में पढ़ लें वेद चार।।१४।।

'सुन्दर' अपने अनुभव सुविचार सत्संग सार नित्य लिखें डायरी मित्रवर।
सरल सादगी शाकाहारी, गोसेवा आर्य संस्कृति से कर प्यार।।१५।।

'सुन्दर' मोबाइल, टीवी, परिजनों से करें न ज्यादा मेल।
जुआ, शराब, सट्टा, झूठ, चोरी, असत्य छोड़ दुनिया के खेल।।१६।।

'सुन्दर' नेक गुरु से ले दीक्षा, तू पढ़ रोज नैतिक शिक्षा।
भले ही माँगना पढ़े भिक्षा, किन्तु भौतिक सुखों से हो उपेक्षा।।१७।।

'सुन्दर' पंचविकार पंचक्लेश, अभाव आसक्ति और अज्ञान।
इन सबकी चिंता मत कर, तू पा केवल आत्मज्ञान।।१८।।

'सुन्दर' मैं कौन हूँ, कहाँ से आया, क्या करना और जान भगवान।
जीने का उद्देश्य हल हो गया, यही है आत्म सम्मान।।१९।।

'सुन्दर' चाहे व्यापारी मजदूर, कर्मचारी या हो किसान।
नेता, अभिनेता, सांसद, विधायक, मंत्री पर बन नेक इंसान।।२०।।

'सुन्दर' लिवाश हो फैशन परस्ती, दिखावा मान बढ़ाई कठिन चढ़ाई।
अपने दायरे में रह देखादेखी मत कर, तू तला जाये तेल कढ़ाई।।२१।।

'सुन्दर' पर्यावरण पानी रोको, ऋषि खेती, गो सम्बन्ध हो स्वच्छता अभियान।
धरती का शृंगार करो सुखी हो, पशु-पक्षी प्राणी हे मनुज बन महान्।।२२।।

'सुन्दर' सम्पत्ति संबंधी संस्कार, तीनों कर विचार।
जीवन में सुसंस्कार ही पूजते हैं, देख शास्त्रों का सार।।२३।।

'सुन्दर' जैसी संगत वैसी रंगत, जैसा अन्न वैसा मन।
जैसा पानी वैसी वाणी, जैसे नेक कमाई का धन।।२४।।

'सुन्दर' फुर्सत में बनाये देहाती सुलभ जड़ी बूटी नुस्खे भाई।
दीन दुखी बीमारों को, नि:शुल्क दे करे भलाई।।२५।।

'सुन्दर' हफ्ते में एक दिन एक घंटा, बाल संस्कार शाला चलाये।
भारतीय संस्कृति संत, शहीद, समाज सुधारकों का जीवन चरित्र पढ़ायें।।२६।।

'सुन्दर' सत्य साहित्य संग्रह करो, जिज्ञासुओं को दिलाओ लाभ।
वाचनालय द्वारा सत्य विचार फैलाओ, जानकी चले नाव।।२७।।

'सुन्दर' अपनी प्रतिभा का करें नियोजन, समाज सेवा महान्।
एक दिन तन छूट जायेगा, ईश कृपा से हो जाओ कीर्तिमान।।२८।।

'सुन्दर' भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, मात-पिता, गुरु हो सेवा।
अतिथि भी भूखा न जाये, तो परलोक मिले प्रभु मेवा।।२९।।

'सुन्दर' हाड़ बड़ा हरि भजन करें, द्रव्य बड़ा कुछ देय।
अकल बड़ी उपकार करें, जीवन का फल लेय।।३०।।■

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कलकत्ता आगमन के १५० वर्ष पूर्ण होने पर १५० प्रसंग

• आचार्य राहुलदेव आर्य
धर्माचार्य आर्य समाज, बड़ा बाजार, कोलकाता (प.बंगाल)
चलभाष : ९६८१८४१४११

(गतांक पृष्ठ ३२ से आगे)

८१. 'इण्डियन मिरर' पत्रिका के सम्पादक, विभिन्न अंग्रेजी ग्रंथों के लेखक, विख्यात वक्ता, जिन्होंने शिकागो के धर्म सम्मेलन में ब्रह्मसमाज का प्रतिनिधित्व किया था प्रतापचंद्र मजूमदार ने भी स्वामी जी से मुलाकात की थी।

८२. ब्रह्मसमाज के नेता, स्त्री शिक्षा के समर्थक, प्रसिद्ध कवि, महिला विद्यालय और भारत सभा के संस्थापक **'अबला बांधव'** पत्रिका के संस्थापक द्वारकानाथ गांगुली ने भी स्वामी जी के साथ अनेक विषयों पर संवाद किया था।

८३. निपुण चिकित्सक, ४० से अधिक संस्कृत ग्रंथों के लेखक, मुक्त बोध व्याकरण और चरक संहिता पर विस्तृत टीका लिखने वाले गंगाधर कविराज भी स्वामी जी की कीर्ति सुनकर उनसे भेंट किए थे।

८४. २१ जनवरी १८७३ को ब्रह्मसमाज के उत्सव पर महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के सुपुत्र द्विजेन्द्रनाथ और पंडित हेमचंद्र चक्रवर्ती स्वामी जी को जोड़ासाँको स्थित उनके घर पर ले गए थे। जहाँ स्वामी जी ने धर्म उपदेश किया था।

८५. महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने स्वामी जी से अपने घर में रहने का निवेदन किया था स्वामी जी ने उत्तर दिया कि वे गृहस्थ के मकान पर नहीं रहते हैं।

८६. महर्षि देवेन्द्र ठाकुर के मकान में एक मण्डप था जिसमें चारों ओर संस्कृत के श्लोक थे स्वामी जी ने उसे देखकर प्रसन्नता व्यक्त की थी।

८७. देवेन्द्र ठाकुर के घर पर उनके पुत्रों से वेदमंत्र सुनकर स्वामी जी अति प्रसन्न हुए थे।

८८. ब्रह्मसमाज के नेता स्वामी जी से मिले, जिसमें ब्रह्मसमाज और वेद विषय पर तर्क-वितर्क हुआ था।

८९. ३१ जनवरी १८७३ ई. को स्वामी जी मुर्शिदाबाद गए थे।

९०. १ से २१ फरवरी १८७३ ई. तक स्वामी जी ने लोगों के मेल मिलाप से दूर बालूचर में एक व्यक्ति के उद्यान में पृथक् एकांतवास किया था।

९१. प्रमोद कानन में महर्षि देवेन्द्रनाथ का चित्र देखकर स्वामी जी ने कहा था उनका स्वाभाविक अनुराग ऋषि श्रेणी की ओर है।

९२. २२ फरवरी १८७३ ई. को केशवचन्द्र सेन ने गोराचंद के घर पर स्वामी जी का व्याख्यान कराया था। यहाँ पर महेशचंद्र न्यायरत्न भी उपस्थित थे। यहीं पर उन्होंने स्वामी जी के संस्कृत में दिये व्याख्यान का अनुवाद छात्रों को विपरीत अर्थ में बताया था।

९३. २४ फरवरी १८७३ ई. को केशवचन्द्र सेन आदि ने ब्रह्मसमाज में स्वामी जी का व्याख्यान करवाया था।

९४. केशवचन्द्र सेन ने बेहाला, खिदिरपुर और काशीपुर में स्वामी जी के व्याख्यान करवाए थे। जहाँ धर्म विषय पर व्याख्यान हुआ था।

९५. २ मार्च १८७३ को राजा सौरेंद्र मोहन आश्रित **'सोमप्रकाश'** नामक समाचार पत्र में छपा था कि जैसे शंकराचार्य ने दिग्विजय करके अद्वैत को स्थापित करके महान् उपकार किया था। वैसे स्वामी दयानन्द का उद्देश्य है कि नहीं, कह नहीं सकते किन्तु उनके विचारों से लगता है कि वह अपना पाण्डित्य प्रदर्शन कर प्रसिद्धि चाहते हैं।

९६. स्वामी जी के समर्थकों ने **'सोमप्रकाश'** अखबार में स्वामी जी के विरुद्ध प्रकाशित लेख का जवाब भेजा था। किन्तु **'सोमप्रकाश'** वालों ने छपने से मना कर दिया था। तब ढाका से निकालने वाले **'हिन्दू हितैषी'** पत्र में उसका जवाब छपा था।

९७. कलकत्ता आने पर सर्वप्रथम स्वामी जी जिस राजा सौरेंद्र मोहन के प्रमोद कानन उद्यान में ठहरे थे। वे स्वामी जी से प्रसन्न नहीं थे।

९८. राजा सौरेंद्र मोहन गान विद्या के आचार्य समझे जाते थे। स्वर की उत्पत्ति पर स्वामी जी से प्रश्न किए स्वामी जी ने बताया पर उन्हें समझ में नहीं आया फिर वे रुष्ट होकर चले गए।

९९. २ मार्च १८७३ ई. को बड़ानगर बोरोन्यू कंपनी के हॉल में स्वामी जी का हवन के लाभ पर व्याख्यान हुआ था।

१००. ९ मार्च १८७३ ई. को बरहागौर स्कूल में स्वामी जी का व्याख्यान हुआ था। जिसका समाचार अंग्रेजी दैनिक **'इण्डियन मिरर'** में १५ मार्च को बड़े विस्तृत रुप में छपा था।

१०१. स्वामी जी ने कलकत्ता में विशिष्टजनों को दिए व्याख्यान में यह भी कहा था कि वेद अध्ययन के बिना संस्कृत शिक्षा से कोई लाभ नहीं है।

१०२. स्वामी जी ने यह भी कहा कि संस्कृत के नाम से पुराण पढ़ाने का कोई लाभ नहीं है क्योंकि पुराणों की शिक्षा से लोग व्यभिचारी हो जाते हैं। वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं।

१०३. मार्च १८७३ ई. में बाबू प्रसन्नकुमार ठाकुर ने मुलाजोड़ में एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की थी। स्वामी जी वहाँ पर भी गए थे और यह प्रस्ताव दिया था कि यहाँ वेद पढ़ाया जाए।

१०४. एक दिन स्वामी जी ने बलदेव प्रसाद से कहा था कि **'रईसों के लड़के तो फारसी व अंग्रेजी ने ले लिए, दरिद्रों के लड़के संस्कृत के लिए रह गए।'** स्वामी जी ने संकल्प लिया कि अब हम वेद व्याख्यान पर और बल दिया करेंगे और वेद भाष्य करेंगे।

१०५. ब्रह्मसमाज और स्वामी जी के सिद्धांत कई अंशों में मिलते थे मुख्य भेद यही था कि ब्रह्मसमाज वेदों को ईश्वर कृत और आवागमन के सिद्धान्त को नहीं मानते थे।

१०६. **'इंडियन मिरर'** में यह छपा था कि गत रविवार को पंडित दयानन्द सरस्वती की वक्तृता सुनने के लिए लगभग ४०० पुरुष एकत्रित हुए थे। वह बिना किसी तैयारी के २ घंटे तक ईश्वर के एकत्व, गुणों और धर्म के लक्षणों पर बोले।

१०७. गोराचंद के मकान में दिए व्याख्यान में स्वामी जी ने कहा था कि हिन्दू नाम से हमारा परिचय होना हमारे अवमानना का विषय है। अरब के लोग

काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी और यवनों ने हमें यह नाम दिया है।

१०८. स्वामी जी ने इसी व्याख्यान में बहु देवतावाद होने का खण्डन किया था। पं महेशचंद्र न्यायरत्न ने प्रतिवाद किया था। इसीपर पर स्वामी जी से उनका शास्त्रार्थ होने लगा था।

१०९. १३ मार्च १८७३ ई. को लक्ष्मीनारायण गोस्वामी के साथ स्वामी जी की नवद्वीप यात्रा एवं वेद प्रचार।

११०. १४ मार्च को नवदीप बाजार में स्वामी जी का व्याख्यान हुआ था।

१११. २५ मार्च को गंगातीर में स्वामी जी की सभा हुई थी।

११२. नवद्वीप में ऐसी अफवाह उड़ाई गई कि जर्मन से मैक्समूलर सन्यासी का वेश धारण करके आया है। सबको इसाई बना रहा है।

११३. नवद्वीप में लक्ष्मीनारायण को भी बड़ा अपमान सहना पड़ा था।

११४. नवद्वीप में इसके बावजूद कोई भी पण्डित शास्त्रार्थ के लिए उद्यत न हुआ था।

११५. पं हेमचन्द्र चक्रवर्ती नवद्वीप जाकर फिर से स्वामी जी से मिले थे।

११६. पं हेमचन्द्र चक्रवर्ती १९ मार्च १८७३ ई. को नवद्वीप से स्वामी जी को लेकर बाराह नगर गए थे।

११७. १ अप्रैल को भूदेव मुखोपाध्याय के साथ स्वामी जी बाराह नगर से हुगली के लिए प्रस्थान किए थे।

११८. हुगली में वृन्दावनचंद्र मंडल के गृह उद्यान में स्वामी जी के भोजन एवं आवास की व्यवस्था की गई थी।

११९. हुगली के वृन्दावनचंद्र के घर पर स्वामी जी की संस्कृत में वक्तृता हुई थी।

१२०. हुगली में रेवरेंडलाल बिहारी डे के साथ स्वामी जी का शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें रेवरेंड पराजित हुए थे।

१२१. ६ अप्रैल को साहित्यकार अक्षयचन्द्र सरकार, भूदेव मुखोपाध्याय और भट्टपल्ली पण्डितों के सम्मुख स्वामी जी का संस्कृत में व्याख्यान हुआ था।

१२२. ९-१२ अप्रैल १८७३ ई. तक भूदेव मुखोपाध्याय स्वामी जी को हुगली के विभिन्न स्थानों पर ले गए थे।

१२३. भट पल्ली, भाटपाड़ा ग्राम के निवासी, जो हुगली में पड़ता है। पं ताराचरण तर्करत्न ने कई बार स्वामी जी से शास्त्रार्थ की प्रतिज्ञा की। परन्तु एक बार भी शास्त्रार्थ करने न आए।

१२४. स्वामी जी के कलकत्ता के प्रवास में ताराचरण तर्करत्न भी हुगली में ही अपने गांव में थे जो बाद में काशी चले गए थे।

१२५. पूना प्रवचन के अपने व्याख्यान में पं ताराचरण तर्करत्न को स्वामी जी ने स्मरण किया था और कहा था कि वह दूसरे के सामने हमें पराजित करने का दम भरते रहे और शास्त्रार्थ के लिए एक बार भी सम्मुख ना आ सके।

१२६. पं ताराचंद तर्करत्न उर्फ तारानाथ तर्कवाचस्पति भट्टाचार्य काशी नरेश की सभा के पण्डित थे।

१२७. हुगली में स्वामी दयानन्द लगभग १२ से १३ दिन रहे। पर ताराचरण तर्करत्न कभी भी स्वामी जी से मिलने तक ना आए।

१२८. १३ अप्रैल को स्वामी जी दिल्ली से वर्धमान के लिए प्रस्थान किए।

१२९. वर्धमान में राजा वन बिहारी कपूर ने स्वामी जी के भोजन और आवास की व्यवस्था राजमहल के उद्यान में की थी।

१३०. १४ से १५ अप्रैल १८७३ ई. को वर्धमान राजबाड़ी में स्वामी जी का व्याख्यान हुआ था। जिसमें राजा महोदय स्वयं धर्मोपदेश सुनने के लिए नियमित आते थे। किन्तु वे भी उदासीन ही थे।

१३१. कलकत्ता अंग्रेजों के भारतीय साम्राज्य की राजधानी थी विद्वान् समाज सुधारक संपन्न लोगों का अच्छा बड़ा प्रतिशत यहाँ रहता था इसलिए स्वामी जी ने बड़े वेद प्रचार एवं वेद विद्यालय की स्थापना के उद्देश्य से कलकत्ता आने का विचार किया था।

१३२. यद्यपि स्वामी जी के आने से पहले राजा राममोहन राय का सुधारवादी आंदोलन ५० वर्ष से क्रियाशील था। परन्तु उनमें भी वेदों के प्रति उदासीनता थी। अतः स्वामी जी कलकत्ता आए थे।

१३३. कलकत्ता का लेखन, यहाँ की पत्रकारिता को स्वामी जी ने निकटता से देखा था। गणमान्य लोगों के साथ मिलने से उनके विचारों को भी गतिशीलता प्राप्त हुई थी।

१३४. विद्वानों का ऐसा मत है कि स्वामी दयानन्द ने कलकत्ता प्रवास के बाद महत्वपूर्ण लेखन कार्य आरम्भ किए थे। अपने प्रचार-प्रसार को भी नयापन प्रदान किया था।

१३५. कलकत्ता प्रवास के बाद स्वामी जी के व्याख्यान आर्य भाषा में होने लगे थे। जिससे जनमानस को समझने में सुविधा होने लगी थी।

१३६. कलकत्ता में बुद्धिजीवियों की अधिकता थी अंग्रेजी के साथ संस्कृत के भी कई अच्छे केन्द्र थे।

१३७. स्वामी जी ने देखा था, यहाँ पर **एशियाटिक सोसायटी** है, संस्कृत कॉलेज है, प्रेसिडेंसी है अनेक कुछ है। परन्तु वेदों को पढ़ने-पढ़ाने का कोई उपक्रम नहीं है।

१३८. स्वामी जी का यह मत था कि ब्रह्मसमाज जैसा सुधारवादी समाज यदि वेद को मानकर उनका सहयोग करता है तो वेद के प्रचार को विस्तृत बल मिलेगा।

१३९. स्वामी दयानन्द इसी उद्देश्य से ब्रह्मसमाज के माधव उत्सव में महर्षि देवेंद्रनाथ ठाकुर जी के घर पधारे एवं सभी ब्रह्मसमाज के नेताओं से मिले थे।

१४०. स्वामी दयानन्द का उद्देश्य बंगाल के बुद्धिजीवी वर्ग में वेदों के प्रति उदासीनता को दूर करना था।

१४१. स्वामी दयानन्द चाहते थे कि बंगाल में जितने भी संस्कृत के केन्द्र हैं। वे केवल सामान्य व्याकरण और कौमुदी पर न रहें। आगे बढ़कर वेदों का पठन-पाठन भी करें।

१४२. स्वामी जी को इस बात की पीड़ा थी कि बंगाल का जो प्रबुद्ध वर्ग है खासकर जो अंग्रेजी पढ़ता है वह अंग्रेज़ी के निकट होने से संस्कृत भाषा प्राचीन संस्कृति से दूर है।

१४३. स्वामी दयानन्द बंगाल में प्राचीन शिक्षा अर्थात् वेदों की शिक्षा के साथ आधुनिक विकास कला-कौशल का समन्वय चाहते थे।

१४४. ब्रह्मसमाज की पत्रिका **'धर्म तत्व'** में १ चैत्र १७९४ शके अंक में स्वामी दयानन्द के विषय में लिखा था कि **'प्रसिद्ध दयानन्द सरस्वती कलकत्ता आए हैं, हिंदू शास्त्र में उनका निश्चल अधिकार है। वे मूर्तिपूजक नहीं हैं और अद्वैतवादी भी नहीं है। जीवात्मा और परमात्मा को भिन्न-भिन्न मानते हैं। वे निराकार ईश्वर की उपासना करते हैं।'**

१४५. स्वामी जी कलकत्ता में भी वस्त्र धारण नहीं करते थे परन्तु जब लोग उनसे बातचीत करते थे तो वे पैरों पर एक चादर या धोती डालते थे। उन्होंने वस्त्र धारण करना कलकत्ता की यात्रा से लौटने के बाद किया था।

१४६. बाबू मन्मथनाथ चौधरी बी.ए. एक परम ऋषि भक्त बंगाली युवक थे। वे स्वामीजी के उपदेश, उनके चरित्र, उनकी विद्वत्ता पर इतना मंत्रमुग्ध हुए थे कि कलकत्ता में अनेक स्थानों पर उनके साथ रहने लगे थे। वे कलकत्ता से हुगली भी गये थे।

१४७. मन्मथ नाथ बाबू ने देवेन्द्र मुखोपाध्याय (जीवन चरित्र लेखक) को

स्वामी जी के बारे में जो पत्र लिखा है वह सब को अवश्य पढ़ना चाहिए।

१४८. बाबू मन्मथ चौधरी लिखते हैं कि मुझे आश्चर्य है कि उन्हें गले का कैंसर क्यों नहीं हुआ? मैंने अपने जीवन में किसी और मनुष्य को नहीं देखा जो प्रतिदिन इतने घंटे, महीनों और वर्षों तक संस्कृत में बोलता और वाद-विवाद करता हो। मुझे विश्वास है कि उनका जन्म किसी विशेष उद्देश्य के लिए हुआ था।

१४९. बाबू मन्मथनाथ ने लिखा था कि कट्टर पण्डित लोग उनको नास्तिक कहते थे। परन्तु वे यदि नास्तिक थे तो मैं नहीं जानता कि आस्तिक कौन हैं? मैं स्वामी जी से अत्यन्त प्रेम करता हूँ। मुझे सदा यह पश्चाताप है कि मैंने नौकरी के लिए उनका सहवास त्याग दिया। मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ कि आप स्वामी जी का जीवन चरित्र लिख रहे हैं। क्योंकि मैं उनकी सदा पूजा करता हूँ।

१५०. बाबू मन्मथ चौधरी लिखते हैं कि यह भारतवर्ष का दुर्भाग्य है कि उनकी मृत्यु समय से पहले और संभवतः अनैसर्गिक हुई। उनका स्थान लेने के लिए कोई नहीं है। ऐसा भक्तिभावपूर्ण, संलग्नतापूर्ण और निःस्वार्थपूर्ण कोई नहीं है।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती के कलकत्ता प्रवास के १५० वर्ष पूर्ति पर हमने उनकी इस यात्रा से जुड़ी १५० जानकारी लिखी है। आशा है ऋषि भक्तों के लिये उपयोगी होगीं।

१६ अप्रैल १८७३ को स्वामी दयानन्द बंगाल में अपने चार माह पूर्ण करके वर्धमान से भागलपुर चले गए थे। स्वामी दयानन्द वेद विद्यालय की स्थापना के उद्देश्य से कलकत्ता आये थे। किन्तु आज भी १५० वर्षों में स्वामी जी का वही उद्देश्य हम आर्यों के लिए प्रासंगिक है। क्योंकि स्वामी दयानन्द का यह पूर्ण मत है वेदों के बिना कभी भी मनुष्य समाज सुखी नहीं रह सकता। इसलिए उन्होंने नारा दिया था **'आओ वेदों की ओर लौटें'** इसलिए आर्यों को स्वामी दयानन्द के स्वप्न को पूर्ण करने में सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। संसार भर के वेदप्रेमियों के लिये यही एक मिशन है। गीतकार ने बड़ी सुन्दर पंक्तियाँ लिखी है -

दयानन्द देव वेदों का उजाला लेके आये थे।
करों में ओ३म् की पावन पताका लेके आये थे।। ■

गतांक पृष्ठ ३३ से आगे

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

● ई. चन्द्रप्रकाश महाजन
प्रधान : आर्य समाज नूरपुर, जसूर (हि.प्र.)
चलभाष : ८६२७०४१०४४, ९४१८००८०४४

१४. सरल भाषा में आर्योद्देश्य रत्न माला (सन् १८७७)

स्वामी दयानन्दजी ने १०० मन्तव्यों को लेकर उनका अभिप्राय समझाया है अर्थात् १०० नियमों रूपी रत्नों की माला गूंथी गई है। धर्म और व्यवहार में आने वाले इन शब्दों एवं नियमों का सच्चा और वास्तविक अर्थ समझकर व्यक्ति भटकने से बच जाता है। इसमें आर्य सिद्धान्तों को सरल भाषा में लिखा गया है। मनुष्यों के हितार्थ यह पुस्तक (आर्योद्देश्य माला) प्रकाशित की है।

कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं :-

१. **पुण्य** : जिसका स्वरूप विद्यादि, शुभगुणों का दान और सत्याभाषणादि, सत्याचरण का करना है, उसको **''पुण्य''** कहते हैं।
२. **पाप** : जो पुण्य से उल्टा करना उसे पाप कहते हैं।
३. **जन्म** : जिसमें किसी शरीर के साथ संयुक्त हो के जीव कर्म करने में समर्थ होता है उसको जन्म कहते हैं।
४. **मरण** : जिस शरीर को प्राप्त होकर जीव क्रिया करता है, उस शरीर और जीव का किसी काल में जो वियोग हो जाता है, उसको ''मरण'' कहते हैं।
५. **स्वर्ग** : जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव प्राप्त होता है उसे ''स्वर्ग'' कहते हैं।
६. **नरक** : जो विशेष दु:ख और दु:ख की सामग्री को जीव प्राप्त होता है उसको नरक कहते हैं।
७. **स्तुति** : जो ईश्वर या किसी दूसरे पदार्थ के गुण-ज्ञान का कथन-श्रवण और सत्यभाषण करता है वह स्तुति कहलाती है।
८. **प्रार्थना का फल** : अभिमान का नाश, आत्मा में विनम्रता, गुणग्रहण में पुरुषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना **''प्रार्थना का फल''** है।
९. **कर्त्ता** : जो स्वतन्त्रता से कर्मों का करने वाला है, अर्थात् जिसके स्वाधीन सब साधन होते हैं वह कर्त्ता कहलाता है।
१०. **स्तुति का फल** : जो गुणगान आदि के करने से गुणवाले पदार्थों में प्रीति होती है, वह **''स्तुति का फल''** कहलाता है।
११. **मनुष्य** : जो विचार के बिना किसी काम को न करे उसका नाम मनुष्य है।
१२. **आर्य** : जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यवादी, गुणयुक्त और आर्यावर्त देश में रहने वाला हो उसे आर्य कहते हैं।
१३. **कर्म** : जो मन, इन्द्रियाँ और शरीर से जीव चेष्टा विशेष करता है वह **''कर्म''** कहलाता है।
१४. **आचार्य** : जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण करके सब विद्याओं को पढ़ा दे उसको आचार्य कहते हैं।
१५. **पूजा** : ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना।
१६. **मूर्ख** : जो अज्ञान, हठ, दोष सहित है उसे **''मूर्ख''** कहते हैं।
१७. **जड़** : जो वस्तु ज्ञानादि गुणों से रहित है, उसे **''जड़''** कहते हैं।
१८. **चेतन** : जो पदार्थ ज्ञानादि गुणों से युक्त हैं, उसे चेतन कहते हैं।
१९. **पण्डित** : जो सत्-असत् को विवेक से जानने वाला हो उसे **''पण्डित कहते हैं।''**
२०. **सम्भव** : जो बात प्रमाण युक्ति और सृष्टिक्रम के अनुकूल हो, वह **''सम्भव''** कहलाता है।
२१. **नमस्ते** : मैं तुम्हारा मान्य करता हूँ।

पं. लेखरामजी के अनुसार यह पुस्तक इस प्रयोजन से लिखी गई थी कि जब स्वामीजी उपदेश करते थे तो लोग उनसे **''आर्य सिद्धान्त''** पूछा करते थे, उनकी सरल भाषा की पुस्तक माँगा करते थे। एक सरल व स्पष्ट पुस्तक नहीं होने के कारण प्राय: समय नष्ट करना पड़ता था। इस कारण दयानन्दजी ने इस कठिनाई को दूर करने के लिए अपने अमृतसर निवास के समय इसे प्रकाशित करवाया था।

(क्रमश:) ■

धर्म सरिता (भाग-६)

● रमेशचन्द्र भाट
कवि, लेखक, समाजसेवी एवं
से.नि. तकनीकी अधिकारी, परमाणु ऊर्जा विभाग
पसन्द नगर, कोटड़ा, अजमेर (राजस्थान)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

बौद्ध मतः ३०२७ वर्ष पूर्व कपिलवस्तु में शाक्यवंशी राजकुमार गौतम का जन्म हुआ। नगर भ्रमण के दौरान भिखारी, बीमार व वृद्ध के कष्टों को देखकर, कष्टों से मुक्ति पाने की लालसा ने इनके मन में वैराग्य उत्पन्न कर दिया और वे राजमहल के सुख, पत्नी और छोटे बेटे को छोड़कर तपस्या करने चल पड़े।तप करने से शरीर तो कमजोर हो गया पर मन को शान्ति नहीं मिली। एक दिन एक पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न बैठे-बैठे इनके मन में विचार आया कि भोग-विलास में भी सुख नहीं है व कठोर तपस्या करने में भी सुख नहीं है। यानि वीणा के तारों को ढीला छोड़ने पर भी सुर नहीं निकलेंगे व ज्यादा कसने पर वो टूट जाते हैं। इसलिए मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए।

बुद्ध के प्रादुर्भाव का समय घोर धार्मिक अन्धकार का समय था। वैदिक वर्ण व्यवस्था जो आरम्भ में गुण कर्मानुसार थी बिगड़ कर वंश परम्परागत जाति भेद में परिवर्तित हो गई थी। ब्राह्मणों ने जन्म से ही अपने को बड़ा मानकर वेदाध्ययन व उसके सद्गुणों को त्याग दिया था। साधारण लोग भी लकीर के फकीर व विलासप्रिय हो गए थे। आर्यों के सात्विक आहार का स्थान मांसाहार ने ले लिया था। उसे शास्त्रोक्त सिद्ध करने के लिए यज्ञों में पशुओं का वध कर मांस की आहुति दी जाने लगी। बुद्ध ने यज्ञों में पशु-वध का कारण पूछा तो धर्माचार्यों ने कहा कि वेदों में ऐसा लिखा है। तब इन्होंने कहा कि वेदों में ऐसा लिखा है तो मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता। धर्माचार्यों ने कहा कि वेद तो ईश्वर की वाणी है तब इन्होंने कहा कि तो फिर मैं ऐसे ईश्वर को भी नहीं मानता। यदि महात्मा बुद्ध धर्माचार्यों की बातों पर विश्वास कर वेदों को पढ़कर सत्य अन्वेषण करते तो शायद ईश्वर के प्रति उनके मन में असमंजस की स्थिति नहीं रहती।

उस समय समाज में ऐसे परिव्राजक, साधु-संन्यासी थे जो संसार को त्याग कर वेदोक्त यज्ञादि ना करते हुए केवल ध्यान में अपना समय व्यतीत करते थे ऐसे साधुओं को भिक्षु और साधारणतया उन्हें श्रमण कहते थे। उस काल की अनेक श्रमण शाखाओं में से गौतमबुद्ध ने केवल एक श्रमण शाखा की स्थापना की जो **'शाक्यपुत्रीय श्रमण'** के नाम से जानी जाती है।

भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग का उपदेश दिया। आर्यसत्य की संकल्पना बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धान्त हैं। इसे संस्कृत में **'चत्वारि आर्यासत्यानी'** और पाली भाषा में **'चतरी अरियसच्चानी'** कहते हैं। इन चार आर्यसत्यों में बताया गया है कि प्राणी जन्मभर विभिन्न दुःखों की शृंखला में पड़ा रहता है, यह **'दुःख आर्यसत्य'** है। संसार के विषयों के प्रति तृष्णा ही **'समुदय आर्यसत्य'** (दुःख के कारण) है। जो प्राणी तृष्णा के साथ मरता है, वह फिर से जन्म ग्रहण करता है। इसलिए तृष्णा को समुदय आर्यसत्य बताया। तृष्णाओं का त्याग **'निरोध आर्यसत्य'** है। तृष्णा के न रहने से न तो संसार की वस्तुओं के कारण कोई दुःख होगा और न मरणोपरान्त उसका पुनर्जन्म होगा। बुझ गए दीपक की तरह उसका निर्वाण हो जाता है। इस निरोध की प्राप्ति का मार्ग **'आर्यसत्य आष्टांगिक'** मार्ग है। इसके आठ अंग है- सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, स्मृति और सम्यक् समाधि। इन आठ आर्य मार्ग को सिद्ध करके ही मुक्त हो सकते हैं।

उस समय समाज में मनुष्य मात्र की धार्मिक समानता के स्थान पर अन्यायपूर्ण जाति भेद फैल गया था। सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक सब बातों में इस जाति भेद की व्यापकता इतनी हो गई थी कि द्विज नामधारियों के लिए अलग व शूद्रों के लिए अलग नियम-कानून बन गए। ब्राह्मणों के ऊपर अत्यधिक उदारता तो शूद्रों के साथ अनुचित कठोर व्यवहार होने लगा। शूद्र कितने ही धार्मिक और गुणवान क्यों ना हो उन्हें धार्मिक शिक्षा देने का कोई प्रबन्ध नहीं था, न ही उनकी समाज में कोई प्रतिष्ठा थी। वे लोग इन बेड़ियों को तोड़ फेंकने का अवसर देख रहे थे। उच्च वर्ग के कुछ उदार प्रकृति के लोग भी इनसे सहानुभूति रखते थे। राजकुल में पैदा हुए एक क्षत्रिय ने जब कहा कि समाज में मनुष्य की स्थिति जन्म से नहीं अपितु गुणों से होती है तो अत्याचार से दुःखी असंख्य शूद्र लोग उत्साह से उनकी बातें सुनते व कई तथाकथित उच्च वर्ण के लोग भी उनके पवित्र धार्मिक उद्देश्य से सहमत होते गए और इस प्रकार बुद्ध के अनुयायी बढ़ने लगे।

महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का उद्देश्य किसी नवीन धर्म की स्थापना करना नहीं था। उन्होंने धर्म के नाम पर फैले कुछेक उन दूषणों का खण्डन किया जो असत्य सनातन वैदिक धर्म के अंग नहीं थे।उनके उपदेश वास्तव में उपनिषदों के ही उपदेश थे। उन्होंने संसार त्याग, विशुद्ध जीवन, पवित्र धार्मिक विचार आदि उन्हीं बातों की शिक्षा दी जिनका उस समय के श्रमण लोग उपदेश देते थे। इन्होंने मनुष्य मात्र में असमानता व यज्ञ के नाम पर निकृष्ट बलि प्रथा के कारण यज्ञ का भी विरोध किया। महात्मा बुद्ध ने 'क्या यह संसार अनादि है और अनन्त है? यदि नहीं तो उसकी उत्पत्ति किस प्रकार हुई?' ऐसे प्रश्नों का कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। बाद में बुद्ध के अनुयाइयों (बौद्धों) ने इस त्रुटि की यह कहकर पूर्ति करदी कि संसार जैसा कि अब है वैसा ही अनादि काल से चला आ रहा है, अतएव इसके लिए रचाने वले की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार उन्होंने अपने धर्म को विशुद्ध नास्तिक बना दिया। परन्तु महात्मा बुद्ध का यह मंतव्य नहीं था। बुद्ध के निर्वाण के बाद जब ईश्वर का मानना बन्द हो गया तो उनके अनुयाइयों ने बुद्ध की मूर्तियाँ बनाकर पूजना शुरू कर दिया। ■

क्रमशः (जैन मत, पौराणिक मत व अन्य मतों का उदय...)

सन्दर्भ पुस्तक : धर्म का आदि-स्रोत, प्रकाशक- आर्य साहित्य मंडल लिमिटेड, अजमेर व अंतर जाल के लेख।

होलकोत्सव अथवा होली

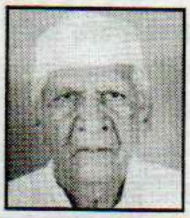

• **शिवनारायण उपाध्याय**

७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)

दूरभाष : ०७४४-२५०१७८५

चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से वैदिक मान्यता के अनुसार बसन्त ऋतु का आगमन होता है। बसन्त को ऋतुराज कहा जाता है। प्रकृति की सौन्दर्य की छँटा इस ऋतु में सम्पूर्ण संसार में परिलक्षित होती है। वेदों में चैत्र मास को मधु मास तथा वैशाख मास को माधव मास के नाम से सम्बोधित किया गया है। यजु. १३.२५ में कहा गया है- **'मधुश्चमावश्च वासन्तिका वृतूऽअग्नेरत:श्लेषाऽसि कल्पेतामं द्यावा पृथिवी कल्पन्तामापऽ ओषधय: कल्पन्तामग्नय: पृथङ्ममत्यैष्ठयाय सव्रता:।'** अर्थात् हे मनुष्यों! बसन्त ऋतु में नाना फल-फूल उत्पन्न होते हैं। इस ऋतु में सूर्य के प्रकाश में तेजी आने लगती है, पृथ्वी पर कहीं कीचड़ नहीं होता, सब जगह स्थल स्वच्छ व सूखा दिखाई देता है, जल अशुद्ध नहीं रहता, औषधियाँ, फल और फूलों से युक्त होती है। उनका युक्तिपूर्वक सेवन करके सब सुखों की प्राप्ति करो।

वेदों में बसन्त की मधुरता का विस्तृत वर्णन भी हुआ है-

मधुवाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धव:।
माध्वीर्न: सन्त्वोषधी। -यजु. १३.२७, ऋ.१.९०.६

बसन्त ऋतु में हम लोगों के लिए वायु मधुरता के साथ जल के समान चलते हैं। नदियाँ और समुद्र मधुरता के साथ बहते हैं और औषधियाँ भी मधुरता के गुणों से युक्त हो जाती है।

मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रज:।
मधु द्यौरस्तु न: पिता। -यजु. १३.२८, ऋ. १.९०.७

बसन्त ऋतु में रात्रि मधुरता से युक्त, उषाकाल से लेकर पूरा दिन मधुर, पृथ्वी का कण मधुर, द्युलोक का प्रकाश भी मधुर, समय भी रक्षा करने वाले पिता के समान मधुर हो गया है। हमें भी इस समय का युक्ति पूर्वक सेवन कर बसन्त ऋतु से लाभ लेना चाहिए।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमांऽअस्तु सूर्य्य:।
माध्वीर्गावो भवन्तु न:। -यजु. १३.२९, ऋ. १.९०.८

हमारे लिए वनस्पति, पीपल आदि मधुर गुण वाली होवे, सूर्य भी अधिक ताप न देवे, शरीर को उसकी किरणों से आनन्द मिले। सूर्य की किरणों से ऐसी मधुरता मिले जैसी गौ से।

पाठक जानते हैं कि जब किसी देश का शासक अपने देश के ही किसी प्रदेश में कार्यवश जाता है तब उस प्रदेश में महीनों पूर्व उसके स्वागत की तैयारी होने लगती है। जिस नगर में वह जाता है उसे दुल्हन की तरह सजाया सँवारा जाता है। उसके मार्ग में प्रयुक्त सड़कों की मरम्मत की जाती है। उसके लिए नियत आवास को रंग-रोगन व सफेदी कर सजाया जाता है। इसी प्रकार ऋतुराज बसन्त के आगमन से ४० दिन पूर्व ही बसन्त पंचमी का पर्व मनाकर उसका स्वागत किया जाने लगता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन स्वागत का पूर्वाभ्यास किया जाता है। पूर्णिमा को सामूहिक यज्ञ में नवान्न गेहूँ यव, चना आदि की आहुति दी जाती है। देवों द्वारा दिये गये अन्न का भोग यज्ञ के माध्यम से पहले देवों को कराया जाता है और फिर यज्ञ शेष का भोग हम लोग करते हैं। इस पूर्णिमा का नाम होली क्यों हुआ, इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

तृणाग्नि भृष्टार्द्धपक्वशमीधान्यं होलक:।
होला इति हिन्दी भाषा। (शब्द कल्पद्रुम प्रकाश)

तिनकों की अग्नि में भुने हुए अधय के शमी धान्य को होलक कहते हैं तथा इसी को हिन्दी भाषा में होला कहते हैं। **होलाकोऽल्पानिलो मेद: कफ दोष श्रमापह:।** (भावप्रकाश) होला स्वल्प वात है और मेद (चर्बी) कफ और श्रम (थकान) के दोषों को दूर करता है।

चूँकि इस पूर्णिमा पर होले का प्रयोग होता है, इसलिए इसे होलक अथवा होली पर्व के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। वेदों में इस पर्व को आपसी मेल-मिलाप के लिए उत्तम माना गया है। पूर्णिमा की सन्ध्या में सब ग्रामवासी मिलकर हवन करें, होला की आहुति दें तथा ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा की भावना से हटकर प्रेम से आपस में मिलें। होली को समाज में प्रेम प्रसार करने वाला पर्व माना जाता है। यदि किसी कारणवश वर्ष के मध्य हमारा किसी व्यक्ति से मनमुटाव भी हो गया हो तो उसे होली की अग्नि में भस्मसात् कर देना चाहिये। मुख्य त्योहार तो पूर्णिमा के दूसरे दिन होता है जब हम बसन्त के आगमन पर हर्ष मनाते हुए हाथों में गुलाल और रंग लेकर अपने मित्रों, सम्बन्धियों एवं परिचितों से मिलने निकल पड़ते हैं। सभी से मिलकर गालों पर गुलाल मलकर अथवा रंग के छींटे देकर हर्ष व्यक्त करते हैं तथा वे भी इसी प्रकार की प्रतिक्रिया कर हर्ष को द्विगुणित कर देते हैं। यह मिलने-जुलने व एक-दूसरे का स्वागत सत्कार करने का कार्य दोपहर बाद तक चलता रहता है। इसके उपरान्त स्नानादि से निवृत्त होकर भोजन आदि करते हैं। सन्ध्या समय जिन लोगों से दिन में मिलना नहीं हो सका उनको मिलने के लिए निकल जाते हैं। सभी जगह नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से सभी आए सज्जनों का सम्मान किया जाता है। इस पर्व के बाद ही लोग घरों में गरम पानी से स्नान करना बन्द कर देते हैं। खान-पान व रहन-सहन में ऋतु अनुसार कुछ परिवर्तन कर दिया जाता है। मध्य काल में इस पर्व में कुछ बुराइयों ने घर कर लिया था। जैसे मद्यपान करना, दीवारों पर अश्लील नारे लिखना, अपशब्द बकना आदि। अब शिक्षा के प्रचार-प्रसार से इनमें कमी आ रही है और आशा है कि कालान्तर में वे समाप्त हो जाएँगी।

पुराणों में इस पर्व के साथ एक कथा जुड़ी हुई है। हिरण्यकशिपु नास्तिक था परन्तु उसका पुत्र प्रहलाद ईश्वर भक्त बन गया। हिरण्यकशिपु ने उसे मारने के कई प्रयत्न किये परन्तु उसके हाथ में सदैव असफलता मिलती रही। अन्त में अपनी बहिन 'होलिका' को प्रहलाद को मारने का कार्य दिया। कहा जाता है कि होलिका को ऐसा वरदान मिला हुआ था कि जिससे उसे अग्नि जला नहीं पाती थी। होलिका ने प्रहलाद को गोदी में लेकर अग्नि में प्रवेश किया परन्तु एकाएक परिणाम बदल गया। होलिका भस्म हो गई और प्रहलाद सुरक्षित बच गया। इसी घटना के स्मरणात्मक इस पर्व को मनाया जाता है। कुछ भी हो, यह पर्व समाज में मेल-मिलाप बढ़ाकर एकता स्थापित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इतिशम्। ■

सत्यार्थ प्रकाश कणिका

दशम समुल्लास : आचार, अनाचार, भक्ष्य और अभक्ष्य

गतांक पृष्ठ ३९ से आगे

• देवनारायण सोनी
शिव शक्ति नगर, बंगाली चौराहे के पास, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष : ९८२६०७६९३३

१. धर्म युक्त आचरण, सुशीलता, सत्पुरुषों का संग और सत्य के ग्रहण में रुचि आदि आचार- इनके विपरीत अनाचार कहलाता है। आचार और धर्म समान अर्थक हैं। वेदों का मानना, उनकी शिक्षा पर चलना ही धर्म है। जो वेदों की निन्दा करता है वह नास्तिक है।

२. जितेन्द्रियता ही सदाचार वृत्त का केन्द्र है। ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ कर्मेन्द्रिय एवं ११वाँ मन को वश में करके युक्त आहार-विहार एवं योगाभ्यास से शरीर की रक्षा (स्वस्थ जीवन) करना।

३. सत्य एवं विद्या का स्थान सर्वोपरि है। वृद्ध वही कहलाता है जो विद्या एवं विज्ञान में अधिक हो, विद्या पढ़कर सब प्राणियों का कल्याण (अहिंसा) व मधुर भाषण को चाहता हो। शौच, पवित्रता, शिष्टाचार, परोपकार, सत्संग, माता-पिता, आचार्य, अतिथि की सेवा को देव पूजा कहते हैं।

४. पौराणिक लोग यह मानते हैं कि विदेश गमन (यात्रा) से आचार नष्ट हो जाता है, यह मिथ्या कथन है। आर्यावर्त में रहकर भी आचार नष्ट कर धर्म भ्रष्ट हो सकता है।

५. महाभारत के शान्ति पर्व में उल्लेख है कि व्यासजी अपने पुत्र शुक एवं शिष्यों सहित पाताल अर्थात् अमेरिका में निवास किया करते थे। श्री कृष्ण और अर्जुन अश्वतरी अर्थात् अग्नियान नौका में बैठकर अमेरिका गए थे। वहाँ से उद्दालक ऋषि को युधिष्ठिर यज्ञ में लाए थे। धृतराष्ट्र का विवाह गांधारी से हुआ था। कन्धार जो अफगानिस्तान में है, वहाँ की गान्धारी राजकुमारी थी।

पहले आर्यावर्तीय (भारतीय) व्यापार- राजकार्य एवं भ्रमण के लिए सब भूगोल में भ्रमण करते थे। छुआछूत और धर्मभ्रष्ट होने की शंका, यह मूर्खों और अज्ञानियों का कार्य है।

चौका लगाकर घर में ही भोजन खाने की बात भी भ्रामक है। युद्ध करते हुए क्षत्रिय बाहर भोजन करते लड़ते रहे हैं। अत: भोजन कहीं भी कर सकते हैं परन्तु रमणीक, स्वच्छ, पवित्र स्थान हो, मलिन दुर्गन्ध युक्त न हो।

६. सखरी-निखरी (कच्चा-पक्का) भोजन का भेद पाखण्ड है। जल से पकाई वस्तु (कच्चा भोजन) परन्तु दूध, घी से पकाई निखरी- पक्का भोजन यह भी असत्य प्रपंच है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्वारा शूद्रों के हाथ का बना भोजन खाया जा सकता है, ये वर्ण देश की प्रगति विद्या पढ़ाना, राष्ट्र रक्षा, पशुपालन, व्यापार में अपना अधिक समय दे सकते हैं। नखछेदन, स्नान (प्रतिदिन), क्षौर कर्म (आठवें दिन) करते रहें।

७. विदेशियों के आ जाने से राज्य करने से आर्यावर्त में फूट मतभेद, अविद्या, बाल विवाह, अस्वयंवर विवाह आदि अवगुण आ गए। महाभारत युद्ध में कौरव, पाण्डव, यादव (भाई-भाई भी) आपसी फूट से लड़कर सर्वनाश को प्राप्त हो गए। परमेश्वर कृपा करें, यह राजरोग शीघ्र समाप्त हो जावे।

८. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य मलिन, विष्ठा, मूत्रादि के संसर्ग से उत्पन्न शाक, फल, मूल आदि न खावें। मद्य, मांस, भांग, अफीम, सड़ा हुआ दुग्ध युक्त पदार्थ सेवन न करें। गाय की एक पीढ़ी में ३ लाख ९९ हजार ७६० मनुष्यों को सुख पहुँचता है। बकरी के दूध से २५ हजार ९२० मनुष्यों का पालन होता है। अत: हाथी, भेड़, गधे आदि पशुधन से भी बहुत उपकार होता है।। इनकी हत्या व मारना यानी सब मनुष्यों की हत्या के समान है।

हानिकारक पशु या अति दुष्ट स्वभाव वाले मनुष्य को प्राणदण्ड देने में कोई पाप नहीं है। सबको एक पात्र (थाली) में भोजन करना उचित नहीं है। न झूठा खावें न खिलावें। शहद व दूध को उच्छिष्ट (झूठा) कहना ठीक नहीं है। शुद्ध पानी से थनों को धोकर दूध दुहना चाहिये। मूल ग्रन्थ मे मनुस्मृति एवं महाभारत के श्लोक उदाहरण स्वरूप दिये हैं।

विशेष टिप्पणी

मांसाहार का विशेष विरोध किया गया है। मांसाहार ने पर्यावरण को बहुत बड़ा खतरा पैदा कर दिया है। खाद्य संकट का कारण भी मांसाहार ही है। अमेरिका में पैदा होने वाला ७० प्रतिशत अनाज पशु आहार के रूप में जानवरों को खिलाया जाता है।

१ किलो गोमांस में महज ११४० कैलोरी ऊर्जा और २२६ ग्राम प्रोटीन होता है। इसके विपरीत १ किलो गोमांस तैयार करने में लगे अनाज से २४१५० कैलोरी ऊर्जा और ७०० ग्राम प्रोटीन मिलता है।

दुनिया की ६६ प्रतिशत जमीन पर पशु आहार पैदा किया जाता है। वस्तुत: प्रत्यक्ष अनाज खाने की तुलना में इसे जानवरों को खिलाकर मांस, अंडे या दूध तैयार करने में अनाज की कहीं ज्यादा खपत हो रही है। और दुनिया की आधी आबादी एक समय भूखी सोती है। भारत में यह आँकड़ा १९ करोड़ जनता पर लागू होता है। ■

नारायणगढ़ : बरवारिया पाटीदार परिवार में अमृत महोत्सव सम्पन्न

आर्य श्री विजय कुमार बरवारिया ने भारत भ्रमण (चार धाम) कर आने पर अपने पू. पिता श्री नाथूलालजी व श्रद्धेय माता प्रभादेवी का अमृत महोत्सव मनाकर सम्मान किया। इस अवसर पर आदरणीय विद्वान् वरिष्ठस्वजनों को भी सम्मानित कर पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ की परम्परा का निर्वाह कर लगभग १५०० स्नेहीजनों को स्नेह भोज कराया गया। परस्पर मिलन, सम्मान, अभिवादन एवं शुभकामना की प्रीति पूर्वक रस्म अदा की गई।

विशेष सम्मान : शिवनारायण जी पाटीदार, मोहनलाल दशौरा, रामनारायणजी चौधरी, मथुरालाल भगत एवं गणमान्य वरिष्ठ समाजजन।

द्वारा : धीरज दशौरा (नारायणगढ़)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर महर्षि दयानन्द के २०० उपकार

• **आचार्य राहुल देव**
पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार
कोलकाता (प. बंगाल)

१) वेद को सत्य विद्याओं का ग्रन्थ सिद्ध किया।
२) वेदों की ओर लौटों का नारा दिया।
३) वेद को ईश्वरोक्त संविधान बताया।
४) वेद को मानव जाति का धर्म ग्रंथ बताया।
५) वेदों की पुनर्स्थापना की।
६) अशुद्ध वेद भाष्य को शुद्ध किया।
७) वेदों में इतिहास नहीं है यह बताया।
८) वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है यह सिद्ध किया।
९) वेद मनुष्य मात्र के लिए है यह बताया।
१०) स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया।
११) शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया।
१२) त्रैतवाद को पुनः स्थापित किया।
१३) ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों को अनादि तत्व बताया।
१४) वेद सिर्फ कर्मकांड के लिए नहीं है यह बताया।
१५) वेद ईश्वर प्रदत्त है मनुष्य कृत नहीं है यह सिद्ध किया।
१६) स्मृति का मतलब वेद नहीं है यह बताया।
१७) वेद में और सृष्टि में एकरूपता है यह बताया।
१८) ईश्वर और जीव एक नहीं है यह सिद्ध किया।
१९) जीव कभी ईश्वर नहीं बन सकता यह बताया।
२०) जीव ईश्वर का अंश नहीं है इस सिद्धान्त को सुलझाया।
२१) प्रकृति मिथ्या नहीं है यह बताया।
२२) छः दर्शनों में एकरूपता है यह बताया।
२३) उपनिषद् ब्राह्मण आदि ग्रंथ वेद अनुकूल है तो सत्य है यह सिद्ध किया।
२४) ईश्वर कर्मफल प्रदाता है यह बताया।
२५) ईश्वर सब सत्य विद्या और पदार्थों का मूल है यह समझाया।
२६) ईश्वर एक है, ईश्वर अवतार नहीं लेता यह सिद्ध किया।
२७) ईश्वर कभी दूत, पैगंबर नहीं भेजता यह समझाया।
२८) ईश्वर सर्वत्र व्यापक है।
२९) वेद को आलस्य रुपी शंखासुर ले गया था यह सिद्ध किया।
३०) वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में ही प्राप्त होता है यह बताया।
३१) तीर्थ स्थानों पर जाने से पाप नहीं कटते यह बताया।
३२) गंगा में डुबकी लगाने से पाप क्षमा नहीं होते यह बताया।
३३) माता-पिता ईश्वर आचार्य विद्वान् ही सच्चे तीर्थ हैं।
३४) मूर्ति पूजा सीढ़ी नहीं अपितु खाई है यह चेताया।
३५) जातिवाद को मिथ्या बताया।
३६) कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था को सही बताया।
३७) शूद्र भी ब्राह्मण बन सकता है यह उद्घोष किया।
३८) छुआछूत को मिटाया, अस्पृश्यता को दूर भगाया।
३९) जन्म से नहीं, कर्म से मनुष्य महान् बनता है बताया।
४०) विधवाओं का विवाह उचित बताया।
४१) विधवाओं को नारकीय जीवन से निकलवाया।
४२) नारी का सम्मान बढ़ाया।
४३) बहु विवाह को घातक बताया।
४४) स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार दिलाया।
४५) घूँघट प्रथा को अनुचित बताया।
४६) बाल विवाह को बंद कराया।
४७) अनमेल विवाह को बंद करवाया।
४८) सती प्रथा को मानव जाति पर सबसे बड़ा धब्बा बताया।
४९) गृहस्थ आश्रम को श्रेष्ठ बताया।
५०) ब्रह्मचर्य की महिमा बताई।
५१) विवाह में गुण कर्म स्वभाव को आवश्यक बताया।
५२) वानप्रस्थ की उपयोगिता बताई।
५३) सन्यासियों का महत्व और कार्य बताया।
५४) सोलह संस्कार बताए-सिखाए, संस्कार विधि जैसा मानव निर्माण के लिये उत्तम ग्रन्थ लिखा।
५५) बाल शिक्षा सिखाई।
५६) जन्म पत्र को शोक पत्र बताया।
५७) माता निर्माता भवति बताया।
५८) बालक के लिए माता की शिक्षा सर्वोच्च बताई।
५९) बालक-बालिका के लिए अलग-अलग शिक्षा बताई।
६०) अनिवार्य शिक्षा के महत्व को बताया।
६१) पाठशाला ना भेजने पर माता-पिता को दोषी बताया।
६२) विद्या काल में समान भोजन वस्त्र व्यवहार सिखाया।
६३) आर्ष शिक्षा का महत्व बताया।
६४) अनार्ष शास्त्रों की पहचान बताई।
६५) ऋषि कृत ग्रंथों का महत्व बताया।
६६) ऋषियों के ग्रंथों में मिलावट को हटाया।
६७) पठन-पाठन व्यवस्था सिखाई।
६८) ब्रह्मा से लेकर जैमिनी के तथ्यों को अपना मंतव्य बताया।
६९) महापुरुषों पर लगे दोषों को हटाया।
७०) योग विद्या सिखाई
७१) अष्टांग योग सिखाया

७२) प्राणायाम का महत्व बताया।
७३) किसी व्यक्ति विशेष की पूजा का निषेध किया।
७४) गुरुडम का खण्डन किया।
७५) पाखंड का गढ़ ढ़ाया।
७६) अंधविश्वास को दूर भगाया।
७७) यज्ञों में हिंसा का पुरजोर खण्डन किया।
७८) नरबलि को कलंक बताया।
७९) कर्मकांड की शुद्धि करवाई।
८०) पंच महायज्ञ को प्रचलित किया
८१) जादू-टोना-टोटका को दूर भगाया।
८२) भूत-प्रेत का डर दूर भगाया।
८३) पूर्वजन्म-पुनर्जन्म के महत्व को बताया।
८४) कर्मफल व्यवस्था का महत्व बताया।
८५) यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ पूजा बताया।
८६) यज्ञ को पर्यावरण के लिए अत्यावश्यक बताया।
८७) गृहस्थाश्रम के लिए पंच महायज्ञ अनिवार्य बताया।
८८) सन्ध्या की विशेषता बताई।
८९) सन्ध्या की विधि सिखलाई।
९०) परमेश्वर को ही उपासनीय बताया।
९१) सभी प्राणियों में ईश्वर को व्याप्त बताया।
९२) अहिंसा का पाठ पढ़ाया।
९३) शाकाहार का महत्व बताया।
९४) मन्दिरों पर चढ़ रही बलि का निषेध किया।
९५) आहार-विहार के पचड़े को मिटाया।
९६) शूद्र से भोजन व्यवस्था को सही बताया।
९७) व्रत के महत्व को बताया।
९८) फलित ज्योतिष की सच्चाई बताई।
९९) ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव को अंधविश्वास बताया।
१००) कर्मानुसार सुख-दुख बताया। ■

(क्रमशः आगामी अंक में)

आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर का १३६वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्विजन्मशताब्दी वर्ष की बेला पर अत्यन्त हर्ष और उल्लास के साथ आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर का १३६वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १९ फरवरी २०२३ को इन्दौर संसदीय क्षेत्र के लोकप्रिय सांसद माननीय शंकर लालवानी जी, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीमान् प्रकाश जी आर्य, इन्दौर सम्भाग पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष जी. डी. अग्रवाल जी, इन्दौर के सुप्रसिद्ध आर्थोपेडिक सर्जन डॉक्टर डी. के. तनेजा जी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं दानवीर श्रीमान् शिवकुमार चौधरी जी, उद्योगपति सर्वप्रिय बंसल जी एवं चिन्तामणि जी चासकर की गरिमामय उपस्थिति तथा न्यायमूर्ति वी. डी. ज्ञानी जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। आर्य समाज मल्हारगंज के धर्माचार्य डॉ. नरेन्द्र जी अग्निहोत्री के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न किया जाकर राष्ट्रहित आर्य समाज के योगदान पर अपना उद्बोधन अग्निहोत्री जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। आयोजन के अध्यक्ष न्यायमूर्ति ज्ञानी जी तथा सम्माननीय उपस्थित आर्य नेताओं और पदाधिकारियों के करकमलों द्वारा ध्वजोत्तोलन किया गया।

इस अवसर पर माननीय सांसद महोदय, डॉ. डी. के. तनेजा जी, डॉ.जी. डी. अग्रवाल जी एवं आर्य समाज मल्हारगंज के संस्थापक सदस्य डॉ. गोविन्दराव जी चासकर के वंशज श्री चिन्तामणि जी चासकर का सम्मान शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिह्न के द्वारा किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन आर्य समाज जिला इन्दौर के प्रभारी श्री रमेशचन्द्र जी चौहान एवं सह प्रभारी श्री चैनसिंह आर्य के द्वारा किया गया। प्रान्तीय सभा प्रधान श्री प्रकाश जी ने अपने उद्बोधन के साथ आगामी ३ वर्षों तक वेद प्रचार को केन्द्र में रखकर विशेष रुप से कार्य करने का आह्वान उपस्थित आर्यों से किया। सांसद महोदय तथा गणमान्य अतिथियों ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी तथा आर्य समाज के द्वारा सनातन धर्म एवं राष्ट्र रक्षार्थ दिए गए योगदान पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर प्रताप शास्त्री, मुकेश गोपलानी, अजय रेनीवाल, हरिसिंह, स्नेहिल शर्मा, कुणाल, जयंत, हरीश शर्मा, बलदेव आर्य, श्वेतकेतु वैदिक, दिनेश गुप्ता, पुष्पा गुप्ता, शशि गुप्ता, मनोरमा साहू, मनोरमा आर्य, उर्मिला पवार, कैलाश पवार एवं इन्दौर की समस्त आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे।

मंच संचालन का दायित्व भार मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा आर्य समाज मल्हारगंज के प्रधान डॉ. दक्षदेव जी गौड़ ने कुशलतापूर्वक वहन किया। आपके द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के तीन बार इन्दौर आगमन की जानकारी से अवगत करवाया गया। शान्ति पाठ पश्चात् ऋषि लंगर में भोजन प्रसादी ग्रहण करने के साथ आयोजन का समापन हुआ।

२१ मन घी से विशाल महायज्ञ एवं भव्य आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

दिनांक ९ से १२ फरवरी २०२३ तक स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल मलारना चौड़, जिला सवाई माधोपुर द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी अवसर पर आयोजित २१ मन घी से विशाल महायज्ञ एवं भव्य आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुआ। आचार्य सोमदेवजी, आचार्य सर्वमित्रजी, स्वामी धर्मदेवजी, स्वामी सोमानन्दजी, मुनि सत्यजीतजी, मुनि ऋतमाजी, कैलाश कर्मठजी, पं. भानुप्रकाश शास्त्रीजी, दिनेश पथिकजी, भूपेन्द्रजी के भजन उपदेश का लाभ उपस्थितों ने प्राप्त किया। देश के कोने-कोने से पधारे उपस्थितजनों ने लाभ प्राप्त किया। कोलकाता से आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान दीनदयालजी गुप्त तथा मुम्बई से रमेशजी मान्धाना विशेष रूप से उपस्थित रहे। ऋषि की द्विजन्मशताब्दी वर्ष बेला पर ११ फरवरी को २०१ यज्ञ वेदियों पर विशेष यज्ञ किया गया। आयोजन सफल-सार्थक रहा।

चाणक्य नीति की धारावाहिक व्याख्यानमाला : षष्ठम प्रवचन

• **आचार्य सोमदेव आर्य**
स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल
मलारना चौड़, जनपद : सवाई माधोपुर (राज.)
चलभाष : ९०२४६६९५५५, ८६१९६३५३०७

कब किसकी परीक्षा होती है?

आचार्य चाणक्य बता रहे हैं हम बहुत सारे लोगों के सम्पर्क में होते हैं, परिवार के सम्पर्क में होते हैं तो कब–कब किसकी परख होती है।

जानीयात् प्रेषणे भृत्यान् बान्धवान् व्यसनाऽऽगमे।
मित्रं चाऽऽपत्तिकालेषु भार्यां च विभवक्षये।।११।।

पहला कहा है **भृत्यान्। भृत्यों का तात्पर्य है नौकरों की परीक्षा कब होती है?** नौकर-चाकर किसी ने रख रखे हों, सामान्य रूप से काम दिनभर का वह करते हों किन्तु असली परीक्षा तब होती है जब अचानक घर में कोई विशेष कार्य आ जाए और उस विशेष कार्य में उन नौकरों को लगाया जाए। यदि वे निष्ठापूर्वक, श्रद्धापूर्वक, ठीक-ठीक करते हैं तो समझियेगा कि वे सेवक हैं, वे नौकर हैं और यदि उस काम को ठीक से नहीं करते, उस काम से बचते हैं तो नौकरों की परख हो जाती है। बहुत सारी जगह हमने देखें। नौकर तो रहते हैं लेकिन अवसर विशेष हो जाता है तो एक तरफ जा बैठेंगे, ये हमारा काम नहीं है, हम तो बस इतने काम के लिए यहाँ रखे गए हैं, हम वो ही करेंगे, दूसरा काम नहीं करेंगे। वह सेवक नहीं हो सकते, वह नौकर नहीं हो सकते। नौकर की पहचान, नौकर की परख जो होती है, परीक्षा होती है विशेष कार्य उपस्थित हो जाने पर या किसी विशेष कार्य पर लगाने पर।

दूसरा कहा कि भाई-बन्धुओं की परीक्षा कब होती है? भाई-बन्धु चाहे कितना भी प्रिय भाई हो, कितने भी मन मिले हो लेकिन परीक्षा उनकी भी होती है। आचार्य चाणक्य कहते हैं **व्यसनाऽऽगमे-व्यसन** का तात्पर्य है दुःख आने पर। अचानक एक भाई के ऊपर विशेष दुःख आ पड़ा है और दूसरा भाई उसको देखकर बचता है, दूर भागता है, छिपता है कभी इस दुःख की घड़ी में ये मेरे से सहायता न माँग ले। उस समय भाई की पहचान हो जाती है और यदि दुःख की घड़ी में दूसरा भाई साथ में खड़ा हुआ है, हर तरह से सहयोग करने के लिए तैयार है तो वह भाई–भाई कहलाता है अन्यथा नाम का भाई है। संकट की घड़ी में उसकी पहचान होती है।

आगे कहा गया मित्र की पहचान कब। हम बड़े दोस्त बना रहे हैं। आज कल तो फ्रेंड-रिक्वेट्स भेजी जाती है, रिक्वेट्स आती है। फेसबुक के कहते हैं कि मेरे पाँच हजार मित्र हैं। यथार्थ में मित्र कहाँ होते हैं, मित्र कौन होते हैं, **मित्र की परीक्षा कब होती है?** तो कहा है **मित्रम् च आपत्तिकाले**। आपत्ति काल में, संकट की घड़ी में मित्र की पहचान होती है। दो मित्र जंगल में चले जा रहे हों और अचानक सामने से हिंसक प्राणी आ जाए। हिंसक प्राणी आते ही एक मित्र तो तुरन्त वहीं से भाग जाता है, दुबक जाता है और अपने मित्र को अकेला छोड़ देता है।

संकट की घड़ी आई, आफत की घड़ी आई तो मित्र सहायता करेगा भागेगा नहीं, सहयोग करेगा और यदि कोई मित्र ऐसा करता है तो वह ऊपर-ऊपर से है, वास्तविक मित्र नहीं है। हमारे एक साथी सुना रहे थे। रेल्वे स्टेशन पर किसी से झगड़ा हो गया। झगड़ा हो गया तो उसके साथ में दो सहयोगी भी थे, दोनों उसको तुरन्त छोड़कर भाग गए स्टेशन से। अब जो दूसरे लोग थे जिनसे झगड़ा हो रहा था वह बलवान् थे लेकिन हमारे साथी भी बड़े पहलवान जैसे थे, ताकतवर, रोजाना व्यायाम, प्राणायाम करने वाले। कहने लग गए कि उनकी तो परीक्षा हो गई थी जो साथी बनकर आए थे। मित्र की तरह रहते थे, दोनों तो गायब हो गए। उस समय परमात्मा ही स्वयं हौसला देता है। कहने लग गए कि उन तीन-चार लोगों को उठा-उठाकर फैंकना आरम्भ कर दिया। उनको उठाकर के फेंका और जल्दी से ट्रेन में चढ़ गए। अब वह तो तीन-चार थे, सामने तीन-चार हों और एक अकेला हो, मित्र भी छोड़कर भाग गए हों तो संकट काल में उस समय सुरक्षा तो अपनी भी करनी होती है। अपनी सुरक्षा के लिए शौचालय में गए, अंदर से बन्द कर लिया, लेकिन मित्र की तो पहचान हो गई। आपत्ति काल में यदि मित्र छोड़कर भाग जाता है तो कहा है वह मित्र नहीं होता।

पत्नी की परीक्षा कब होती है? पत्नी वास्तव में पत्नी है, सहधर्मिणी है, सहचारी है, जीवन में साथ निभाने वाली है या नहीं है तो आचार्य चाणक्य कहते हैं- **भार्यां च विभवक्षये-** पत्नी की पहचान तब होती है कि जब धन-सम्पत्ति का नाश हो गया हो। जब विवाह हुआ था तो घर की बहुत अच्छी स्थिति थी, घर में सब कुछ ठीक था लेकिन देवयोग से किसी कारण से धन की हानि हो गई, गरीबी आ गई। उस गरीबी के समय यदि पत्नी अपने पति का हौसला नहीं टूटने देती, सहारा देती रहती है, बार-बार यह कहती है कि पतिदेव कोई बात नहीं, दिन बदलेंगे, फिर परमात्मा ठीक करेगा और एक पत्नी हर समय कलह करती रहती है- इतना था, सबकुछ खो दिया, ये कर दिया। इस तरह का जो जीवन संकट में डाल देती है, वह पति की यथार्थ में भार्या नहीं होती। तो पत्नी की पहचान धन का नाश हो जाए, बहुत बड़ी हानि हो जाए तब होती है। आगे आचार्य चाणक्य कहते हैं कि बन्धु कौन होता है? सच्चा हितैषी कौन?

आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रु-संकटे।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।१२।।

यः तिष्ठति स बान्धवः- जो ठहरा रहता है, जो साथ में रहता है वह, बन्धु है, वह भाई है, वह हितैषी है। कब? पहली बात कही **आतुरे**। आतुरे का तात्पर्य है रोग की स्थिति में। व्यक्ति रोगी हो गया है तो उसको सहायता की आवश्यकता है, उसको सहयोग की जरूरत है और यदि उस रोग की स्थिति में हमें अपने बन्धु वर्ग छोड़कर चले जाते हैं तो कहा कि वह बन्धु नहीं हैं, वह सच्चा भाई नहीं है, सच्चा हितैषी नहीं है।

कोई-कोई धीर व्यक्ति होता है जो रोगी व्यक्ति की लगातार सेवा कर देवे। एकाध दिन तो सेवा कर ही लेता है। सास बीमार हो गई तो बहू एक-दो दिन सेवा कर लेगी, लेकिन महीना-दो महीना लम्बी बीमार रह

गई तब पता लगता है कि वास्तव में ये सेवा करने वाली है कि नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्दजी जिस समय गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर चुके थे और विद्यार्थी उनके गुरुकुल में थे। गुरुकुल नगर से दूर जंगल में गंगा के किनारे था और जब गुरुकुल में जाना पड़ता था तो गंगा नदी को पार करके जाना पड़ता था। गुरुकुल की स्थापना १९०१ में हुई थी। उस समय वहाँ जंगली जानवर शेर, चीते आदि भी रहते थे, गुरुकुल में शेर आ जाया करते थे लेकिन ब्रह्मचारी इतने निर्भीक थे कि ब्रह्मचारी किसी लकड़ी को हॉकी बना लेते थे। हॉकी तो टेढ़ी सी लकड़ी होती है जिससे गेंद को आगे ले जाते हैं। खूब खेलते थे ब्रह्मचारी। शेर आ गया तो ब्रह्मचारियों ने लकड़ी से पीट-पीटकर शेर को भगा दिया। उस समय चिकित्सा व्यवस्था इतनी आधुनिक नहीं थी।

गुरुकुल में एक विद्यार्थी को बुखार आ गया। विद्यार्थी को उल्लियाँ लग गई, रात का समय था। स्वामी श्रद्धानन्दजी अपने विद्यार्थी को देखने के लिए आ गये। हाल-चाल देखा, उसका सिर छूकर देखा। बहुत तेज बुखार था, बिजली की व्यवस्था नहीं थी, लालटेन, दीपक जलते थे तो जब स्वामी श्रद्धानन्दजी ने हाल-चाल पूछा और स्वामी श्रद्धानन्दजी जो अपने विद्यार्थी को रखते थे उसे पिता की तरह प्रेम देते थे और उनके विद्यार्थी सम्मान बहुत करते थे उनका। हाल-चाल पूछा तो विद्यार्थी ने कहा कि मुझे उल्टी होने वाली है। उल्टी होने वाली है तो जो ब्रह्मचारी सेवा में उसके लगा था, जैसे ही उल्टी होने को हुई तो वह ब्रह्मचारी तो दौड़ पड़ा बर्तन लाने के लिए बर्तन में उल्टी ले लेंगे लेकिन स्वामी श्रद्धानन्दजी ने जैसे ही उसकी उल्टी आई तुरन्त अपनी अंजलि उसके मुँह के सामने कर दी। उसकी उल्टी को अपने हाथों में ले लिया। एक गुरु हो, एक आचार्य हो इतना महान् व्यक्ति अपने विद्यार्थी की इस तरह सेवा कर रहा है कि उसकी उल्टी हाथ में ले लेते हैं। सेवा करना बड़ा कठिन काम है। इसलिए आचार्य चाणक्य कहते हैं- रोगी होने पर बन्धु की पहचान होती है। यदि वह साथ देता है, सहयोग करता है, सेवा करता है तो वह बन्धु है- **यः तिष्ठति स बान्धवः।**

और कहा **व्यसने-व्यसन** का अर्थ जैसे पीछे था वही अर्थ यहाँ है। **व्यसने प्राप्ते** अर्थात् दु:ख आ पड़ने पर। दु:ख आ पड़ा, दु:ख की स्थिति में छोड़कर नहीं जाता वह बन्धु है, वह प्रिय है, वह प्रेमी है, वह सहयोगी है और दु:ख आ पड़ने पर किनारा करने लग जाते हैं। समाज में यही देखा जाता है। अच्छी स्थिति हो तो ५० यार-दोस्त बनने को तैयार और यदि कोई गरीबी आ गई, कोई दु:ख-संकट आ गया तो अपने रिश्तेदार भी किनारा करते जाएँगे, पहचानने से मना कर देंगे, हम तो जानते भी नहीं इसको ये स्थिति जिसकी होती है वह बन्धु नहीं हो सकता।

कितनी बार देखा है कि किसी का कोई अकस्मात्-एक्सीडेंट हो जाए। अकस्मात-दुर्घटना हो जाती है तो गाँव का परिचित व्यक्ति देख लेता है। पड़ा है व्यक्ति घायल लेकिन उसको ले जाकर अस्पताल में दाखिल नहीं करवाता क्यों? सोचता है मेरे ही गले पड़ जाएगा, खर्चा मुझे देना पड़ेगा। सौ बातें सोच लेता है और एक अपरिचित व्यक्ति जो उसको जानता नहीं है वह उठाकर अपनी गाड़ी में लेकर अस्पताल जाता है, डॉक्टर से इलाज करवाता है, पैसे भी दे जाता है। अब भाई-बन्धु कौन? कहा है जो संकट की स्थिति में साथ देता है वह बन्धु होता है।

आगे कहा **दुर्भिक्षे।** दुर्भिक्षे अर्थात् अकाल पड़ जाए, अनावृष्टि, अतिवृष्टि हो जाए ऐसा जब दुर्भिक्ष आ जाता है कि भाई खाने के लिए अन्न भी नहीं रहा घर में, जैसे-तैसे गुजारा कर रहे हैं और दूसरे भाई के पास अन्न है, अनाज है। अपने अनाज को छिपाकर रखता है। भाई भूखा बैठा है, बच्चे भूखे बैठे हैं और अपने अनाज को छिपाए बैठा है यह बन्धु नहीं। कहा है **दुर्भिक्षे प्राप्ते यः तिष्ठति स बान्धवः-** ऐसी स्थिति में अकाल पड़ जाने पर वह साथ में रहता है वह बन्धु।

आगे कहा **शत्रु संकटे-** अचानक कोई शत्रु आ गया, अचानक किसी दुश्मन ने हमला कर दिया तो जो हमारे साथ रहता है वह बन्धु है, वह भाई है और जो शत्रु के सामने आते ही दुम दबाकर भाग जाता है, डर कर के भीरू होकर के वहाँ से चला जाता है वह भाई नहीं है? और कहा **राजद्वारे-** राजद्वारे का तात्पर्य है राजसभा में और राजसभा का तात्पर्य है कोर्ट-कचहरी में जो साथ देता है। किसी ने केस (कार्यवाही) कर रखी है और वह केस झूठा है। झूठा केस लगा रखा है तो गवाही पहले भी ली जाती थी, साक्ष्य पहले भी लाया जाता था, आज भी लिया जाता है। भाई को पता है कि मेरा भाई निर्दोष है। निर्दोष पता होते हुए भी अपने भाई का गवाह नहीं बनता है तो वह भाई नहीं है। जाकर खड़ा हो जाए कोर्ट में जज के सामने, वकीलों के सामने कि मेरे भाई का कोई दोष नहीं है, निरपराधी है और एक भाई मजे लेता है कि हाँ ये फँस गया, ठीक हो गया। भाई के निर्दोष होने के बाद किसी ने फँसा लिया और दूसरा भाई उसके मजे लेता है वह बन्धु नहीं है।

अन्तिम बात कही **श्मशाने च-** जो श्मशान में साथ देता है। अन्त्येष्टि संस्कार चाहे किसी का भी हो, दुश्मन का भी क्यों न हो, उसमें भी पुराने गाँव के लोग जाते थे। आजकल तो पता नहीं क्या रीति हो गई। पहले जब बचपन में देखते थे तो कोई शवयात्रा जाती थी तो जिसके घर के सामने से निकलती, वह घर में से कोई लकड़ी लेता था, गोबर के कंडे लेकर जाता और श्मशान में शवयात्रा के पीछे-पीछे जाकर अपना भी सहयोग करता। ये परम्पराएँ थीं। कितनी आदर्श परम्पराएँ रही हैं। घी और सामग्री साथ में लेकर के जा सकते हैं। कह रहे हैं कि जो श्मशान में साथ देता है, श्मशान में जो साथ आकर के ठहरता है वह बन्धु है और जो इन परिस्थितियों में साथ नहीं देता है वह बन्धु नहीं हो सकता। ■

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्विजन्मशताब्दी वर्ष के पावन उपलक्ष्य पर

दिनांक १५ फरवरी २०२३ से १४ फरवरी २०२४ तक

एक लाख गायत्री मन्त्रों का यज्ञ तथा

ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक संगीतमयी श्री कृष्ण कथा

दिनांक : ४ से १२ अप्रैल २०२३ तक

स्थान : महर्षि दयानन्द विद्यालय परिसर ,आर्य समाज रोड, ब्यावरा, जिला : राजगढ़ (मध्य प्रदेश)

आमंत्रित विद्वान्

यज्ञब्रह्मा : आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, बिजनौर (उ. प्र.)

कथाकार : पंडित कुलदीप आर्य, बिजनौर (म. प्र.)

सम्पर्क : ९४२५०३८३५०

(प्रधान गोपालप्रसाद अग्रवाल)

आरक्षण : एक अनर्थकारी अन्याय

(गतांक पृष्ठ ४३ से आगे)

• रामनिवास 'गुणग्राहक'
वैदिक प्रवक्ता, धर्माचार्य, भरतपुर (राज.)
चलभाष : ९०७९०३९०८८, ८७६४२४४१४२

प्राचीन शास्त्रों के इतने सरल-सहज और सर्वमान्य प्रमाण चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि भारत की प्राचीन संस्कृति व सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में जन्मगत जातिप्रथा के चिह्न तक नहीं है। सम्भव है कुछ जन्मगत जातिवाद के पक्षपोषक जन्म से जातिप्रथा सिद्ध करने वाले कुछ वचन प्रस्तुत करें। ध्यान रहे किसी वचन को प्रमाण रूप में तभी स्वीकार किया जाता है, जबकि वह सत्य हो, मानवीय हो, न्यायपूर्ण हो, सर्वहितकारी हो, प्रश्नोत्तर द्वारा सिद्ध किया जा सके। जातिगत भेदभाव पैदा करने व बढ़ाने वाला कोई भी वचन चाहे वह किसी का भी हो न्यायपूर्ण नहीं माना जा सकता, सर्वहितकारी तो वह हो ही नहीं सकता। ऐसे उलटे वचन कहीं हैं भी तो वे मिलावटखोरों के कुकृत्य का कुफल है, हमारी वैदिक संस्कृति व ऋषि परम्परा का अंग नहीं है।

एक गाँठ खोल लें– हमारे ब्राह्मण नामधारी बन्धु बड़े अभिमान के साथ यह दावा करते हैं कि **'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद'** वेद वचन के अनुसार हम परमात्मा के मुख से पैदा हुए हैं। हमारे पण्डित प्रवर किसी भी शास्त्र वचन के मनमाने अर्थ करने में बहुत कुशल है। कोई उनसे यह पूछे कि क्या वेद में परमात्मा को साकार कहा गया है? आज तक कोई भी परमात्मा को साकार सिद्ध नहीं कर सका है। रही वेद की बात तो वेद तो स्पष्टत: परमात्मा को सृष्टि के कण-कण में व्यापक, निराकार प्रमाणित करता है। ऐसे में परमात्मा के मुख आदि अंगों से तो किसी के उत्पन्न होने की सम्भावना ही नहीं है, फिर मुख से उत्पन्न होने का सही अर्थ क्या है? हमारे जन्माभिमानी ब्राह्मणों ने परमात्मा के मुख से पैदा होने का पाखण्ड इतना फैला दिया है कि आज हम कितने ही तर्क और युक्तियों से इस पाखण्ड का खण्डन करें, उसका इतना प्रबल प्रभाव नहीं होता, जिससे उनके द्वारा फैलाया गया यह पाखण्ड नष्ट किया जा सके। ऐसे में हमारे पास एक ऐसा महत्वपूर्ण प्रमाण है जो तर्कपूर्ण ढंग से इस पाखण्ड को समूल नष्ट करने में पूर्ण सक्षम है। वैदिक साहित्य के जानकार जानते हैं कि हमारे चारों वेदों को भलीभाँति समझाने के लिए हमारे प्राचीन ऋषियों ने चार ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे हैं। यजुर्वेद का शतपथ ब्राह्मण हमारे प्रख्यात ब्रह्मवेत्ता महर्षि याज्ञवल्क्य ने तैयार किया है। महर्षि याज्ञवल्क्य शतपथ ब्राह्मण में लिखते हैं–

'द्वय्यो वा इमा: प्रजा, दैव्यश्च मानुषश्च।
ता वा इमा मानुष्य: प्रजा: प्रजननात् प्रजायन्ते।
छन्दांसि वै दैव्य: प्रजा:।
तानि मुखतो जनयते तत् एवं जनयते।। (शत. ११५.४.१७)

महर्षि याज्ञवल्क्य के इस महत्वपूर्ण वचन का अर्थ है– प्रजा दो प्रकार की है दैवीय व मानुषी। मानुषी प्रजा प्रजनन से उत्पन्न होती है, दैवीय प्रजा शरीरधारी नहीं बल्कि छन्द (ज्ञान) रूप है। यह दैवीय प्रजा मुख से उत्पन्न होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ब्राह्मण दैवीय प्रजा है और उसका जन्म ज्ञान से होता है और ज्ञान परम्परागत रूप से गुरु परम्परा से मुख से ही प्राप्त होता है। इस प्रकार ब्राह्मण मूल रूप से मुख से प्राप्त ज्ञान के द्वारा ही उत्पन्न होता है। ज्ञानहीन को ब्राह्मण कहना ब्राह्मण शब्द का अपमान है। महर्षि याज्ञवल्क्य का यह कथन पूरे वेद मंत्र को समझने-समझाने की प्राचीन परिपाटी के द्वार खोलता है। ब्राह्मण का पूर्ण जीवन पढ़ने-पढ़ाने व यज्ञ करने-कराने आदि ज्ञान पाने व फैलाने सम्बन्धी कार्यों में जाता है इसलिए उसका निर्माण मुख से ज्ञान देकर किया जा सकता है। क्षत्रिय की बात करें तो प्रजा की रक्षा करना, न्याय की स्थापना हेतु युद्धादि, शारीरिक बल-पराक्रम की भी आवश्यकता पड़ती है। युद्धकला एवं शास्त्र संचालन का व्यावहारिक ज्ञान देने व पाने में बाहु आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है इसलिए क्षत्रिय बनने, क्षत्रिय का निर्माण करने, दूसरे शब्दों में कहें तो क्षत्रिय के उत्पन्न होने में बाहुबल ही मुख्य होता है। इस प्रकार क्षत्रिय का जन्म बाहु से कहें तो शाब्दिक अन्तर के अतिरिक्त अर्थ में कोई अन्तर नहीं आता। ऐसा ही वैश्य के सम्बन्ध में समझना चाहिए। इस प्रकार ब्राह्मणों की परमात्मा के मुख से उत्पत्ति बताने की पाखण्ड पूर्ण अवधारणा का ऋषि-परम्परा प्राप्त सटीक समाधान प्राप्त हो जाता है।

''ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्त:''– भारतीय संस्कृति से अल्प परिचितजन भी जानते हैं कि वर्ण व्यवस्था के तीन वर्ण– ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य द्विज कहलाते हैं। **'द्विज'** शब्द का अर्थ होता है– दो जन्मवाला। सामान्य जनता की समझ में ये दो जन्म वाली बात नहीं आएगी। हमारी प्रकृति ने हर रहस्य को सरलता से खोलने का सुन्दर प्रयास किया है। हमारे शास्त्रों में पक्षियों को भी द्विज कहा गया है। सब जानते हैं कि पक्षियों का जन्म दो बार ही होता है। एक बार माँ के उदर से अण्डे के रूप में और दूसरा अण्डा टूटकर बच्चे के रूप में बाहर निकलना। अण्डे को शाकाहार घोषित करने वाले यह जान लें कि वे निश्चित रूप से एक मादा प्राणी के गर्भ से उत्पन्न प्राणी के प्राण लेने का क्रूर पाप कर रहे हैं। उसका एक जन्म हो चुका है, दूसरा होना है। ठीक इसी प्रकार से ब्राह्मण आदि तीनों वर्णों का दूसरा जन्म गुरुकुल से शिक्षा पूरी करके निकलते समय होता था। संस्कृत में एक लोकोक्ति का रूप धारण कर चुका पुराण का वाक्य है– **'जन्मना जायते शूद्र: संस्काराद् द्विज उच्यते।।'** (स्कन्द पुराण, नागर खण्ड– २३९-३१) इसमें स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जन्म से सब शूद्र होते हैं द्विज तो संस्कारों से बनते हैं। यद्यपि पुराण वैदिक धर्म सम्बन्धी साहित्य में नहीं गिने जाते लेकिन हमारे तथाकथित सनातनी, वस्तुत: पौराणिक बन्धुओं के लिए तो पुराण ही सब कुछ है। पुराण घोषित करते हैं कि जन्म से सब शूद्र होते हैं फिर जन्म से ही ब्राह्मण कहलाने वाले तो कहीं के नहीं रहे। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य वर्ण व्यवस्था को गुण, कर्म, स्वभाव आधारित सिद्ध करता है। मनु की बात करें तो–

'आचार्य तु यस्य य जातिं विधिवत् वेदपारग:।
उत्पादाति सावित्र्या सा सत्या सा अजरामार।।' (२.१४८)

वेद विद्या के आर-पार का सम्पूर्ण ज्ञान रखने वाला आचार्य शिक्षा पूर्ण होने पर जिसका जो वर्ण नियत कर देता है वही सच्चा होता है। अन्यत्र घोषणा की है– **'चतुर्वेदोऽपि दुर्वृत्त: स शूद्रात अतिरिच्यते'** अर्थात् चाहे कोई चारों

वेदों का ज्ञाता हो लेकिन आचरण भ्रष्ट हो, ऐसा दुराचारी शूद्र से भी पतित माना जाता है।

महाभारत में भी आचार को मुख्य स्थान देते हुए लिखा है–

'यस्तु शूद्रो दमो सत्ये धर्मे च सतत् स्थितः।

तं ब्राह्मण अहं मन्ये वृत्तेन हि द्विजो भवेत्।। (अनु.)

शूद्र कुल में उत्पन्न हुआ व्यक्ति भी मन-इन्द्रियों आदि को वश में रखता हुआ, सत्य का आचरण करता हुआ अपने कर्तव्य कर्मों का, सत्य धर्म का पालन करता है तो वह ब्राह्मण ही है क्योंकि आचरण से उत्तम स्वभाव से ही कोई ब्राह्मण माना जाता है। यक्ष- युधिष्ठिर संवाद में भी युधिष्ठिर का उत्तर यही है– **'कारणं हि द्वि जत्वेतु वृत्त मेव न संशयः।'** अर्थात् ब्राह्मण आदि द्विज होने में चरित्र, आचरण ही मुख्य कारण है। इसमें कोई संशय नहीं। हम यहाँ पुनः बता दें कि वर्ण व्यवस्था सम्बन्धी इतने वचनों के रहते हुए अगर कहीं जन्मना जाति प्रथा के समर्थक कुछ मिलावटी वचन मिल भी जाते हैं तो न्यायपूर्ण व वेदोक्त न होने के कारण गुण, कर्म, स्वभाव से ही वर्ण निर्णय की व्यवस्था माननीय होगी।

माँ के उदर से जन्म लेने की ही तरह विद्या-जन्म का होना वेद सम्मत है। अथर्ववेद में कहा गया है–

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।

तं रात्रीस्त्रिस्त्र उदरे बिभर्ति, तं जातं द्रष्टुमभि संयन्ति देवाः।।

वेद के शब्दों की सरलता देखिए- यज्ञोपवीत धारण किए हुए ब्रह्मचारी को आचार्य अपने गर्भ में धारण करता है। उस ब्रह्मचारी को तीन रात्रि अपने उदर में रखकर उसे विद्या प्रदान करता है। उसके बाद जब उसका नया जन्म होता है। वह विद्या जन्म के बाद जब अपने घर को लौटता है तो उसे देखने के लिए बड़े-बड़े विद्वान आते हैं। यहाँ तीन रात्रि का आशय तीन प्रकार के ब्रह्मचर्य (विद्या-अध्ययन) से हैं। प्रथम रात्रि में वसु ब्रह्मचारी, दूसरी में रूद्र व तीसरी रात्रि में आदित्य ब्रह्मचारी का निर्माण होता है। यह सब जानने-समझने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत **'सत्यार्थ प्रकाश'** और **'संस्कार विधि'** का अवलोकन करना चाहिए। कुल मिलाकर जन्म से जाति का या जातिगत ऊँच-नीच का पाखण्ड केवल मध्यकाल के वेद विद्या से शून्य तप-त्याग और लोकहित की भावना जैसे सद्गुणों से हीन प्रमादी लोगों की दुर्बुद्धि का दुष्परिणाम है। वेद व सम्पूर्ण वैदिक साहित्य परमात्मा को निराकार, सर्वव्यापक मानता है। परमात्मा का साकार होना, अवतार लेना आदि भी महाभारत के पश्चात् मध्य काल के ऐसे ही पाखण्डी पुरुषों की कोरी कल्पना है। वेदानुसार परमात्मा को निराकार व सर्वव्यापक मान लेने मात्र से मानव जीवन की ढेर सारी व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी। कम से कम जन्मना जाति प्रथा और ब्राह्मणों का ईश्वर के मुख से उत्पन्न होना आदि का प्रबल पाखण्ड जो बिना प्रयास के ही समाप्त हो जाएगा।

हमारे देश की सामाजिक संरचना जो लम्बे काल, सैकड़ों-हजारों वर्षों से जाति प्रथा के रूप में चली आ रही थी। इसके परिणाम स्वरूप जातिगत ऊँच-नीच व छुआछूत का भयंकर रोग प्राणलेवा बन चुका था। इस जातिवादी भयंकर रोग ने मानव-मानव के बीच ऐसी अभेद्य दीवारें खड़ी कर दी थी, ऐसी गहरी व अन्धकारपूर्ण खाई खोद डाली थी, जिनके आर-पार देखना, दूसरी ओर के मानवों का दुःख दर्द समझना सम्भव नहीं रहा था। बड़े-बड़े समाज सुधारक आए इसे मिटाने के लिए अपने-अपने ढंग से सबने खूब काम किए, लेकिन लोगों के मन और मष्तिष्क में जड़े जमा चुकी ये सामाजिक कुरीति इतनी विकराल होती चली गई कि राष्ट्र की पराधीनता के पाप का एक बड़ा हिस्सा इस जातिवाद के हिस्से में डाला जा सकता है। भारतीय धर्म और समाज के सुधार का काम करने वालों में महर्षि दयानन्द सरस्वती ही एकमात्र ऐसे महामानव हुए हैं, जिन्होंने देश के सभी महारोगों का सटीक निदान करके सार्थक उपचार किया। सब जानते हैं कि जिन न खाने योग्य चीजों के खाने से या गलत ढंग से खाने-पीने से जो रोग होते हैं। उन रोगों को दूर करने के लिए रोग बढ़ाने वाले कारणों को सर्वप्रथम छोड़ना पड़ेगा। आयुर्वेद के ऋषि कहते हैं–

'बिनाअपि भेषजं अधि पथ्यात एव निवर्तते।

न तु पथ्य विहीनानां भेषजानां शतैरपि।।'

अर्थात् जिस अनुचित खान-पान व रहन-सहन से रोग उत्पन्न हुआ है, उन्हें त्याग कर बिना औषधि के भी रोग का निवारण किया जा सकता है। दूसरी ओर रोग उत्पादक एवं रोग बढ़ाने वाले खान-पान आदि के चलते कितना भी औषधि सेवन करो, रोग नष्ट होने के स्थान पर निरन्तर बढ़ता ही जाएगा। इस जातिवाद जैसे घातक रोग की भी यही स्थिति है। जिस वर्ण व्यवस्था के बिगाड़ देने उसके स्थान पर जन्म से ही सामाजिक मान प्रतिष्ठा पाने-गँवाने की परम्परा पर प्रबल प्रहार करके वर्ण व्यवस्था के वैदिक स्वरूप को व्यवहार में स्वीकार करने के साहस पूर्ण प्रयास न किए जाएँगे तब तक आरक्षण की रेवड़ी बाँटकर हमारे सामाजिक ढाँचे को समरसता व पारस्परिक प्रेम जैसे सद्भावों से सुभूषित नहीं किया जा सकता। आरक्षण के पक्षधर सामाजिक न्याय और मानवीय प्रतिमा के नितान्त विरूद्ध जाकर नौकरी या वोट पाने के लालच में वैसा ही अपराध कर रहे हैं जैसा सैकड़ों सहस्त्रों वर्ष पूर्व कुछ पाखण्डी पण्डितों ने किया था। संस्कृत में एक कहावत है– **'अर्थी दोषं न पश्यति'** स्वार्थी लालची व्यक्ति का ध्यान पूरी तरह से अपनी स्वार्थ साधना पर टिका रहता है। वह जो कुछ अनर्थ कर रहा है, उससे होने वाले अन्याय को वह देख नहीं पाता। यही स्थिति हमारे आरक्षण समर्थक बन्धुओं की है। चाहे आज दलीत कहलाने वाले हों या उनके हृदय में सवर्ण कहलाने वालों, विशेषकर ब्राह्मणों के प्रति सदियों से निरन्तर उबलने वाले आक्रोश को वोट बैंक के रूप में भुनाने वाले कुटिल राजनेता हों वे सब आरक्षण के चलते प्रतिभावान छात्रों के साथ हो रहे क्रूर अन्याय को नहीं देख पा रहे। सामाजिक मनोविज्ञान से अनभिज्ञ राजनेता कुर्सी के लालच में यह देखना-समझना भी नहीं चाहते कि वे भारत की प्रतिभावान पीढ़ी के हृदय में वैसे ही आक्रोश के बीज होने का पाप कर रहे हैं जो कालान्तर में विषवृक्ष के रूप में उगकर ऐसे जहरीले फल देंगे कि मानवता के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो जाएगा। स्वार्थ पूर्ति में धृतराष्ट्र बन चुके छोटे-बड़े राजनीतिबाजों को एक बात को बहुत गम्भीरता से समझ लेना चाहिए कि जातिवादी सोच सैकड़ों-सहस्त्रों वर्षों तक इसलिए निर्बाध चलती रही क्योंकि उन पाखण्डी पण्डितों ने पढ़ने व शिक्षित होने पर ही प्रतिबन्ध लगाकर क्रूरता और कुटिलता का ऐसा जाल फैलाया था कि ब्राह्मणों से इतर किसी को वैचारिक विद्रोह करने का अवकाश ही नहीं छोड़ा। आज स्थिति नितान्त विपरीत है।

आरक्षण का यह विष उनके हृदयों में कड़वाहट घोल रहा है जो योग्य होने पर भी अयोग्य ठहरा कर बाहर कर दिए जाते हैं। आज का आरक्षण बौद्धिक प्रतिभा सम्पन्न, विचारों व ऊर्जा से परिपूर्ण युवा पीढ़ी के हृदय में द्वेष मिश्रित आक्रोश को बढ़ा रहा है। क्षमतावान युक्त पीढ़ी के आँखों में बसे स्वर्णिम सपनों को कुचल कर कोई राष्ट्र कुशलता की कामना करता रहे तो उसके कर्णधारों की कुबुद्धि के लिए कोई क्या कर सकता है अर्थात् कुछ नहीं। ■

(शेष भाग आगामी अंक में)

मानव निर्माण में माता-पिता एवं आचार्य की भूमिका

● आचार्य सोमेन्द्रश्री
संस्थापक : दिव्य ज्योति अनुसंधान सेवा संस्थान
चलभाष : ९४१०८१६७२४

यह बच्चे को जन्म देने वाली माँ के ऊपर एवं आचार्य पर निर्भर करता है कि वह समस्त गुणों को बच्चे में किस प्रकार विकसित करते हैं।

मानव जीवन में संस्कारों का महत्व सर्वोपरि है। संस्कारों का प्रमुख सम्बन्ध माता-पिता द्वारा दी गई शिक्षा और उनके आचरण से सम्बन्धित है। यदि हम संस्कारों के मूल में जाकर गहराई से सोचें तो यह सामने आएगा, हमारी शिक्षा-दीक्षा तभी आरम्भ हो गई थी जब हम गर्भावस्था में थे। अर्थात् मानव शरीर के रूप में हमारा निर्माण हो रहा था। वैदिक ऋषि कहते थे कि जो शिक्षा माता देती है। वह किसी विश्वविद्यालय में नहीं मिल सकती। महाभारत काल तक यह शिक्षा माताओं को विद्यालय में दी जाती थी। मदालसा, कुन्ती, कौशल्या इत्यादि अनेकों माताओं का उदाहरण हैं। जिन्होंने अपने गर्भ में बालकों का निर्माण कर महान् बनाया। मदालसा के पुत्र तो पाँच वर्ष के ब्रह्मवेत्ता बन जाते थे। इतिहास में अभिमन्यु को गर्भ में चक्रव्यूह के ज्ञान से बात की पुष्टि हो रही है कि गर्भावस्था में ही शिशु की शिक्षा पर प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो जाता है। हमारी प्राचीन संस्कृति के अनुसार माता गर्भ धारण करने के बाद संयम रखते हुए वेदों का अध्ययन एवं महापुरुषों की जीवनी के बारे में स्वाध्याय करती थी। ताकि जन्म लेने वाले बच्चे में उच्च संस्कारों का भलीभाँति प्रभाव पड़ सके तथा बच्चे को पाँच वर्ष की आयु तक माता द्वारा उच्च संस्कारित किया जाता था। उसके बाद आचार्य द्वारा गुरुकुल में शिक्षा दिलाई जाती थी। बालक एवं बालिकाओं को अलग-अलग गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त होती थी। यह प्राचीन शिक्षा पद्धति न होने के कारण आज हमें सामान्य मानव जीवन में अनेक बार सही दिशा का ज्ञान न होने की समस्या से जूझना पड़ता है। यदि हम वैदिक शिक्षा प्रणाली का सदुपयोग करें तो जीवन की अधिकांश समस्याएँ अपने आप हल हो जाएगी। तात्पर्य यह कि हम चाहें तो शिशु में विनम्रता दया, सहनशीलता, धैर्य, सेवाभाव आदि सद्गुण विकसित कर सकते हैं। यह बच्चे को जन्म देने वाली माँ के ऊपर एवं आचार्य पर निर्भर करता है कि वह इन समस्त गुणों को बच्चे में किस प्रकार विकसित करते हैं। यदि हम आगे की पीढ़ी को इस प्रकार के संस्कारों और गुणों की शिक्षा से परिपूर्ण कर दें, तो हम न केवल एक अच्छे समाज की रचना कर सकते हैं बल्कि देश के भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं। माँ को यह ध्यान रखना होगा कि गर्भकाल में वह जैसा आहार-व्यवहार अथवा संवाद करेगी उसका प्रभाव जन्म लेने वाले बालक पर पड़ेगा। उदाहरण के लिए इस अवधि में माँ के द्वारा अच्छी पुस्तकें पढ़ने से शिशु में ज्ञानार्जन के गुण विकसित होंगे। प्रसन्न रहने से शिशु में उत्साह का संचार होगा। यदि मस्तिष्क में यह विचार हो कि हमें एक बच्चे को नहीं बल्कि एक संकल्प को जन्म देना है, तो नई पीढ़ी को मानवीय गुणों एवं वैदिक संस्कारों से युक्त करके देश का विकास किया जा सकता है। वैदिक साहित्य में इसके उदाहरण भरे पड़े हैं। सीता, बिदुला, मदालसा की शिशु शिक्षा इसके जीवंत प्रमाण है। माता केवल जन्मदात्री माता ही नहीं बल्कि भविष्य के गुणवान सदाचारी व्यक्ति की निर्माता भी है। इसलिए शास्त्रों में स्पष्ट लिखा गया है **'माता निर्माता भवति'** अर्थात् माता निर्माण करने वाली होती है। वह जिस प्रकार से चाहे बच्चे के भविष्य का निर्माण कर सकती हैं। माँ को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वर्तमान समाज में माँ की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। ■

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

व्यंजन वर्ण : (२८) 'श'

छप्पय : श्री श्रीपति शतपत्रज शावित्री सुशिव शिव।।
शची शक्र शियशिय पिय शोभा शान्ति शुभ गदिव।।
श्यामा श्याम शिरोमणि शोभित शोभाधारी।।
शक्ति शारदा सेवक शिक्षित शिष्टाचारी।।
दरबारी लला शक्ति शक्र शूरता शमनता।।
हो शिव शंकर सेवी शमित शंका शमता दमनता।।

अर्थ : 'श' हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान प्रधानतया तालु है। अतः इसे तालव्य 'श' कहते हैं। यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होता है इसलिए यह उष्म भी कहलाता है।

गतांक पृष्ठ ४६ से आगे

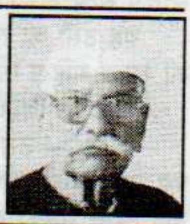

संकलन एवं सम्पादन
● चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'
१३/१०८, चारबाग, शाहगंज आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७४१६२००

लक्ष्मी उनके पति विष्णुजी, सावित्री उनके पति ब्रह्माजी, गौरा (पार्वती) उनके पति शिव जी इन्द्राणी उनके पति सुरपति इन्द्र जी, सीताजी उनके पति रामचंद्रजी, रुक्मणी जी उनके पति श्रीकृष्ण जी सब शुभ शोभित शक्तिधारी और सर्वश्रेष्ठ सबके सिरमौर हैं। ये शक्ति सम्पन्न महापुरुष वेद ज्ञान से शिक्षित, शिष्टाचारी, उपासक, पुष्ट, समर्थ, योग्य, शूरवीर, शान्ति करने के शक्तिधारी हैं। ये सब शिवशंकर के सेवक बनकर शक-संशय और दमन शक्ति को दूर करने वाले हैं। इनकी सहनशीलता एवं सहिष्णुता को अपना लेना ही हितकारी होगा। ■

व्याप्य-व्यापक, मनोहर काया-ब्रह्म

'जीव चराचर जन्तु समाना, भीतर बयहिं न जानहिं आना।' यह प्रसंग अरण्य काण्ड दण्डक वन में बैठे रघुनाथजी साथ में लक्ष्मण भइया व मुनिवर आदि भी बैठे हुए हैं। प्रश्न पूछ रहे ब्रह्म का निवास स्थान व आकार आदि। बाबा तुलसीदासजी ने आगे बताया हुआ है **'ईश्वर, जीव, ब्रह्म, अविनाशी यह कहँ सन्त समूह बनवासी।'**

अर्थात् यह सब सन्त लोग ही कहते आए हैं। फिर भी इनकी मूर्ति बनाकर नाना प्रकार की विशेषणात्मक कार्यों में, विशेषात्मक विशेष गुणों के धारण स्वरूप बनाकर पूजते आ रहे हैं। वहीं एक ब्रह्मा का रूप है, वहीं एक विष्णुस्वरूप पालनहारा और अन्त सब कालों का महाकाल शिव का स्वरूप मानकर ही जाना व माना है। आगे बताया **'यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनंता, अस तव रूप बखानऊँ फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानऊँ'** अर्थात् ब्रह्म सबमें रति रहा है जो मानना और जानना चाहिए। स्वामी शंकराचार्यजी महाराजजी ने बताया **'ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या'**। सत्य ही सनातन है उसी की जय जयकार, समस्त जड़ चेतन अविनाशी ब्रह्म में हमें वेद भगवान गा-गाकर बखान कर रहे हैं। **'नहीं समझे सो अनाड़ी है।' 'एको ब्रह्म, द्वितीय नाहीं'**, आगे और भी स्पष्ट **'खं ब्रह्म सर्वोत्यः'** जो आकाश के समान सारे जगत् में व्याप्त व्यापक है। कोई कहाँ ढूँढ रहा है न जानि?

इस नश्वर जड़ जगत् की रचना, पालना और अन्त में संहार कर फिर से ब्रह्माण्ड की स्थापन कर, चला कर निर्लेप रूप में विद्यमान है, यह जगत् मिथ्या नहीं सच है जो दृष्यमान है प्रकाशित हुआ है।

देखिए पाश्चात्य कवि हृदय श्रीमान 'वुडवर्ड महोदय जो अंग्रेजी साहित्य के ख्यातिमान् कवि हुए हैं, उन्होंने अपनी कविता में उस अदृष्य ब्रह्म को, जो नस, नाड़ी से रहित, अदृष्य, अगोचर है बताया है एक नाले के पास बैठकर गाया है जरा ध्यान से उसे जाने समझें Men may come and men may go but? may go for our"। इस ईश्वरीय रचना को ब्रह्म स्वरूप सत्य मानकर ही वंदना कर रहे हैं।

यह उसी की लीला को उपनिषदाकार ने हमें समझाया है सुन्दर प्रभु की सुन्दर महिमा को सरल भाषा में बता रहा है।

'स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्रयं पुरुषं पुराणम्'।।

भावार्थ– उस परमेश्वर के हाथ नहीं सबकी रचना, ग्रहण करता है। पग नहीं परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान, चक्षु का गोलक नहीं किन्तु सबको यथावत् देखता, श्रोत्र नहीं तथापि सबकी बातें सुनता, अन्तःकरण नहीं परन्तु सब जगत् को अवधि सहित जानने वाला कोई नहीं। उसी को सनातन, सबसे श्रेष्ठ, सबसे पूर्ण होने से पुरुष कहते हैं। वह इन्द्रियों और अन्तःकरण के बिना अपने सब काम अपने सामर्थ्य से करता है। उसको बहुत से मनुष्य रूप, रस, गन्ध, भार आदि गुण रहित होने से निर्गुण भी कहते हैं। चारों दिशाओं में उसी का गुणानुवाद हो रहा है। इति।

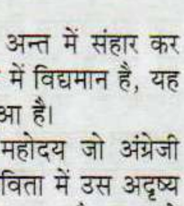

● **पुरुषोत्तमदास गोठवाल**
एस-८/बी, कबीर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर (राज.)
दूरभाष : ०१४१-२२०५१११

आओ! लौट चलें वास्तविकता (मूल) की ओर

मुगल-गार्डन, न था और न है, सही-सही नाम तो मुद्‌गल उद्यान था, है और रहेगा

मुगल-उद्यान का मूल शब्द है मुद्‌गल-उद्यान

मुद्‌गल ==> मुद्+गल ==> मुगल

जब विधर्मी-आक्रान्ता, भारत आए तो यहाँ के लोग मुद्‌गल-उद्यान कहा करते थे लेकिन आक्रान्ताओं से मुद्‌गल बोला नहीं गया, वे बहुत प्रयास करते थे लेकिन शुद्ध न बोल सके और उन्होंने 'मुद्‌गल' को 'मुगल' कहा तो बाद के लोग भी उनके प्रभाव में आकर मुगल-मुगल करने लगे लेकिन सच्चाई यह है की यह मुगल उद्यान नहीं अपितु मुद्‌गल-उद्यान था और है।

शब्दकोश के अनुसार

१) मुद्‌गल का अर्थ 'घास या तृण विशेष' भी होता है इस अनुसार मुद्‌गल-उद्यान का नाम सार्थक है।

२) एक अन्य वाद अनुसार 'मुद्‌गल' हमारे अनेक गोत्रों में से एक है तो मुद्‌गल ऋषि की स्मृति में इस उद्यान का नामकरण किया गया था।

३) तीसरा अर्थ है 'आनन्दमयी दशा में लीन होने वाला जीवन मुक्त' या 'आनन्द धन योगी' अर्थात् इस उद्यान में बैठने वाले व्यक्ति, शीघ्र ही योगी बन जाया करते थे अतः उद्यान का नाम मुद्‌गल सही ठहरता है।

देखिए ऋग्वेद मन्त्र संख्या १०/१०२/५ में मुद्‌गल शब्द स्पष्ट आया है:-

न्यक्रन्दयन्नुपयन्त एनममेहयन्वृषभं मध्य आजेः।
तेन सूभर्वं शतवत्सहस्रं गवां मुद्‌गलः प्रधने जिगाय॥

अब आते हैं सत्य-अर्थ-प्रकाश पर : ऊपर की बातें लिखकर मैं भारत-सरकार के मुगल-उद्यान का नाम बदल कर **'अमृत-उद्यान'** नामकरण का विरोध नहीं कर रहा हूँ। ऊपर लिखी गयी बातें, सुनने व पढ़ने में अच्छी लगती हैं। लेकिन यह उत्तर या एक प्रयास है उन हिन्दूवादियों को... जो विदेशी व असंस्कृत शब्द 'हिन्दू' की सिद्धि के लिए अनेक परिकल्पनायें किया करते हैं। हिन्दू स्व-कल्पित श्लोक बना-बना कर प्रस्तुत करते हैं। कभी कहते हैं 'इन्दु से हिन्दू' बना तो कभी कहते हैं 'सिन्धु से हिन्दू' बना। इतना पर्याप्त न हो तो ऋग्वेद मन्त्र १/१६४/२७ को प्रस्तुत करने में भी संकोच नहीं करते जिसमें हिन्दू शब्द की छाया भी नहीं है-

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय॥

-ऋग्वेद मन्त्र १/१६४/२७

दूसरा निवेदन या विनम्र आग्रह है की जिस प्रकार पिछले अनेक वर्षों से हमने अनेक शहरों के मूल नाम को ग्रहण किया है और आक्रान्ताओं के नामों को हटाया है, अनेक सड़कों/भवनों के नामों को बदला है उसी तरह क्यों न हम हिन्दू शब्द के स्थान पर अपनी पहचान या गर्व ..... आर्य या वैदिक या सनातन के रूप में करें। कब तक हम इसके बचाव में झूठे तर्क या असत्य धरातल पर उपजाए हुए नूतन श्लोक/प्रमाण देते रहेंगे।

आइये! शुद्ध मन से विचार करें और निरर्थक बातों को छोड़कर सत्य का ग्रहण करें और असत्य का त्याग करें। हिन्दू शब्द से हो रही पहचान को छोड़ें और आर्य, वैदिक या सनातनी के रूप में स्वयं को पुनः प्रतिष्ठापित करें।

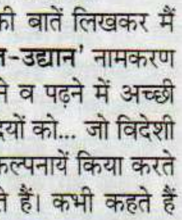

● **विदुषामनुचर विश्वप्रिय वेदानुरागी**
अहमदाबाद (गुजरात)
चलभाष : ९८९८०१८४४०

मांसाहार के पीछे छिपी हिंसा और मांसाहारियों के लक्षण

• स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती
८/५४, तेजेन्द्र नगर भाग-७,
चाँदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात
चलभाष : ८१५५०५५२६०

परमात्मा ने प्रत्येक प्राणी को रहने के लिए एक घर दिया है। वह घर है कि कर्मानुसार परमात्मा के द्वारा दी गई योनी रूपी झोपड़ी अर्थात् वह शरीर जिसमें जीव जीवन पर्यंत उसमें निवास करता है। मान लो कि हमारे वर्तमान घर को कोई तोड़ना चाहता है अथवा तोड़ रहा है तो हम उसका विरोध अवश्य करेंगे, यदि हममें सामर्थ्य है तो। और यदि सामर्थ्य नहीं है तो भले ही हमारे घर को कोई तोड़ डाले, तब भी हम उसका विरोध नहीं कर सकते हैं। क्योंकि हमारे अंदर वह विरोध करने की शक्ति और सामर्थ्य ही नहीं है। इसी प्रकार जब कोई निरपराध, निर्बल, असहाय प्राणी को अपने भोजनार्थ वध करना चाहता है तो वह प्राणी यथाशक्ति विरोध तो करता है, मगर उसका विरोध अर्थहीन होकर रह जाता है। क्योंकि बधिक उससे अधिक बलशाली होता है और उस असहाय प्राणी का योनि रूपी घर क्षण मात्र में नष्ट हो जाता है।

पर यहाँ सोचने योग्य बात यह है कि परमात्मा ने प्रत्येक प्राणी को कर्मानुसार रहने के लिए योनी रूपी घर दिया है, चाहे वह योनी रूपी घर भले ही कितना ही कुरूप, असहाय, शक्तिहीन, कष्टदायक ही क्यों न हो। प्रत्येक प्राणी को अपना शरीर प्यारा लगता है, उसे कोई भी प्राणी छोड़ना नहीं चाहता है। आपत्ति आती हुई देखकर प्रत्येक प्राणी भय के कारण अपने उस शरीर को आतताई से बचाने का भरपूर प्रयास करता है। माँसाहारी प्राणियों को छोड़कर जिनका आहार ही केवल माँस है, जो परमात्मा की व्यवस्था के अंतर्गत आता है। मगर बधिक उन असहाय प्राणियों के घरों को तोड़कर परमात्मा की व्यवस्था में अवरोध उत्पन्न करता है, इसलिए वह अपराधी है। उस बधिक के साथ-साथ वे लोग भी अपराधी हैं जो इस व्यापार में सहयोगी होते हैं, जैसे इन असहाय जीवों को केवल माँसाहार के लिए पालता है और लाभ लेकर बेच देता है। माँस बेचने के लिए खरीदने वाला, प्राणी को काटने वाला, काटे हुए माँस को बेचने वाला, माँस को खरीदने वाला, माँस को पकाने वाला, माँस को परोसने वाला और अंतिम अपराधी वह होता है जो माँस को खाता है। इस प्रकार इस जीव हिंसा में कुल मिलाकर आठ प्रकार के अपराधी सम्मिलित होते हैं। इस व्यवहार में उपरोक्त व्यक्ति अपराधी इसलिए हैं कि परमात्मा ने जीवों के कर्मानुसार जीवों को जो भोग योनी दी है, जीव की उस योनी का भोग अभी पूरा नहीं हुआ और बीच में ही उपरोक्त अपराधियों ने उस जीव के जीवन को नष्ट कर दिया तो परमात्मा की व्यवस्था में अवरोध पैदा हो गया। परमात्मा को उस जीव को पुन: उस योनी में भेजने के लिए वैसे ही अन्य शरीर की व्यवस्था करनी पड़ेगी। इसीलिए उपरोक्त सभी मनुष्य परमात्मा की व्यवस्था के अपराधी हैं, इसलिए उन्हें तो दंड मिलेगा ही मिलेगा।

माँसाहार- माँस मनुष्य का स्वाभाविक आहार नहीं है। आप किसी बालक के सामने शाकाहारी पदार्थ जैसे फल, बिस्कुट या मिठाई रखें और एक प्लेट में, दूसरी तरफ माँस का टुकड़ा रखें। बालक एक घृणा की दृष्टि डालकर माँस से परे हटकर फल या बिस्कुट पर ही झपटेगा। माँस अपने आप में ही एक घृणित पदार्थ है। माँसाहारी उसे रुचिकर बनाने हेतु उसे मसाले डाल कर विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा पकाते हैं। कोरे माँस के टुकड़े को तो शायद ही कोई खाएगा, मनुष्य तो कदापि नहीं खाएगा।

महर्षि दयानंद सरस्वतीजी ने अपने ज्ञानोनिधि ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के अनेक प्रकरणों में माँस-शराब निषेधात्मक बोध देते हुए लिखते हैं जिनका सार है (१) माँस खाना पाप कर्म है। (२) माँस भक्षण वेद-शास्त्र के विरुद्ध है। (३) माँस भक्षण एक हिंसक और निंदित कार्य है। (४) माँस भक्षण से जुआ, शराब, नशा और अन्य दुराचार पनपते हैं। (५) माँसाहार से दूध, दही और गोबर आदि की कमी हो जाती है। (६) माँसाहार विधर्मी मुसलमान, इसाई और वामाचारियों की देन है। (७) जय महाकाल, भैरव, काली या बिस्मिल्लाह बोल के कत्ल करने के किए हुए पाप से मुक्ति नहीं मिलती। परंतु मूक जानवर की बलि देना यही सब से बड़ा पाप कर्म है। (८) ईश्वर या अल्लाह कृपालु, दयालु, न्यायप्रिय और रहमनगीर है, वह उसी पर रहम या दया करेगा जो अपने से छोटे बेसहारा या गरीब पर रहम या दया करेगा। हम यदि मूक जानवरों पर रहम करेंगे, तब ही ईश्वर या अल्लाह हम पर रहम करेगा। (९) जिनको अपनी जान प्रिय है वैसे ही मुर्गी, मछली, जानवर आदि को भी अपनी जान प्रिय होती है। उन्हें कतल करने का हमें कोई अधिकार नहीं है। (१०) यदि कुदरती मरे हुए जानवर का माँस हराम हो तो जिंदे वाले जानवर का माँस भी हराम होना चाहिए क्योंकि आखिरकार वह भी जो मुर्दा ही ठहरा। (११) क्या किसी एक मनुष्य या मानव शिशु को मार कर खाए तो क्या हलाल समझा जाएगा? यदि नहीं तो परमात्मा की संतान इन मूक पशुओं और अंडे आदि को भुनकर खाना ये कैसी हलाली और कौन सा धर्म हुआ?

माँसाहारी का रसोईघर कैसा होता है। जहाँ देखो वहीं पर हड्डी, माँस, रक्त, चमड़ा, पंख, जानवर की खाल, जानवरों के बाल, बड़ा ही भयंकर और घृणित दृश्य होता है। जैसा दूसरा बूचड़खाना, साक्षात् पिशाच का घर हो। जहाँ देखो वहाँ कीड़े, मकोड़े, मक्खियाँ उड़ रही हैं। यह कैसा घृणित वातावरण है।

चलो अब शाकाहारी के रसोईघर में चलकर देखते हैं कि वहाँ का क्या हाल है। आलू, गोभी, गाजर, टमाटर, पालक आदि अनेकानेक प्रकार के कंद, मूल, फल आदि को देखकर मन प्रसन्न हो उठता है। उपरोक्त अधिकतर सभी कच्चा ही खाने को मन कर उठता है। क्या कच्चे माँस को कोई खा सकता है?

माँसाहार, अन्न संकट और संक्रामक जटिल रोग

बढ़ती जनसंख्या के साथ महँगाई व अन्न संकट का अटूट संबंध है। पहले गाँवों में गरीब वर्ग को खाते-पीते बड़े घरों से थोड़ा बहुत दही, छाछ मिल जाया करती थी। दही, छाछ के प्रयोग से अन्न की खपत कम हुआ करती थी। ऐसा प्रयोग करके आज भी देखा जा सकता है। माँस उत्तेजक भोजन है, तो माँसाहार करने वाले खूब भरपेट खाते हैं। तो अन्न की इनके माँसाहार से खपत और अधिक बढ़ जाती है, न कि कम होती है।

थके हारे मनुष्य थकान दूर करने के लिए बाग, बगीचे तथा पार्क में तो घूमने जाते हैं। क्या कभी कोई माँस की मंडी या कसाई घर में घूमने के लिए जाता देखा गया है? अर्थात् कोई नहीं जाता। इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी प्राणी के रूप में उत्पन्न किया है। इस्लाम व इसाइयों की मान्यता यह है कि हजरत आदम तथा होआ को खुदा ने स्वर्ग के बगीचे में बनाया था। उन्हें भूमि से उगे अन्न, वनस्पतियों, फलों को खाने का आदेश दिया गया था, क्योंकि उस समय वहाँ पर बूचड़ खाने थे ही नहीं। सर सैयद भी मानते हैं कि मानव का भोजन शाकाहार ही खुदा की तरफ से

निश्चित किया गया है।

वेद मंत्रों में अन्न, जल, वायु, नदियों, पेड़ों, सूर्य, चंद्र, भूमि, भूलोक, अंतरिक्ष सबके सुखदाई व कल्याणकारी होने की प्रार्थनाएँ हैं। पशु, पक्षियों, जंतुओं, जलचरों, थलचरों, नभचरों, पेड़ों, पर्वतों तथा नदियों के संहार से संक्रामक रोग बढ़ते चले जा रहे हैं। परमात्मा की न्याय व्यवस्था में केवल मनुष्य को ही जीने का अधिकार नहीं है। सभी जीव-जंतुओं को जीने का समान अधिकार है। परमात्मा ने सभी योनियाँ एक-दूसरे की पूरक और सहयोगी बनाई है। बेबस जीवों की हत्या करने से जो उनकी बेबसी की चीत्कार उत्पन्न होती है, उनकी आत्मा से जो हाय निकलती है और उसके माँस को खाने से जो बीमारियाँ फैलती है, उनके उपचार हेतु नए-नए दवाखाने बनवाए जाते हैं, दवाओं के लिए नई-नई फैक्टरियाँ बनाई जा रही हैं, खाद के कारखाने लगाए जा रहे हैं। इन सबसे शोर, धन व संपदा तो बढ़ा दिया, मगर रोग पहले से जटिल होते चले गए।

माँसाहारी एवं शाकाहारी प्राणियों की शारीरिक रचना और आदतों में अंतर

(१) शाकाहारी प्राणियों के मुख में दाढ़े होती है, जिससे वे अन्न को पीस-पीसकर चबा-चबाकर खाते हैं। इनके दाँतों में अंतर नहीं होता है।

(२) माँसाहारी प्राणियों के मुख के अग्र भाग में तीक्ष्ण नुकीले दो दाँत कील के रूप के होते हैं। ताकि वे अन्य प्राणियों को चीर-फाड़कर खा सकें। क्योंकि ऐसे प्राणियों के दाढ़े नहीं होती हैं। इसलिए ये प्राणी माँस रूपी भोजन को सीधे ही निगल जाते हैं। भोजन को पीस-पीसकर नहीं खाते, इनके दाँतों में अंतर होता है।

(३) शाकाहारी प्राणी होंठों से घूँट-घूँट पानी पीते हैं। जबकि माँसाहारी प्राणी जीभ से चाट-चाटकर चप-चप की आवाज करते हुए पानी पीते हैं।

(४) शाकाहारी प्राणी की संतान की आँखें जन्म से ही खुल जाती हैं। जबकि माँसाहारी प्राणी के बच्चों की आँखें जन्म से २, ३, ४, ६, ८, १०, १५ दिनों के बाद खुलती हैं।

(५) शाकाहारी प्राणी के नाखून लंबे और नुकीले नहीं होते। जबकि माँसाहारी प्राणी के नाखून लंबे तथा नुकीले होते हैं ताकि शिकार को आसानी से चीर-फाड़ कर खा सके।

(६) शाकाहारी प्राणी के पाँव की रचना ऐसी होती है कि चलते समय कुछ-कुछ आवाज होती है जबकि माँसाहारी प्राणी के चलने से आवाज नहीं होती है। जिससे चलने से आवाज न हो और आसानी से अपने शिकार को पकड़ सके।

(७) शाकाहारी प्राणियों के बच्चों के बचपन के दाँत गिरकर पुनः नए दाँत निकल आते हैं। जबकि माँसाहारी प्राणियों के ऐसा नहीं होता है।

(८) शाकाहारी प्राणियों की आँतों की लंबाई शरीर की लंबाई से लगभग दस गुणा तक बड़ी होती है। जबकि माँसाहारी प्राणियों की आँतों की लंबाई कम होती है। ताकि आँतों में माँस अधिक समय तक न रहे।

(९) शाकाहारी प्राणियों में हरित द्रव्य पचाने की शक्ति होती है, जबकि माँसाहारी प्राणियों में यह शक्ति नहीं होती है।

(१०) शाकाहारी प्राणियों में लीवर यानी पित्ताशय छोटा होता है, जबकि माँसाहारी प्राणियों में ये बड़ा होता है।

(११) शाकाहारी प्राणियों की आँखें प्रायः बादाम जैसी आकृति की होती हैं, जो प्रायः अँधेरे में कम ही देख पाती है जबकि माँसाहारी प्राणियों की आँखें प्रायः गोल होती हैं, उन्हें रात्रि के अँधेरे में भी स्पष्ट दिखाई देता है।

(१२) शाकाहारी प्राणी प्रायः रात्रि में सोते हैं और दिन में जागते हैं, जबकि माँसाहारी प्राणी रात्रि में जागते हैं और दिन में प्रायः सोते हैं।

(१३) शाकाहारी प्राणी प्रायः क्रूरता, धोखाधड़ी आदि नहीं करते हैं। बलवान यानी शक्तिशाली होते हैं। इनकी कार्य करने की क्षमता भी अधिक होती है। जबकि माँसाहारी प्राणी क्रूर, धोखेबाज एवं चालाक प्रकृति के होते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता कम होती है।

(१४) शाकाहारी प्राणी में भूखा रहने की क्षमता अधिक होती है। ऐसे प्राणी भूखा रहने पर भी किसी को हानि नहीं पहुँचाते हैं। जबकि माँसाहारी प्राणी भूख न लगने पर भी अन्य प्राणियों को मार डालते हैं।

(१५) शाकाहारी प्राणी स्वभावतः साधन होते हुए भी शिकार नहीं करते और ये शिकार करने की कला में निपुण नहीं होते हैं। जबकि माँसाहारी प्राणी बिना किसी हथियार और साधन के शिकार कर सकते हैं। ये शिकार करने की कला में निपुण होते हैं।

(१६) शाकाहारी प्राणियों में श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया धीमी गति से चलती है। जबकि माँसाहारी प्राणियों में श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया तीव्र गति से चलती है।

(१७) शाकाहारी प्राणियों की श्वसन क्रिया धीमी गति से चलने के कारण दीर्घायु यानी लंबी आयु वाले होते हैं।

(१८) शाकाहारी प्राणियों को परिश्रम करने पर शरीर से पसीना निकलता है जबकि माँसाहारी प्राणियों को भागते, दौड़ते, परिश्रम करते हुए भी पसीना नहीं आता है।

(१९) शाकाहारी प्राणियों के स्वभाव में किसी का खून पीने की इच्छा नहीं होती है और वे खून को पचा भी नहीं सकते हैं। जबकि माँसाहारी प्राणियों में खून पीने की तीव्र इच्छा होती है।

(२०) शाकाहारी प्राणियों में माँ की ममता यानी प्रेम वात्सल्य भाव अधिक होता है। भूख लगने पर भी अपने बच्चे को कभी भी नहीं खाती है। जबकि माँसाहारी प्राणी अधिक भूख लगने पर अपने बच्चे को भी खाने में संकोच नहीं करते हैं।

(२१) शाकाहारी प्राणियों का जो पाचन तंत्र है, वह केवल अन्न, फल और वनस्पति आदि को पचाने में ही सक्षम है। माँस आदि को नहीं पचा सकता है। जबकि माँसाहारियों का पाचन तंत्र ऐसा नहीं है, वे केवल माँस को ही पचा सकते हैं।

(२२) जितने भी माँसाहारी प्राणी हैं वे मैथुन के समय पीछे से जुड़ते हैं। जैसा कि कुत्ता, बिल्ली आदि। जबकि शाकाहारी प्राणियों में ऐसा नहीं होता है।

(२३) जितने भी माँसाहारी प्राणी होते हैं वे स्वभाव से डरपोक यानी कायर होते हैं। जबकि शाकाहारी प्राणी जैसे हाथी, घोड़ा आदि में डरने का स्वभाव नहीं होता है। अतः हे मनुष्य तू भी माँसाहार करने से डरपोक बन गया है।

(२४) माँसाहारी प्राणियों की अधिकतर बनावट भयानक एवं कुरूप होती है। जबकि शाकाहारी प्राणी सौम्य, सुंदर, कोमल होते हैं।

नोट : परमात्मा ने सर्वश्रेष्ठ मानव प्राणी को शाकाहारी बनाया है। इसकी शारीरिक रचना से यह सिद्ध होता है कि जन्म से प्राप्त मन के झुकाव को स्वाभाविक, प्राकृतिक, स्वभाव कहते हैं और जन्म के बाद सीखी गई बातों को आदत कहते हैं। मनुष्य स्वभाव से शाकाहारी है। माँसाहार एक आदत है, जो जन्म के बाद परिवार के खान-पान से पड़ती है। शाकाहारी मनुष्य ने माँस खा-खा करके पेट को कब्रस्तान बना दिया है। माँसाहारी प्राणी अधिकतर शाकाहारी प्राणियों का ही माँस खाते हैं। स्वामी दयानंद सरस्वतीजी ने कहा है कि **हे मनुष्यों! जब जानवर तुम्हारे द्वारा खाते-खाते समाप्त हो जाएँगे तो क्या मनुष्यों का माँस खाओगे? और आगे कहा है कि मनुष्य जीवन में रहकर तुमने जिन-जिन जानवरों का माँस खाया है, आने वाले जन्मों में तुमको अपनी माँस उनको खिलाना पड़ेगा जिनका माँस तुमने खाया है। अतः अधोगति यानी मनुष्योत्तर योनियों में जाने से बचो।** ■

आदमी क्या है?

• **गजेन्द्रसिंह आर्य**
पूर्व प्राचार्य, वैदिक प्रवक्ता
जलालपुर, अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ९७८३८९७५११

भूख लगना आदमी की प्रकृति है ,
छीन खाना आदमी की विकृति है।
अपने अतिथि को प्रेम से जो खिलाए,
बांट खाना ही आदमी की संस्कृति है।।

हिला दे सारे सागर को, उसे तूफान कहते हैं,
तोड़ दे तट के बंधन को, उसे उफ़ान कहते हैं।
इससे भी आगे की सोच लो जरा,
तूफानों से जो टकराए, उसे इंसान कहते हैं।।

तलवार की धार भी सह लेता है आदमी,
गोली की बौछार भी सह लेता है आदमी।
किंतु इन सबसे असर करती है ज्यादा,
बोली की मार नहीं सह सकता है आदमी।।

आदमी के हृदय में अनुराग होना चाहिए,
आदमी के हृदय में एक आग होनी चाहिए।
इन सारी बातों को बनाए रखने के लिए,
आदमी के हृदय में, एक त्याग होना चाहिए।।

हैवान से भी कम नहीं है आदमी ,
शैतान से भी कम नहीं है आदमी।
किंतु अगर आदमी में ,आदमियत है,
तो भगवान से भी कम नहीं है आदमी।।

पर्वत को अंगुली पर उठा सकता है आदमी,
मंच पर मधुर राग गा सकता है आदमी।
और तो क्या धरती पर जन्मने के साथ ही,
देवताओं में हलचल मचा सकता है आदमी ।।

आदमी क्या है, डोली के कहारों से पूछो ,
आदमी क्या है, यौवन की बहारों से पूछो।
आदमी क्या है, लकड़ी के सहारों से पूछो,
आदमी क्या है ,चिता के अंगारों से पूछो ।।

छोटा बर्तन गर्मी से तड़कता है जल्दी,
छोटा ताल पानी से छलकता है जल्दी।
छोटी चीज खाने में देर नहीं लगती,
छोटे दिल का आदमी भटकता है जल्दी।।

वृक्ष जब ठूँठ बना, तो कुल्हाड़ा खाया,
आदमी जब अकड़ा, तो सब ने ठुकराया।
इस तिरस्कार और उपेक्षा का ये कारण समझें,
कि उन्हें परिस्थितियों से समझौता करना नहीं आया।।

अधिक पहनने से कपड़ा फट जाता है,
अधिक रगड़ने से लोहा भी कट जाता है।
आदमी में बस खासियत यही है ,
अधिक परिचय से स्नेह घट जाता है।।

जब तक नहीं ढूँढेगा,अंदर जा के आदमी ,
क्या करेगा मन्दिर में जा के आदमी।
पावेगा भला वो कैसे अपनी पूंजी को,
चाहे तलाशे भला समुंदर में जा के आदमी।।

अहिंसा विचारों में, मन में मधुरता हो,
सरलता जीवन के हर आचरण में हो ।
आधार आदमी का परमार्थ सिद्ध करना,
मैत्री भावना की ज्योति सदन में हो।।

कला की साधना, पुजा देती है पाषाण को,
प्रेम की साधना बना लेती है अनजान को।
आदमी की कौन सी साधना काम नहीं देती,
भक्ति की साधना, मना लेती है भगवान को।।

भूल को भी भूल जाए, वही है आदमी,
अवसर के अनुकूल हो जाए वही है आदमी।
आपदाओं में भी जो अपने को न भूले,
शूल में भी फूल बन जाए, वही है आदमी।।

विज्ञान की चकाचौंध से ना घबड़ाता है आदमी,
मजबूरियों से हर कदम पर बंधा है आदमी।
फिर भी आदमी में खासियत है यही,
हर बार टूट-टूटकर सधा है आदमी।।

नेता के संग, खुशी से उछलता है आदमी,
जनता के संग द्रोह से उबलता है आदमी।
देश का भला कैसे होगा जहॉं
गिरगिट की तरह रंग बदलता है आदमी।।

तेज धूप से भी ना घबड़ाता है आदमी,
कीच में भी कमलवत् खिल जाता है आदमी।
संकटों के क्षण में साधना जो करे,
मुसीबत में जो मुस्कुराता है आदमी।।

आदमी को आदमी की परवाह नहीं ,
आदमी को आज भगवान की परवाह नहीं।
क्या कहें आज के जमाने की खूबी है,
आदमी को आज इंसान की परवाह नहीं।।

पतझड़ का पीला पान है यह आदमी ,
सतत श्वासों से गतिमान है यह आदमी।
बाल ,यौवन ,बुढ़ापा तो विश्राम है,
काल का भी मेहमान है यह आदमी ।।

आदमी जब चांद पर जाने लगा ,
आदमी जब शान पर आने लगा।
क्या भरोसा है कब गिरेगा आदमी ,
आदमी जब आदमी खाने लगा।।

काम में जान तब आती है ,जब पसीना शुरू होता है,
चमक तब आती है जब रफ़ पर नगीना शुरू होता है।
फिलोस्फी की बहस बाजी में खुदा नहीं मिलता दोस्तो,
तर्क वितर्क की आखिरी कड़ी पर जीना शुरु होता है।।

चोट खाकर ही इंसान कोई काम में लगते हैं,
सुप्त चेतना वाले को हर कोई ठगते हैं।
जो अंश बेकाम पड़े रहते वे सक्रिय हो उठते हैं,
सच तो यह है कि चुनौती के क्षण में ही हम जगते हैं।। ■

आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी, जरैल का वार्षिकोत्सव एवं प्रवेश सूचना तथा बिहार राज्य स्तरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जनसहयोग से संचालित आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी, जरैल, जिला : मधुबनी, बिहार का अठाईसवां वार्षिकोत्सव चैत्र मास, कृष्णपक्ष, त्रयोदशी, रविवार से चैत्र, शुक्लपक्ष, प्रतिपदा, बुधवार विक्रम संवत् २०८० तदनुसार दिनांक १९ से २२ मार्च २०२३ तक आयोजित किया जा रहा है। उपर्युक्त अवसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध मूर्धन्य तपस्वी वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र जी वेदार्थी बिजनौर एवं आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित श्री सुमन जी आर्य दिल्ली से पधार रहे हैं। प्रतिदिन यज्ञ, भजन एवं वेद प्रवचन का सुन्दर कार्यक्रम होगा।

उत्सव के अन्तिम दिन चैत्र, शुक्ल, प्रतिपदा २०८० तदनुसार दिनांक २२ मार्च २०२३ बुधवार को आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जरैल से सम्पूर्ण बिहार के आर्यों को जागृत करने हेतु एक **'सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा'** प्रारम्भ की जाएगी जिसका समापन बिहार राज्य के सभी जिलों से होते हुए बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, मुनेश्वरानन्द भवन पटना में होगा। इस यात्रा का प्रथम पड़ाव मधुबनी जिले के रहिका प्रखण्ड में अवस्थित आर्य समाज मधुबनी में होगा। फिर राजनगर, खजौली, जयनगर, बासोपट्टी, हरलाखी, मधवापुर प्रखण्ड होते हुए हम सीतामढ़ी जिले में प्रवेश करेंगे। फिर पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण जिला से होते हुए अन्य जिले में प्रवेश करेंगे।

आप सभी आर्य महानुभावों से करबद्ध प्रार्थना है कि इस यात्रा को सफल बनाने हेतु अपने-अपने जिले के प्रत्येक प्रखण्डों में एक सभा का आयोजन उक्त समय पर करने एवं कम से कम अपने-अपने प्रखण्डों या जिले में हमारी इस यात्रा में अपने सगे-सम्बन्धियों एवं मित्रों के साथ शामिल होने की अवश्य कृपा करेंगे। किस दिन हम कहां रुकेंगे इसकी सूचना उससे पूर्व ही आपको दे दी जाएगी। साथ ही आर्य जगत् के सभी विद्वानों एवं भजनोपदेशकों से भी करबद्ध प्रार्थना है कि आप भी हमें अपने-अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकालकर जहाँ-जहाँ आप उचित समझें हमारे इस वैदिक धर्म प्रचार यात्रा में सम्मिलित होकर हमारा उत्साहवर्धन करें।

समस्त धर्मनिष्ठ महानुभावों से सादर निवेदन है कि उक्त अवसर पर गुरुकुल पधारकर विद्वानों से लाभ लेकर अपने मानव जीवन को सफल बनाएं तथा उक्त वैदिक धर्म प्रचार यात्रा को सफल बनाने में हमारा मार्गदर्शन करें। आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि अपने गुरुकुल को ८०जी एवं १२ए के तहत कर मुक्ति की सुविधा भी प्राप्त हो गई है । दयानन्द जनकल्याण आश्रम के नाम स्टेट बैंक अरैर शाखा में खाता है जिसकी संख्या ३४९५५९५२५५६२ तथा आईएफएससी कोड SBIN०००६१६३ है। गुरुकुल दयानन्द वाणी के नाम पंजाब नेशनल बैंक बेनीपट्टी में भी खाता है जिसकी संख्या ०५८६००२१०००००२९४१ एवं IFSC CODE PUNB००५८६०० है। उक्त सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने एवं गुरुकुल संचालन रूपी पवित्र यज्ञ का पुण्य प्राप्त करने हेतु आप हमें उक्त खाते में सहयोग प्रदान कर सकते हैं। यदि कर मुक्ति का पावती प्राप्त करना चाहें तो दयानन्द जनकल्याण आश्रम के खाते में सहयोग भेजकर हमें अवश्य सूचित करने की कृपा करें।

निवेदक : योग मुनि (प्रधान), सुशील (संस्थापक)
आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जरैल, जिला मधुबनी (बिहार)
सम्पर्क सूत्र : ८८०९८५२१८७, ६२०५९६७९५७

गुरुकुल पहुंचने का मार्ग : मधुबनी रेलवे स्टेशन से बेनीपट्टी आने वाली बस, टेम्पो या अन्य सवारी में बैठकर हनुमान चौक उतरकर गुरुकुल आ जाएं।

स्वाध्याय साधना शिविर २०२३

दिनांक : ४ अप्रैल से ९ अप्रैल २०२३ तक

स्थान : दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुंदरपुर

पूज्य स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक की अध्यक्षता में स्वाध्याय साधना शिविर का आयोजन किया जाएगा जिसमें मौन साधना, विवेक-वैराग्य अभ्यास सहित दर्शन-उपनिषद्, मनुस्मृति ,आयुर्वेद आदि ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों का अध्यापन कराया जाएगा। पूज्य स्वामी विवेकानंद जी के द्वारा योग दर्शन, न्याय दर्शन एवं शंका समाधान की विशेष कक्षा ली जायेगी। श्रद्धेय स्वामी शान्तानन्द जी के द्वारा ध्यान साधना का अभ्यास कराया जाएगा तथा सांख्य दर्शन के महत्त्वपूर्ण सूत्रों का अध्यापन कराया जाएगा। आचार्य दिनेश जी के द्वारा हवन, वेद प्रवचन के साथ-साथ आयुर्वेद का परिचयात्मक ज्ञान कराया जाएगा तथा आचार्य योगेश जी के द्वारा आत्मनिरीक्षण सहित मनुस्मृति में पुरुषार्थ चतुष्टय विषय पर व्याख्यान दिया जाएगा।

शिविर शुल्क : २०००/-

नोट : * महिलाओं एवं पुरुषों के लिए निवास की पृथक्-पृथक् व्यवस्था रहेगी। * शिविर में भाग लेने के लिए पहले पंजीकरण कराने हेतु नाम पता सहित शुल्क भेजना होगा। * शिविर काल में मोबाइल फोन का प्रयोग निषिद्ध रहेगा। मोबाइल फोन कार्यालय में जमा कराना होगा। * ४ अप्रैल के सायंकाल ४ बजे तक शिविरार्थी गण शिविर स्थल पर पहुंच जायें। * ९ अप्रैल को दोपहर में १ बजे शिविर की समाप्ति होगी।

सम्पर्क सूत्र - ७०२७०२६१७५ (ब्र. प्रवीन्द्र आर्य)

***मार्ग संकेत** - रेलगाड़ी या बस से आने वाले सज्जन रोहतक के जींद बाईपास महाराणा प्रताप चौक आयें वहां से जलेबी रोड होते हुए सुन्दरपुर गांव की ओर आने पर नहर के किनारे दर्शन योग महाविद्यालय सुंदरपुर कुटिया स्थित है।*

सरल क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : १६ से १९ मार्च २०२३ तक

स्थान : योग भवन, ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

आयोजक : वैदिक संस्कृति दर्शन पीठ, ज्योतिसर, कुरुक्षेत्र
(दर्शन योग दर्शन धर्मार्थ ट्रस्ट, रोजड़ द्वारा संवर्धित)

शिविर शुल्क : स्वैच्छिक एवं अनिवार्य
सम्पर्क : ९४६७२३८७२३

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ (गुजरात) की आगामी गतिविधियाँ

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
दिनांक : ९ से १६ अप्रैल २०२३ तक

आर्य वीर शिविर (युवकों हेतु)
दिनांक : ७ से १४ मई २०२३ तक

आर्य वीरांगना शिविर (युवतियों हेतु)
दिनांक : २१ से २८ मई २०२३ तक

परोपकारिणी सभा, अजमेर की आगामी गतिविधियाँ

साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर
दिनांक : ११ से १८ जून २०२३ तक

दम्पत्ति शिविर
दिनांक : २४ से २७ अगस्त २०२३ तक

राष्ट्र रक्षा महायज्ञ एवं वैदिक श्री रामकथा सम्पन्न

दिनांक २२ जनवरी से आर्य समाज नागदा जंक्शन, जिला उज्जैन, मध्यप्रदेश के तत्वावधान में आर्य गार्डन में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के उपदेशक एवं **'घर-घर यज्ञ अभियान'** के प्रणेता नैष्ठिक ब्रह्मचारी विश्वामित्रार्य के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ **राष्ट्र रक्षा महायज्ञ** की दिनांक २९ जनवरी २०२३ को पूर्णाहुति की गई।

इसी के साथ आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से **वैदिक श्रीराम कथा** भी सम्पन्न हुई। बड़ी संख्या में नगरवासियों, समीपस्थ ग्रामवासियों तथा शहर के गणमान्य राजनीतिज्ञ समाजसेवीयों व आर्य समाज खाचरौद, आर्य समाज धामनोद, आर्य समाज खरसौद कला, आर्य समाज विक्रमनगर (मौलाना), आर्य समाज हरनावदा के सदस्यों एवं उज्जैन जिला प्रभारी डॉ ललित जी नागर, वैदिक संसार मासिक पत्रिका के प्रकाशक सुखदेव शर्मा की उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा में अभिवृद्धि की। आयोजन का विशेष आकर्षण यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् चि.विक्रमसिंह आंजना संग सौभाग्य कांक्षिणी प्रिया एवं चि. श्रवण प्रजापत संग सौभाग्य कांक्षिणी किरण का शुभविवाह संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से सादगीपूर्ण सम्पन्न होना रहा है। **(रंगीन चित्र देखें पृष्ठ संख्या ३ पर)** बाहर से पधारे अतिथियों की उत्तम विश्राम एवं भोजन व्यवस्था आर्य समाज नागदा के द्वारा की गई। आयोजन के प्रमुख सूत्रधार यशवन्त आर्य, कमल आर्य, विजय आर्य, भंवरलाल पांचाल, महेश सोनी, रमेशचन्द्र चन्देल अधिवक्ता,महेश पांचाल, गायत्री पांचाल, दिलीप पांचाल एवं आर्य समाज नागदा के सदस्य रहे।

सविनय निवेदन

आर्य समाज कुशहवा बाजार (कुशाहा बाग) निकट ग्राम घोरहट, पोस्ट छितही, जिला सन्त कबीर नगर (उ.प्र.) २७२१७२ में एकदम नया आर्यसमाज है। वीर एकलव्य आदर्श विद्या मन्दिर के प्रांगण में मासिक यज्ञ, सत्संग सम्पन्न होता है। विद्यालय की छात्राएँ यज्ञ सम्पन्न करवाती हैं। उन्हें मैंने प्रशिक्षित किया था। कोई आय का साधन नहीं है। बेसिक चीजों की जरूरत रहती है। जैसे घी, हवन सामग्री, छात्राओं को पचास रुपये प्रति छात्रा प्रोत्साहन राशि भी देता हूँ। गाँव में स्थित यह नया आर्यसमाज है। सामाजिक कार्य भी कर देता है। जैसे सर्दियों में दिव्य पेय पिलाया, गर्मियों में शीतल शरबत पिलाया। इच्छुक महानुभाव सुविधानुसार निम्न खाते में सहायता राशि भेज सकते हैं–

आर्य समाज कुशहवा बाजार
खाता संख्या : २२८२०००१००५६३०५४
आई.एफ.ए.सी. कोड : PUNB०२२८२००

आपका सहयोग महर्षि दयानन्द के मिशन को गाँव एवं क्षेत्र में सम्बल प्रदान करेगा।

–संस्थापक : ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री आर्य समाज, रावतभाटा (राजस्थान)

२०० युवकों का यज्ञोपवीत संस्कार कराने बांग्लादेश जायेंगे आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

२० फरवरी से ५ मार्च २०२३ तक राजधानी ढाका सहित ८ नगरों में होंगे प्रवचन उपदेश

आर्य समाज संस्थाओं के निमन्त्रण पर नर्मदांचल होशंगाबाद मध्यप्रदेश के वैदिक प्रवक्ता अपनी १३वीं विदेश यात्रा पर २० फरवरी २०२३ को दोपहर १२.१५ बजे इण्डिगो एयर लाइन्स की फ्लाईट से इंटरनेशनल एयरपोर्ट दिल्ली से ढाका रवाना होंगे। ५ मार्च को वापिस आयेंगे। लगभग १५ दिनों तक आपका बांग्लादेश में प्रवास रहेगा। चट्टग्राम, श्रीमंगल, मौलवी बाजार, कुलाउड़ा, दिनाजपुर, बकुलतला व ठाकुर गांव व राजधानी ढाका सहित अनेक नगरों के आर्य परिवारों व संस्थाओं में आनन्द पुरुषार्थी के उपदेश यज्ञ, अनुष्ठान,प्रवचन होंगे। ध्यातव्य है कि आर्य समाज के वैदिक प्रवक्ता आनन्द पुरुषार्थी अभी तक दुबई, मारीशस, हॉलैण्ड, सूरीनाम, फिजी, इंग्लैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, बर्मा, थाईलैण्ड व संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों में जाकर वैदिक धर्म व आर्यसमाज का प्रचार कर चुके हैं।

रामावतार सिंह राजपूत
मन्त्री, आर्यसमाज नर्मदापुरम, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)

ढलने लगे

भाव शब्दों में अब तो ढलने लगे
प्रभु भक्ति से ये भी पिघलने लगे
सुविचार हृदय में पलने लगे, नवसृजन को मचलने लगे
आश्रय वेदों का ले, रहस्य भेदन यह करने लगे
गान अग्नि में तप मोती बन निखरने लगे
आनन्द सागर की गहराई में, ऋषि बन समाधि लगाने लगे
लहरों में बन ज्वार भाटा, सागर को दहलाने लगे
हीरा, पन्ना, शंख, मोती बन, स्पर्श साहिल का करने लगे
हृदय में माँ की पीड़ा सुन, नयनों में अश्रु बन छलकने लगे
शिशु की सुन वेदना, माँ के स्तनों में दूध बन उतरने लगे
सूर्य रश्मियों से ले उष्मा, भू–मण्डल भी तपने लगे
चन्दा की चान्दनी में, औषधि रस बन टपकने लगे
कवि हृदय में जला ज्योति, अभिव्यक्ति को तरसने लगे
अन्तस का ले आश्रय, रवि तक पहुँचने लगे
हृदय की धड़कनों में हलचल पैदा ये करने लगे
मनसा, वाचा, कर्मणा जीवन का मूल नव सन्देश ये देने लगे
ईश्वर देता है मुझको यह वर,
आदर्श भावों के उपवन में केवल विचर
शब्द भी अपना जाल बुन जाएँगे
विश्व की हर उलझन को सुलझाएँगे।

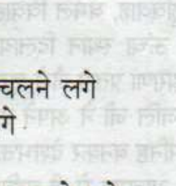

● सुश्री आदर्श आर्या
आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९५५७८७३६३३

महिला आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वेदों का मार्ग ही कल्याण और समृद्धि का मार्ग है : आचार्य अवनीश मैत्रिः

ऋषि दयानन्द की ऋणी है समस्त मानव जाति : अंजलि आर्या

वेद ईश्वरीय वाणी है जो प्राणिमात्र के कल्याण को प्रस्फुटित करती है। वेद मनुष्य का प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन करता है और भौतिक सुख के साथ आत्मा के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। वेदों का मार्ग ही कल्याण और समृद्धि का मार्ग है, उपर्युक्त विचार आर्यश्रेष्ठ दानवीर न्यायमूर्ति श्री सज्जनसिंह जी कोठारी पूर्व लोकायुक्त राजस्थान की अध्यक्षता में आयोजित महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर के २९वें वार्षिकोत्सव, रजत पथ मानसरोवर पार्क पर चार दिवसीय संगीतमय वेदकथा के समापन अवसर पर यज्ञब्रह्मा आचार्य अवनीश मैत्रिः ने व्यक्त किए।

इस कार्यक्रम में संगीतमय कथा हेतु करनाल हरियाणा से पधारी सुश्री अंजलि आर्या ने **'वेदों की ओर लौटो'** ऋषि दयानन्द का उद्घोष देते हुए वेद के सरल सूत्रों से मनुष्य जीवन को सुखमय और कल्याण के मार्ग पर अग्रसर करने हेतु अनेक वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। कथा के उद्घाटन सत्र में वेदोपदेशिका अंजलि आर्या का भव्य स्वागत पुष्पवर्षा एवं मंगलगान से किया गया। अपनी ओजस्वी वाणी में अंजलि जी ने व्यावहारिक उदाहरणों द्वारा नारी शक्ति की महत्ता को बताते हुए कहा कि समस्त नारी आज ऋषि दयानन्द की ऋणी है जिन्होंने महिलाओं के उद्धार हेतु अनगिनत कार्य किए। नारी का आज जो स्थान समाज में है, जिस प्रकार वेद प्रवचन और वेद ऋचा का गान करती नारी हर क्षेत्र में अग्रणी है वह ऋषि की देन है। आर्य समाज की प्रचण्ड ज्वाला ने बालविवाह, बहुविवाह, बेमेल विवाह आदि को समाज से दूर कर शिक्षित होती नारी को पुरुष से ऊंचा स्थान दिलाया है।। नारी ही देशभक्त छत्रपति शिवाजी महाराज और महाराणा प्रताप जैसे शूरवीरों का निर्माण करती आई है और आगे भी करती रहेगी। अंजलि जी ने अपने प्रवचन से महिलाओं की वर्तमान परिदृश्य में कर्तव्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ बनकर देशभक्त सन्तान निर्माण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि वेद शिक्षा के आचरण से ही ऋषि का उद्घोष वेदों की ओर लौटो सार्थक होगा।

इस अवसर पर आर्य समाज के विशिष्ट एवं वरिष्ठ सदस्य श्री पूरनचन्द सिंघल, श्रीमती मृदुला वाजपेई एवं श्रीमती निर्मल वार्ष्णेय को 'सम्मान पत्र' देकर सम्मानित किया गया।। संगीतमय वेदकथा चार दिवसीय कार्यक्रम ८ से ११ दिसम्बर तक दो सत्रों में आयोजित थी जिसमें आर्य समाज के प्रधान सुनील अरोड़ा, मन्त्री त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश गुप्ता आदि अन्य समस्त पदाधिकारियों के साथ उपस्थित रहे। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अवनीश मैत्रिः ने प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ को पूर्ण विधि-विधान से सम्पन्न करवाया। प्रतिदिन यजमान बनने वालों को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया। आर्य समाज यज्ञ के लिए कोई शुल्क नहीं लेता और यज्ञ, योग एवं वेद का प्रचार करने में अग्रणी संस्था है। प्रधान सरोज कालरा, संरक्षक अर्जुनदेव कालरा, वैदिक वीरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अनामिका शर्मा, बलदेव राज जी आर्य आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन, संचालन श्रीमती सुधा मित्तल मन्त्री आर्य समाज मानसरोवर ने किया। इस कार्यक्रम में अलवर से उपमन्त्री ईश्वरीदेवी, भीमसेन सचदेवा एवं बजाजा बाजार अलवर की महिला प्रधान सम्मिलित हुई। अजमेर से पधारे योगाचार्य हेमन्त आर्य ने सुन्दर काव्यपाठ प्रस्तुत किया।

आर्य समाज मानसरोवर को भूमि क्रय के लिए समर्पित भाव से दान देने वाले दानदाताओं का भी सम्मान किया गया। मासिक दान के लिए अनेक धार्मिक व्यक्तियों ने अपने नाम लिखाए। आर्य समाज की संस्थाएं दान से संचालित है और बिना धन के कोई कार्य तथा प्रचार-प्रसार सम्भव नहीं है। भूमि क्रय हेतु दान की भावुक अपील उपमन्त्री श्री सतीश मित्तल ने की। उन्होंने स्वयं दो लाख रुपए दान भी दिया है। मीडिया में प्रसार हेतु एएसएम भजन यू ट्यूब चैनल जोधपुर से श्री कैलाश आर्य एवं यज्ञ, योग, वेद प्रचार सामग्री लेकर मथुरा से श्री राजेन्द्रजी ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

स्वाध्याय साधना शिविर

दिनांक : ४ से ९ अप्रैल २०२३ तक

शिविर शुल्क : २०००/–

एवं षड्मासीय योग दर्शन अध्ययन शिविर

दिनांक : १ मार्च से ३१ अगस्त २०२३ तक (छः मास)

स्थान : दर्शन योग महाविद्यालय प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक (हरियाणा)

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क : ७०२७०२६१७५

लक्ष्मी इण्टीरियर कार्यालय का देवयज्ञ के द्वारा शुभारम्भ

परमपिता परमेश्वर की महती तथा असीम अनुकम्पा से वैदिक संसार मासिक पत्रिका में प्रकाशित क्रांतिकारी,ओजस्वी लेखों के लेखक आर्य श्री मोहनलाल जी दशौरा, खजांची महोदय निवासी नारायणगढ़, जिला मन्दसौर के छोटे भाई श्री बालमुकुन्द जी के सुपुत्र श्री अनिल जी दशौरा अधिवक्ता की ज्येष्ठ सुपुत्री प्रतिभा कुमारी के डिजाइनर शिक्षा पूर्ण करने पर उसके व्यवसाय कार्यालय **'लक्ष्मी इण्टीरियर'** मेघदूत नगर, मन्दसौर (मध्यप्रदेश) का विधिवत् शुभारम्भ संसार के श्रेष्ठतम् कर्म देवयज्ञ वैदिक संसार मासिक पत्रिका के प्रकाशक सुखदेव शर्मा के ब्रह्मत्व में किया जाकर सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर पूर्व रात्रि को भजन संध्या का आयोजन किया गया एवं प्रातःकाल यज्ञ के पश्चात् सनातन वैदिक धर्म संस्कृति में निहित पंच महायज्ञ के दिशा-निर्देशानुसार पितृ यज्ञ और अतिथि यज्ञ भी सम्पन्न किए गए।

पितृ यज्ञ में परिवार के समस्त बुजुर्गों का माल्यार्पण व चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया। यहां यह उल्लेखनीय है कि श्री मोहनलाल जी दशौरा सात भाई एवं चार बहनों का लगभग ६० सदस्यों का परिवार है। सभी पृथक्-पृथक् निवास तथा अपना कार्य व्यवसाय करते हुए भी आत्मिक रूप से एकजुट है। पूरा परिवार प्रतिष्ठित, उच्च शिक्षित, संस्कारवान तथा अधिकांश ख्यातिप्राप्त विधिवेत्ता, (अधिवक्ता) है। इस अवसर पर समस्त पारिवारिक सदस्य बहन-बेटियां तथा स्नेहीजन उपस्थित थे।

पितृयज्ञ के पश्चात् अतिथि यज्ञ में श्री मदनलाल जी राठौर डायरेक्टर एफसीआई तथा यज्ञ ब्रह्मा वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का अभिनन्दन किया गया। सहभोज के साथ मधुर स्मृतियों को संजोए हुए आयोजन सानन्द, निर्विघ्न, हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य जगत् की विविध गतिविधियाँ

हरियाणा के राज्यपाल महामहिम बंगारू दत्तात्रेय एवं सिक्किम के राज्यपाल महामहिम बाबू गंगाप्रसाद जी आर्य तथा सुप्रसिद्ध क्रिकेटर तथा दिल्ली के सांसद गौतम गम्भीर से आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने भेंट कर उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये।

लक्ष्मी इंटीरियर, मन्दसौर का शुभारम्भ देवयज्ञ, पितृयज्ञ तथा अतिथियज्ञ के द्वारा किया गया। (विस्तृत समाचार पृष्ठ ४२ पर)

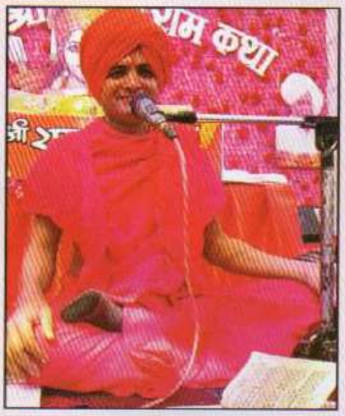

नागदा जंक्शन, जिला उज्जैन (म.प्र.) में आयोजित राष्ट्र महायज्ञ एवं श्री राम वैदिक कथा के अवसर पर २ जोड़ों का विवाह संस्कार आचार्य विश्वामित्रार्य जी के द्वारा सम्पन्न करवाया गया। (विस्तृत समाचार सम्पादकीय पृष्ठ ७ एवं पृष्ठ ४१ पर देखें।)

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

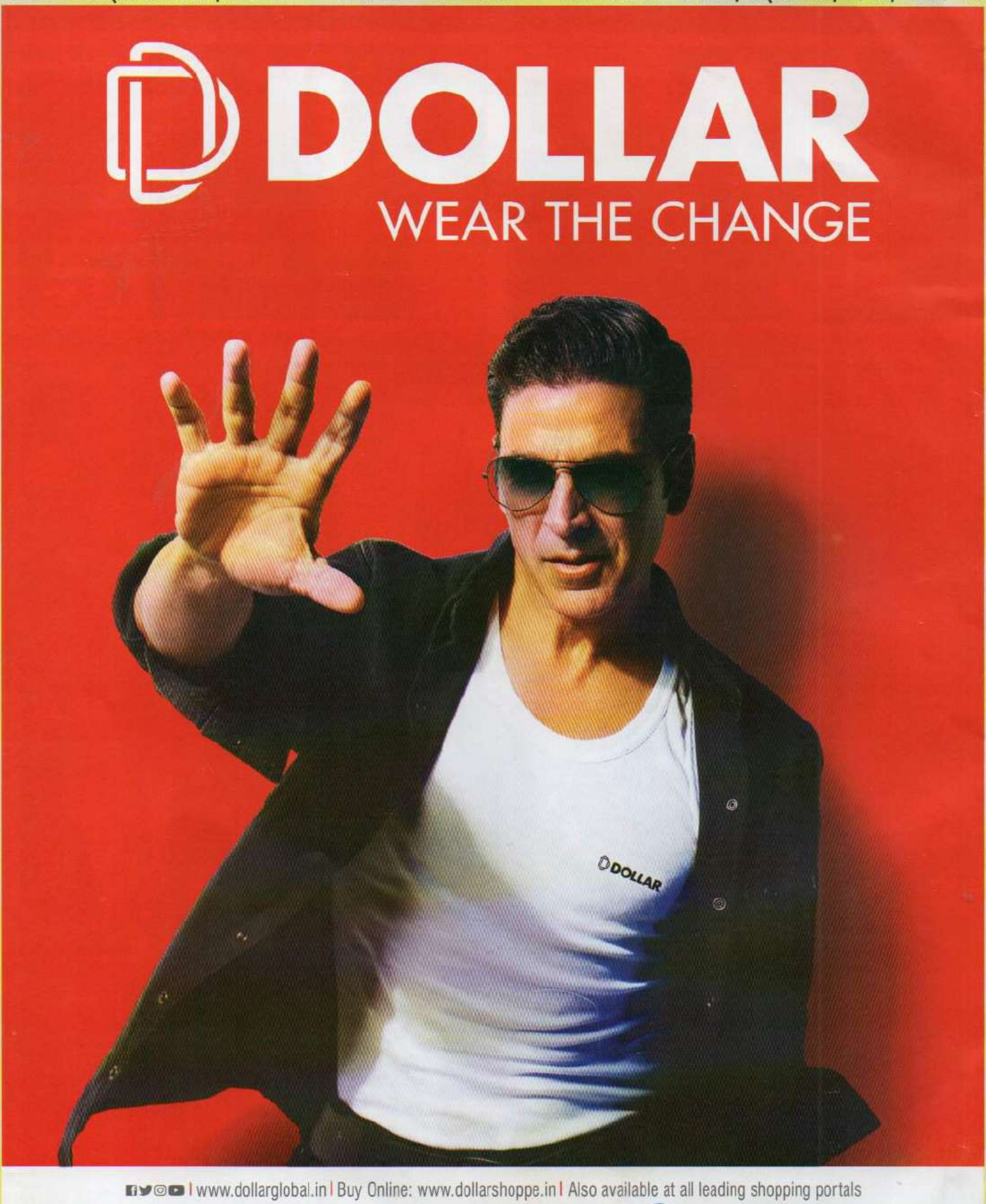

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित